सं० २

ओ३म्

आर्य यन्त्री

तथा

दर्शयित्री

१९०४ ई०

पञ्जाबदेशान्तर्गत

कर्णाल

आर्य्यसमाजेन प्रकाशिता

विनिर्मिताज्यौतिषतन्त्रतत्वं, विभाग्यपञ्चाङ्गसुरीत्यभावात् । पयोधि
खाङ्कैक (१९०४) शरद्दिनादि प्रबोधिकायन्त्रिकेयम् ॥
हृद्याऽनवद्या बहुसारगर्भा, विलोकनीया च
समैरवश्यम् । लोकोपकृत्यै प्रकटीकृताया
अथार्य्यवर्गैः प्रगुणी कृता च ॥

आई, टी, एफ, ऐंड
"मुम्बई"
प्रिंटिङ्ग प्रेस इलाहाबाद नामाख्य यंत्रालये मुद्रिता

[मूल्य ।-) बिना डाकव्यय

८००प्रति]

क

ओ३म्

आर्य्य यन्त्री उर्दू में छः वर्ष से प्रकाशित होती है। गत वर्ष से कतिपय महाशयों के अनुरोध से हमने नागरी एडीशन भी निकाला है जिस्का यह दूसरा अङ्क है॥ "मनुस्मृति पर विचार" तथा "बापूदेव शास्त्री का जीवन चरित्र" यह दोनों लेख पढ़ने योग्य हैं। उर्दू यन्त्री में इस वर्ष "महाभारत पर विचार" यह लेख अधिक है शेष सब दोनों यन्त्रियों में समान है॥

कृष्ण स्वरूप आर्य्य सभासद् व
सम्पादक आर्य्य यन्त्री

चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण

इस वर्ष में कोई चन्द्रग्रहण नहीं होगा किन्तु दो सूर्य्य ग्रहण होंगे, जिनमें से भारत वर्ष में केवल एक दिखाई देगा। यह ग्रहण १७ मार्च १९०४ ई० बृहस्पतिवार को मध्याह्न से पूर्व होगा और समस्त भारत वर्ष में सूर्य्य का एक भाग ग्रहण में आता हुवा दृष्टि आयगा॥

"मद्रास टाईम" अनुसार १७ मार्च को प्रातःकाल ८ बजे २·५२ मिनट पर स्पर्श, १०·३२ पर मध्य और १२।५.२२ पर मोक्ष होगा॥

इस प्रकार कलकत्ते में ९८·२० पर और कर्णाल में ९।२·३ पर स्पर्श और मध्य कलकत्ते में ९।६·५६ पर कर्णाल में १०।४१ पर और मोक्ष कलकत्ते में ११।१·५१ पर और कर्णाल में १२।५.३६ पर होगा॥

प्रशंसापत्र ॥

बाबू मेहरचन्द जी बैरिस्टर गुरदासपुर—मैं तस्दीक़ करता हूं कि नन्दलाल निज्झड़ का मुरब्बा बनफ़शा अत्युत्तम है, अजीर्णता और दिमाग़ी रोगों के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ यह अति सावधानी से तैयार किया गया है ॥

बा० रामलाल जी बी० ए० वकील फ़ीरोजपुर—स्वादिष्ट, पाचन, और अन्य रोगों के लिये भी गुणकारी है, बहुत नफ़ीस है ॥

ला० आत्माराम जी भूतपूर्व मंत्री आ० प्र० नि० सभा पंजाब-नर्म जुल्लाब के लिये यह दिलपसंद औषध है ॥

बा० हरभजराय सहगल पेशावरी सेक्रेटरी लोकलफण्ड बन्नूं—दोनों लाभ तो इस में अवश्य हैं अजीर्णता दूर करता और थकान की दशा में दिमाग़ को बल देता है ॥

ला० भगवानदास जी वकील मुज़फ़्फ़रनगर—मुरब्बा बनफ़शा चित्त को आनन्द देता और कब्ज़ी दूर करता है ॥

बा० थिशाखरामजी सबइन्सपेक्टर रेलवे बाबर कच्छ (बिलोचिस्तान) आप का बनाया हुआ मुरब्बा बनफ़शा अव्वल दर्जे का आनन्द देने वाला व दिमाग़ को पुष्ट करने वाला है ॥

ला० हरद्वारीलाल जी नारनौल (हांसी) वास्तव में आपका मुरब्बा लाभदायक है ॥

बा० चम्बाराम जी पोस्ट मास्टर जम्मूं—इस में उन से भी अधिक गुण हैं जो आप ने वर्णन किये ॥

हकीम काकाराम जी अफ़सर हिंदी दवाईख़ाना नाभा रियासत-इस कार्य्यालय सम्बन्धी हकीमों को दिखाया सब ने पसंद किया ॥

श्रीमान् राय श्याम बहादुर वकील चपरा—आप के मुरब्बा बनफ़शा से मुझे बड़ा लाभ हुआ ॥

पं० रूपलाल जी बी० ए० लाहौर—निहायत लाभदायक साबित हुआ, कब्ज़ी दूर करने वाला व सिर दर्द हटाने वाला है दिल को ताक़त देता है ॥

"कपास व तिजारत" लाहौर—दिल व दिमाग़ के लिये लाभदायक है ॥

"आर्य्य दर्पण" शाहजहांपुर—नज़र व दिमाग़ की कमज़ोरी और कब्ज़ी को दूर करने में बड़ा मुफ़ीद है ॥

नन्दलाल निज्झड़ चम्बा—पंजाब

॥ ओ३म् ॥

मनुस्मृति पर विचार*

[महाशय नेहाल सिंह जी लिखित]

मनुर्वै यत्किञ्चिद वदत्तद् भेषजस्य भेषजम ॥ छान्दोग्य ब्राह्मणे ॥ वेदार्थो पनिवद्धत्वात्प्रामाण्यं हि मनोःस्मृतं । मन्वर्थ विपरीता तु यास्मृतिः सन शस्यते ॥ तावच्छास्त्राणि शोभन्ते तर्क व्याकरणानिच । धर्मार्थ मोक्षो पदेष्टा मनुर्यावन्न दृश्यते ॥ बृहस्पति ॥ पुराणं मानवो धर्मः सांगोवेदश्चिकित्सितं । आज्ञा सिद्धानि चत्वारि न हंतव्यानि हेतुभिः ॥ भारते ॥

अर्थ :—जो कुछ मनुने कहा है वह औषधि की भी औषधि है (छान्दोग्य ब्राह्मण) वेदार्थ से बहुत निकट सम्बन्ध रखने के कारण मनु की प्रमाणता की गई है जो स्मृति मनु के अर्थ से विरुद्ध है उस की प्रशंसा नहीं की जाती। तर्क और व्याकरणादि शास्त्र तब ही तक शोभा देते हैं जब तक कि धर्म अर्थ और मोक्ष के उपदेश करने वाले मनु का दर्शन नहीं होता ॥ (बृहस्पति)

पुराण (ब्राह्मण) और मानव धर्म (अर्थात् मनु का कहा हुआ धर्म) और अंगों सहित वेदों की आज्ञा सब को माननीय है क्योंकि इन चारों का बचन सिद्ध है हेतु (तर्क वितर्क) से उन को काटना नहीं चाहिये ॥ (महाभारत)

—:०:—

(१) जो प्रशंसा और महिमा मनु की ऊपर के श्लोकों में की गई है उस में यत् किञ्चित भी शंका नहीं मनु महाराज इस से भी अधिक प्रशंसा के योग्य हैं परन्तु ऐसा मानने पर यह आवश्यकता नहीं है कि प्रसिद्ध मनुस्मृति को सर्वथा प्रमाणिक और शुद्ध मान लिया जावे । हमारे बिचार में इस समय अनेक पण्डितों का मन्तव्य है कि प्रसिद्ध मनुस्मृति का एक २ अक्षर मानने योग्य है और इस में किसी प्रकार का सन्देह करना पाप है। परन्तु जब पूर्वापर विचार कर देखा जाता है तो प्रसिद्ध मनुस्मृति में बहुत से श्लोक नवीन

* यह लेख सं० १९०३ ई० की उर्दू आर्य यन्त्री में प्रकाशित हो चुका है ॥ सं०

बढे़ हुवे और कोई श्लोक छुटे हुवे या निकाले हुवे पाये जाते हैं और बहुधा एक ही विषय में इतना परस्पर विरोध पाया जाता है कि सत्य और शुद्ध विषय का निश्चय करना कठिन हो जाता है। और इस सन्देह के कारण जो धर्म की क्षति और उस से विमुखता इस समय हो रही है उसका अनुभव विचार शील पुरुष भली प्रकार कर सकते हैं। अत एव विद्वान सज्जन पुरुषों से निवेदन है कि हम ने जो प्रसिद्ध मनुस्मृत की प्रक्षिप्तता दिखाने के लिये निम्नस्थ अनेक लेखों का संग्रह किया है या तो उन का समाधान करें और यदि उन का समाधान न हो सके तो प्रसिद्ध मनुस्मृति के शोधन का प्रयत्न करें। कदाचित यह आशा नहीं हो सकती कि प्रसिद्ध मनुस्मृति पर जितने आक्षेप हो सकते हैं वह इन किञ्चिन्मात्र अंकों में सम्पूर्ण रीति से आ गये हैं परन्तु हमें निश्चय है कि यह संग्रह इसी प्रकार से भी पूर्ण नहीं और इसी कारण हमारा पाठकवृन्द से निवेदन है कि जो २ सन्देह इन से अतिरिक्त किन्हीं महाशयों को ज्ञात हों तो उन से सूचित करें जिस से कि उन को इस संग्रह में अपने २ स्थान पर संयुक्त कर दिया जावे॥

(२) इस देश में दो अढ़ाई सौ बर्ष से पूर्व सब पुस्तक हाथ से लिखे जाते थे और जिस कारण उस समय और उस से पूर्व मत मतान्तरों का वाद विवाद और सम्प्रदायों का युद्ध चल रहा था इस कारण जहां दूसरे दल पर जय पाने के निमित्त अनेक यत्न किये जाते थे उन में से परपक्ष को निग्रह स्थान में लाने के लिये एक यह प्रबन्ध भी किया जाता था कि प्राचीन पुस्तकों में अपने २ मत के पोषक श्लोक रच कर मिला दिये जाते थे। यद्यपि उस समय अनेक कुलों में शुद्ध और सर्ब प्रकार की प्रक्षिप्तता से रहित पुस्तकों के विद्यमान् होने के कारण उन का यत्न निष्फल रहता था तथापि अधिक काल के व्यतीत होने पर जब प्रक्षिप्त पुस्तक बहुत बढ़ गये और उन की प्राचीन शुद्ध लिपि युद्ध के प्रचार होने से प्रायः नष्ट हो जाने तथा उन की रक्षा के निमित्त भूमि के उदर अथवा गह्वर गुफाओं में छुपाये जाने के कारण उन का अभाव सा हो गया तो पश्चात् युद्ध के निवृत्त होने पर एतद्देशीय पुरुषों के मन में कपट आ जाने से जो हलचल का अकृत्रिम फल है शुद्ध पुस्तकों को वायु लगाना भी नीति के विरुद्ध समझा गया। और इसी कारण शुद्ध पुस्तकों के स्थान में प्रक्षिप्त पुस्तकें जिन की विद्वानों को अधिक ममता नहीं थी परदेशियों के हस्त में दे दी गईं और उन ही पुस्तकों का छप कर प्रचार होने लगा। महाभारत का प्रक्षिप्त होना तो इतना प्रसिद्ध है कि हमें उस के सिद्ध करने की भी

आवश्यकता नहीं। साम्प्रत जब महाभारत अनेकशः मुद्रित होने लगा तो भिन्न२ लिपि के मिलाने से यह प्रतीत हुआ कि दक्षिण प्रान्त में जो हस्त लिखित महाभारत मिलता है उस में १६००० श्लोक ऐसे हैं जो इस देश के उत्तर खण्ड की हस्त लिखित लिपि में नहीं मिलते और दक्षिण प्रान्त के १६००० श्लोक एक विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते हैं और उत्तर खण्ड की लिपि में उन के स्थान में एक विरोधी सम्प्रदाय के श्लोक पाये जाते हैं। कुछ सन्देह नहीं कि महाभारत को कवियों ने एक समुद्र माना था जिस में अनेक लेखों का नदी के समान मिल जाना या मिला देना कोई अनुचित अथवा अद्भुत वार्ता नहीं मानी जाती थी। कवियों के लेख का उत्साह महाभारत पर ही समाप्त न हुआ किन्तु उसका वेग इतना बढ़ा कि उसके लिये १८ दूनी ३६ पुराणों तथा उतने ही तंत्रों और अनेक आशयों को स्थान देना पड़ा। और जब उन से भी लेख रूपी जल फूट निकलता था तो प्राचीन नियत केदारों प्रसिद्ध जलाशयों और अनेक क्षेत्रों तथा कियारियों तक उसका वेग पहुंचता था। इसी प्रकार की द्वादश कियारियों का क्षेत्र रूप प्रसिद्ध मनुस्मृति पुस्तक है जिस में मतवाद और सम्प्रदाय सम्बन्धी कविता शक्ति का हस्ताक्षेप पाया जाता है॥

(३) इस समय मुद्रणालयों के प्रचार से पुस्तकों के परस्पर मिलाने का अवकाश अधिक प्राप्त है इस कारण देखा जाता है कि मनुस्मृति के अध्यायों और श्लोकों की प्रसिद्ध संख्या के नियत हो जाने पर भी किसी २ हस्त लिखित या मुद्रित लिपि में संख्या से अधिक श्लोक मिलते हैं। प्रक्षेप और आरोपण का इससे अधिक अन्य क्या प्रमाण हो सकता है कि अब तक नियत श्लोकों से अतिरिक्त स्थल२ में ऐसे श्लोक बढ़े हुवे हैं जो किसी गिन्ती में नहीं आ सकते क्योंकि उनको बीच में डाल कर श्लोक का अङ्क लगाया जावे तो अङ्कों का क्रम टूट जाता है और जहां २ अनेकानेक पुस्तकों और लेखों में मनुस्मृति के श्लोकों का प्रमाण केवल अध्याय और श्लोक के अङ्कों में दिया है वह सब अशुद्ध हो जाते हैं और अत्यन्त अनवस्था प्राप्त होती है॥

(४) पं० तुलसीराम स्वामि मेरठ निवासी ने जो मनुस्मृति अर्थात् भाषानुवाद सहित छापी है उसमें ऐसे श्लोकों की संख्या जो गिन्ती में नहीं आते इस प्रकार दी है।

अध्याय	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	योग
श्लोक	१७	७	३	१६	२२	७	१८	२५	५	१	१३	८	१४२

मूल सूत्र उन सूत्रों से भी पुराने हों जो आज कल मिलते हैं परन्तु वासिष्ठ सूत्र में मनु का कहा हुवा कुसीद सम्बन्धी नियम विद्यमान होना और उसके नाम की स्मृति में उस का न होना प्रसिद्ध स्मृतियों के प्रमाणिक होने में सन्देह डालता है ॥

(११) फिर वासिष्ठ स्मृति में मनु के श्लोक प्रमाण रूप लिखे हैं। उन में से दो श्लोक तो प्रसिद्ध मनुस्मृति में मिलते हैं और दो का पता नहीं और इन पिछले दो श्लोकों में से एक ऐसे छन्द में है जो मनु के अनुष्टुप छन्द से विलक्षण है जिस से सिद्ध होता है कि उस मनु में जिसका प्रमाण वासिष्ठ ने दिया है और उस मनु में जो स्वयम् वासिष्ठ का प्रमाण देता है काल का बहुत बड़ा अन्तर होगा। इससे यह भी सिद्ध है कि प्रसिद्ध मनुस्मृति में प्राचीन स्मृति से बहुत काल पीछे तक के प्रक्षेप विद्यमान हैं ॥

(१२) डाक्टर व्यूलर की सम्मति है कि यद्यपि मानव स्मृति अति प्राचीन और वेदाश्रित है और उस में निःसन्देह अत्यन्त प्राचीन पुस्तकों के विषय संयुक्त हैं (उदाहरणार्थ देखो अ० २ श्लोक ११४-११६ जो निरुक्त अ० २ खं० ३, ४ के सर्वथा अनुकूल हैं) तथापि इसमें सन्देह नहीं कि भृगु संहिता धर्मशास्त्र का सब से प्रथम और अति प्राचीन संशोधन किया हुवा संक्षेप है जो मनु के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है और वह धर्म शास्त्र जो प्रसिद्ध मानव स्मृति का मूल है मूल धर्म सूत्रों का संक्षेप था ॥

(१३) धर्म शास्त्रों में बहुत सी गाथाएं ज्यूं की त्यूं धर्मसूत्रों से ली गई हैं और कोई २ गाथाएं बदल कर लिखी गई हैं। वासिष्ठ, बौद्धायन, आपस्तम्भ और हिरण्यकेशी की गाथाओं को मनुस्मृति के साथ मिलाने से यह निश्चय हुवा है कि इनकी १०० से अधिक गाथाएं मनुस्मृति में विद्यमान हैं।

(१४) प्रसिद्ध मनुस्मृति में बहुत से श्लोक इस प्रकार के हैं कि उन में वासिष्ठ सूत्रों के आशय को केवल श्लोक में कह दिया है और एक स्थान पर स्पष्ट वासिष्ठ का प्रमाण दिया है (देखो अ० ८ श्लोक १४० जो अङ्क ६ में ऊपर आ चुका है) ॥

(१५) महाभारत और पुराणों में मनुस्मृति के श्लोकों का याथातथ्य वा शब्दान्तरों में पाया जाना मनुस्मृति का उन से प्राचीन होना सिद्ध करता है परन्तु अ० ३ श्लोक २३२ में धर्म शास्त्र, आख्यान, इतिहास, पुराण और खिल आदि शब्द इस प्रकार आये हैं कि मानो यह पुस्तकों के नाम हैं और कुल्लूक

अपने टीका में इतिहास से महाभारत तात्पर्य लेता है। इस से सिद्ध होता है कि प्रसिद्ध मनुस्मृति और उन पुस्तकों का जो मनु के नाम से श्लोक लिखते हैं आदि मूल कोई और ही है जो इस समय उपलब्ध नहीं ॥

(१६) अ० ६ श्लोक ४२ में वायुगीता की गाथा लिखी है यह विदित नहीं कि यह ग्रन्थ कौनसा है और वह मनुस्मृति से पहिले का है या पीछे का ? ॥

(१७) इसी प्रकार अ० ६ श्लोक १२८, १२६ में भी दक्ष की कथा पीछे की बढ़ाई हुई प्रतीत होती है क्योंकि उस का धर्म शास्त्र के विषय से कोई सम्बन्ध नहीं ॥

(१८) अ० ६ श्लोक ६५-६८ में राजावेणु की कथा नियोग की निन्दा में आती है और अ० ६ श्लोक ४४ में पृथु की कथा है। राजा वेणु और पृथु मनु से पूर्व नहीं हो सकते परन्तु मनुस्मृति में उन की कथा इस प्रकार आती है कि मानो वह बहुत काल पहिले हो चुके हैं ॥

(१६) अ० ७ श्लोक ४१-४२ में नहुष, वेणु, सुदास, यवन, सुमुख, निमि, पृथु, और मनु के नाम आते हैं और अ० ६ श्लोक २३ में अक्षमाला, बसिष्ठ, चटका, मन्दपाल का भूतकाल में होना लिखा है। यह शोचनीय है कि क्या यह सब मनु से पुराने हैं ? ॥

(२०) अ० १२ श्लोक १, २, १२६ में मनु छोड़ भृगु जो भी वक्ता नहीं हैं किन्तु कोई और तीसरा पुरुष वक्ता है जिस से मनुस्मृति के प्रसिद्ध लिपि के शुद्ध होने में सन्देह होता है ॥

(२१) यद्यपि सम्पूर्ण पुस्तक मनु के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है तथापि प्रसिद्ध मनुस्मृति में ऐसे श्लोक पाये जाते हैं जिन में मनु का नाम प्रमाण की रीति से लिया जाता है अर्थात् "मनुरब्रवीत" ऐसा लिखा है जिससे यह पाया जाता है कि मानो पुस्तक भर में मनु का अभिप्राय केवल इनही श्लोकों में कहा गया है जो कदाचित सम्भव नहीं ॥

यह अन्य पुरुषों के बढ़ाये हुये निर्बल बचन हैं जिन को अपनी पुष्टी के लिये मनु के प्रमाण की अपेक्षा है। ऐसे श्लोकों का अन्य पुरुषों की ओर से होना प्रकट है। जिन श्लोकों में इस रीति से मनु का नाम प्रमाण में दिया जाता है वह यह हैं।

अध्याय	५	६	८	९	१०	१२
श्लोकांक	४१ १३१	५४	१२४ १६८ २७० ३३९	१५८ १८२ २३९	६३ ७८	१०७

इस प्रकार के श्लोकों का अन्य पुस्तकों का वा अन्य पुरुषों की ओर से होना स्वयम् सिद्ध है ॥

(२२) ऋषि लोग मनु से प्रार्थना करते हैं कि आप धर्म का व्याख्यान करें और मनु जी सृष्टि की उत्पत्ति और ब्रह्मा से स्वयम् अपना उत्पन्न होना वर्णन करके कहते हैं कि "मैं ने ब्रह्मा से धर्मशास्त्र सीख कर दश प्रजापतियों को सिखाया" फिर उनमें से एक अर्थात् भृगु से कहा कि उसी धर्म को शेष नव ऋषियों को सिखावे जिन को कदाचित वह विस्मरण हो गया था। पहिले अध्याय के ६०वें श्लोक से आगे शेष पुस्तक भृगु प्रोक्त है नकि मन्वोक्त (देखो अ० १ श्लोक १-६०, ११९ । अ० ३ श्लोक १६ । अ० ८ श्लोक २०४ । अ० १२ श्लोक १, १२६) ॥

(२३) मांस भक्षण के विधान और निषेध का अत्यन्त परस्पर विरोध मनु में ऐसा है कि उस का समाधान कठिन है उदाहरणार्थ देखो मनु० अ० ४ श्लो० २५० । अ० ५ श्लो० ७-५० । अ० ११ श्लो० १५६-१५९ ॥

(२४) हिंसा और अहिंसा विधायक परस्पर विरोधी श्लोकों की समालोचना* मास्टर दुर्गा प्रसाद जी ने इस प्रकार की है । वह लिखते हैं कि मनुस्मृति के ५ वें अध्याय के आरम्भ में ही इस प्रश्न का उत्तर कि वेद और शास्त्र का अभ्यास रखने वाले किस प्रकार मृत्युवश हो जाते हैं (अर्थात वह सौ बर्ष की पूर्ण आयु पाने से पूर्व ही क्यों मर जाते हैं) अ० ५ श्लो० ४ में इस प्रकार दिया है कि "वेद के अभ्यास न करने, सदाचार के छोड़ देने, आलस्य, और अन्न के दोष से मृत्यु विप्रों को मार लेता है" । इस से पाया जाता है कि इन चार कारणों में से जो कारण इस स्थान पर विशेष रीति से विवक्षित है वह अन्न का दोष है और अनुमान यह होता है कि इस से आगे इस बात का व्याख्यान होगा कि किन अन्नों में दोष है और किन में नहीं ॥

(२५) इस प्रकार ५ वें अध्याय में उन अन्नों का विधान होना चाहिये जो आयु को बढ़ाने वाले हों और ऐसे अन्न, धान्य, औषधि और फल आदि

* यह समालोचना अङ्क २४ से ३२ तक चली गई है ॥

ही हैं। महाभारत अनुशासन पर्व अ० ११५ श्लो० १२ में कहा है कि "जो मांस नहीं खाता और जो किसी को नहीं मारता और न मारने देता उस को स्वयम्भू मनु ने सर्व भूतों का मित्र कहा है"। इस से मनु का अभिमत नियम अन्य शास्त्र की साक्षी से नियत होता है। और भी देखो उसी अध्याय के श्लोक ४०, ४१, ४३, ४७, ५७, ५८ और शान्ति पर्व मोक्ष धर्म अ० ६२ श्लो० ४, ५, ६, ८, ९, ११ जिन में हिंसा का निषेध किया है। और शान्ति पर्व अ० ९२ श्लो० ५ में स्पष्ट लिखा है कि "धर्मात्मा मनु ने सब कर्मों में अहिंसा ही कही है"। और इस से ऊपर के श्लोक में कहा है कि "मर्य्यादा रहित मूढ़ नास्तिकों ने पीछे से हिंसा का विधान कर दिया"। और शान्ति पर्व अ० ६४।६ में लिखा है कि "मदिरा मत्स्य पशुओं का मांस और मनुष्यों का बलिदान धूर्तों ने चलाया है। वेदों में उन का विधान नहीं"। इस साक्षी की पुष्टी स्वयम् मनु के अ० ४।१००, २८६। अ० १२।८३। अ० २।१००। अ० ४ श्लो० ८, २४६। अ० ६।१४, ६०। अ० १०।६३। अ० ५।४, ५, ६, ८, ९, १०, २१, २४, २५, ४५--५१, ५३, ५४, से होती है॥

(२६) पांचवें अध्याय के ५६ श्लोकों में भक्ष्याभक्ष्य का विषय है इन में से ३४ श्लोक मांस विधायक हैं अर्थात श्लो० ७, ११--२०, २२, २३, २६--४४, ५२, ५६ अब इनका समाधान निम्नस्थ अङ्कों में युक्ति पूर्वक किया जाता है॥

(२७) श्लोक ११--१८ में उन चतुष्पदों तथा पक्षियों को गिनाया है जिन का खाना विवर्जित है परन्तु आश्चर्य्य है कि उन में कहीं गौ का नाम नहीं आता। वेदों में गौ का नाम "अघ्न्य" अर्थात् "न मारने के योग्य" आता है। शूकर को अभक्ष्य में और गौ को एक प्रकार से भक्ष्य पशुओं में गिनाना इन श्लोकों में यावनी प्रभाव को सिद्ध करता है॥

(२८) श्लोक ११ वें में कहा है कि सब ग्राम्य पक्षी वर्जित हैं। परन्तु १२ वें श्लोक में कुक्कुट और चटक (चिड़िया) को प्रथम गिनाया है जो वास्तव में ग्राम के रहने वाले पक्षी हैं। इस प्रकार की भूल का मनु कैसे विद्वान से होना असम्भव है। मनु का शुद्ध और सुयुक्त पशु विभाग जो प्रथम अध्याय में कहा गया है इस बात को सिद्ध करता है कि यह भक्ष्याभक्ष्य पशुओं का विभाग उन का किया हुआ नहीं है॥

(२९) मनुस्मृति में यह सामान्य नियम पाया जाता है कि जब कोई नवीन प्रसंग आरम्भ होता है तो उस को पूर्व ही से जता दिया जाता है कि अब

भी प्रक्षिप्त हैं । ५६ वें श्लोक में अद्भुत रीति से मांस विधायक श्लोकों का बढ़ाने वाला निषेध करने वालों के साथ राज़ीनामा करना चाहता है क्योंकि वह दबे शब्दों में मांस के निषेध की उत्तमता को स्वीकार करता है ॥

(३३) अ० ५ श्लोक ५६ में लिखा है कि "सुरापान और मांस भक्षण में कोई दोष नहीं है" । परन्तु अ० ८ श्लोक २३०—२४० में सुराप्रान करने वाले के लिये दण्ड लिखा है । और अ० ११ श्लोक ९३, ९४, ९६, ९७, ९८ वें में सुरापान की निन्दा की है । अ० ११ श्लोक ९५ वें में सुरा और मांस को यक्ष राक्षस और पिशाचों का अन्न बतलाया है । और अ० ११ श्लोक १४६—१५५ में मांस खाने और सुरा पीने पर प्रायश्चित लिखे हैं जिन से सिद्ध होता है कि मनुस्मृति में जितने श्लोक मांसाशन और सुरापान विधायक हैं वह सब प्रक्षिप्त और पीछे के बढ़ाए हुए हैं ॥

(३४) अ० ३ श्लोक २६८—२७२ में श्राद्ध में मांस की हवि से पितरों की विशेष तृप्ति कही है परन्तु अ० ११ श्लोक १५६—१५८ में श्राद्ध में मांस खाने का प्रायश्चित कहा है ॥

(३५) स्त्री के पुनर्विवाह के विषय में भी प्रसिद्ध मनुस्मृति में परस्पर विरोध पाया जाता है उदाहरणार्थं देखो मनु० अ० ५ श्लोक १५०, १६०—१६५, अ० ९ श्लोक ६५, ७६, १७५, १०६, १९१ ॥

(३६) पुरुष के विषय में किसी २ श्लोक से पाया जाता है कि पहिली स्त्री के होते हुए पुरुष का पुनर्विवाह नहीं हो सकता और कहीं पुनर्विवाह की स्पष्ट आज्ञा और विधान पाया जाता है (देखो मनु० अ० ५ श्लो० १६७ । अ० ८ श्लो० २०४ । अ० ९ श्लो० ७७—८१, ८२) ॥

(३७) ब्राह्मण के शूद्रा स्त्री के साथ विवाह करने के विषय में भिन्न २ आशय के श्लोक पाये जाते हैं (देखो मनु० अ० ३ श्लोक १३—१९। अ० ९ श्लो० १४९—१५५, १७८ । अ० १० श्लोक ६४—६७) यह श्लोक प्राचीन प्रतीत होते हैं क्योंकि अब उनके अनुसार व्यवहार नहीं होता ॥

(३८) अ० ३ श्लोक १२—१९ अ० ९ श्लोक ४५, १०१ से प्रतीत होता है कि द्विज के लिये केवल एक विवाह करना उचित है । परन्तु अ० ९ श्लोक ८५, १२५, १४८—१५८, १८३ । अ० १० श्लोक १० । अ० ३ । १३ से पाया जाता है कि ब्राह्मण प्रतिवर्ण एक २ अर्थात् ४ स्त्रियां इसी प्रकार क्षत्रिय ३ और

वैश्य २ विवाह सकता है। इसे चाहे विरोध समझ लीजिये या दो प्रकार की विधि परन्तु यह स्पष्ट है कि एक से अधिक और अन्य वर्णकी स्त्रियों से विवाह करना किसी काल में भी अच्छा नहीं समझा गया क्योंकि स्वयम् मनुस्मृति में इसको आपद्धर्म कहा है (देखो अ० ३ श्लोक ३३६) अ० १० श्लोक ६-७३ में ऐसे सम्बन्धों और उनसे उत्पन्न हुई सन्तान की निन्दा की है। अ० ३ श्लोक १२ में अपने ही वर्ण की कन्या को श्रेष्ठ कहा है और अ० ३ श्लोक १४, १५ में इससे विरुद्ध कहा है और श्लोक १६ में कहा है कि ब्राह्मण शूद्रा से विवाह करने पर पतित हो जाता है॥

(३६) जब कोई ऊंचे वर्ण का द्विज नीचे वर्ण की स्त्रियो से विवाह करे तो दाय भाग में सब पुत्रों को समान भाग नहीं मिलता परन्तु मनु० अ० ६ श्लोक १४६—१५४ में माता के वर्णों के अनुसार न्यूनाधिक भाग नियत किया है। सूत्राकार ऊंचे वर्ण के पुरुष का नीचे वर्ण की स्त्री के साथ विवाह होना विहित बताते हैं परन्तु सन्तान में भेद रक्खा है। किसी का मत है कि नीचे वर्ण की माता का पुत्र बड़े वर्ण की माता के पुत्रों के साथ समान भाग पावे और किसी का मत है कि ऊंचे वर्ण की माता से सन्तान न हो तब उन को भाग मिले और एक मत यह है कि उनको केवल थोड़ा सा भाग दिया जावे और एक मत है कि नीचे वर्ण के पुत्रों को केवल आजीवका मात्र दिया जावे (देखो बौद्धायन सूत्र २। २। ६, ७, २१। गौतम २८। ३६। वासिष्ठ १७। २१, २५) परन्तु मनुस्मृति में इस विषय का बड़ा विरोध पाया जाता है जिससे सिद्ध होता है कि प्रसिद्ध पुस्तक में भिन्न २ काल के बने हुए श्लोक संयुक्त हैं। कहीं तो विवाह का निषेध किया है और कहीं आज्ञा है। एक स्थान में ऐसे पुत्र को दायभागी बताया है और दूसरे स्थान में वर्जित कर दिया है (देखो मनु० अ० ३ श्लोक १२, १६ अ० ६ श्लोक ४६—१५५। इसी विषय में देखो नारदस्मृति अ० १२ श्लोक ४—६। याज्ञवल्क्य अ० १ श्लोक ५६, ५७। स्मृति चन्द्रिका २। २। ८) परन्तु इस प्रकार के विवाह का विहित होना मनु से सिद्ध है क्योंकि एक स्थान पर लिखा है कि ऐसी सन्तान ७ जन्मों में ऊंचे वर्ण में आ जाती है (मनु० अ० १० श्लोक ६४, ४२) और भी स्पष्ट लिखा है कि शूद्र पुरुष ऊंचे वर्ण की स्त्री से विवाह नहीं कर सकता देखो (मनु० अ० ३ श्लोक १३। अ० ६ श्लोक १५७)॥

(४०) अ० ६ श्लोक ७६ में लिखा है कि जिसका पति दूर देश में गया हो वह उसके बाहर जाने के प्रयोजन के अनुसार ८ या ६ या ३ वर्ष तक प्रतीक्षा

करे परन्तु यह नहीं लिखा कि इतने समय के व्यतीत होने पर फिर क्या करे कुल्लूक भट्ट ने टीका में लिखा है कि "इस काल के व्यतीत हो जाने पर स्त्री उस के पीछे ढूंढने के लिये चली जावे"। अनुमान है कि कुल्लूक ने यह बात वसिष्ठ स्मृति अ० १० श्लोक ७५—८० के अनुसार लिखी है। नारद स्मृति में जहां यह विषय आता है उस से प्रतीत होता है कि नारद के पास प्राचीन मनुस्मृति विद्यमान थी क्योंकि उस में ऐसी दशा प्राप्त होने पर लिखा है कि इन पांच दशाओं में स्त्री दूसरा पति कर सकती है अर्थात् (१) जब पहला पति मर जावे (२) या नष्ट हो जावे (३) या देशान्तर चला गया हो (४) या नपुन्सक हो (५) या पतित हो गया हो (देखो नारद स्मृति अ० १२ श्लोक ६७—१०१) फिर इस के पश्चात् प्रतिज्ञा काल नियत किया है और अन्त में यह लिखा है कि "इस काल के व्यतीत हो जाने पर स्त्री दूसरे पति को प्राप्त हो"। इस प्रकार यह नियम पूर्ण हो जाता है परन्तु प्रसिद्ध मनुस्मृति में यह नियम सर्वथा अपूर्ण है ॥

(४१) यदि अ० ६ श्लोक ७६ के अनन्तर इस प्रकार का नियम होता जैसा कि ऊपर लिखा गया है तो श्लोक १७५, १७६ भी सार्थक हो जाते और उन का अभिप्राय भी स्पष्ट हो जाता और विरोध न रहता। परन्तु विदित होता है कि जब दूसरे विवाह की मर्य्यादा न रही तो दूसरे विवाह के विधान करने वाले श्लोक छोड़ दिये गये और उस के विरुद्ध निषेध करने वाले श्लोक संयुक्त कर दिये गये और इसी कारण श्लोक १७५, १७६ निरर्थक हो गये परन्तु उन को केवल "कानीन पुत्र" की संज्ञा के लिये रखना पड़ा क्योंकि पुत्रों की सूचि में पहले कानीन पुत्र* को गिना चुके हैं। इस प्राचीन नियम के विरुद्ध नवीन मर्यादा का प्रचार मनुष्य की स्वार्थ बुद्धि का फल है और इसी स्वार्थ साधक नियम के कारण ईसाइयों के दोनों सम्प्रदायों अर्थात् रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेंट में भी तलाक़ (स्त्री त्याग) के पश्चात् स्त्री के विवाह की आज्ञा वा निषेध के विषय में मत विरोध हो गया है ॥

---

* मनुस्मृति ९। १२७—१४०, १५८—१८४। बौद्धायन १७।२, १०—२४। गौतम २८। ३२, ३३। वासिष्ठ १७। ९—२२। विष्णु० १५। १—२७। नारद० १३। १७—२०, ४५—४७। देवल ३। १५३। यम ३। १५४। याज्ञवल्क्य २। १२८—१३२। मिताक्षरा १। ११। कालिका पुराण ३। १५५। शंख व लिखित ३। १५१। हारेत ३। १५२। वृहस्पति ३। १६२—१७१। ब्रह्म पुराण ३। १७४॥ परन्तु आपस्तम्भ २। ४, १३, १—११ में केवल असली पुत्र को माना है॥

(४२) स्त्री के दूसरे पुरुष के साथ नियोग करके अपने पति के लिये सन्तान उत्पन्न करने का विषय भी प्राचीन काल से सम्बन्ध रखता है जब कि उसका प्रचार था उसके अन्तिम उदाहरण महाभारत अर्थात् कलियुग के आरम्भ में मिलते हैं। यह और शूद्रा स्त्री से ब्राह्मण के विवाह का नियम सर्वथा भिन्न भिन्न कालों के प्रतीत होते हैं। मनु ने इसे आपद्धर्म कहा है अर्थात् यह धर्म नहीं है (देखो अ० ६ श्लोक ३३६)। दूसरे पुरुष से सन्तान उत्पन्न करने का विषय मनुस्मृति के अ० ६। ५६-६६, १२०, १४३, १६२ १६५, १६०, १९०, १९१, २०३ में पाया जाता है परन्तु इसके विरुद्ध भी नियम पाया जाता है (उदाहरणार्थ देखो अ० ५। १५६-१६६। अ० ६। २६, ३०*, ६४) विशेषता यह है कि अ० ६। १७५, १७६ में पुनर्विवाह की आज्ञा भी पाई जाती है॥

(४३) अ० ६। १८ अ० २। ६६ में स्त्री का संस्कार अमन्त्रक कहा है और अ० ३। १२१ में स्त्री को बलिवैश्व देव बिना मन्त्र करना लिखा है और अ० २। ६७ में स्त्री का वेदाध्ययन केवल पतिसेवा और उपनयन केवल विवाह और सायं प्रातः का हवन केवल गृहकृत्य कहा है परन्तु अ० ११। ३६ से सिद्ध होता है कि स्त्री यज्ञ में "होता" होती थीं क्योंकि उसमें कहा है कि युवति कन्या होता का काम न करे तो अर्थापत्ति से सिद्ध हुवा कि वृद्धा स्त्री ऐसा कर सकती है। अ० ६। ३ में स्त्री का वानप्रस्थ लिखा है और अ० ५। १६८ में स्त्री का दाह कर्म स्मार्त अग्नि और यज्ञ पात्रों सहित कहा है और प्रसिद्ध मनुस्मृति के अ० ११। ८७ से आगे एक श्लोक था जो अब भी किसी २ पुस्तक में मिलता है और जिस को किसी काल में स्त्री को निकृष्ट कोटि में रखने के लिये निकाल दिया गया वह श्लोक यह है।

जन्म प्रभृति संस्कारैः संस्कृता मन्त्र वाचया।
गर्भिणीत्वथवास्थात्ता मात्रेयीं च विदुर्बुधः॥

(अर्थात्) जो जन्म से लेकर संस्कारों से संस्कृत और मन्त्र पढ़ने वाली स्त्री वा गर्भिणी हो उसे विद्वान लोग आत्रेयी कहते हैं॥

(४४) स्त्री विषयक प्रसिद्ध मनुस्मृति में दो प्रकार के लेख पाये जाते हैं एक निन्दा परक जिन में स्त्रियों को निकृष्ट बताया है और दूसरे स्तुति परक

* अ० ९ श्लो० २९, ३० द्वितीय बार आये हैं यह श्लोक इसी प्रकार पहले अ० ५ में आ चुके हैं देखो श्लोक १६४, १६५॥

जिन में स्त्रियों की महिमा और उन का सन्मान किया है। स्तुति परक श्लोक इस प्रकार हैं यथा अ० २ । १४५ जिस में १० अध्यापक के तुल्य एक आचार्य्य और १०० आचार्यों के तुल्य पिता और १००० पिताओं के तुल्य माता का गौरव बताया है । अ० ६ । २२—२५ में नीच वर्ण की स्त्रियों का भी ऋषियों के साथ सम्बन्ध होने से उत्तम गुण हो जाना लिखा है । अ० ६ । २६-२६ में स्त्रियों की प्रशंसा की है । अ० ६ । २८ में सब धर्म कार्य्य स्त्री आधीन कहे हैं । अ० ३ । ५४—६६ में यह आज्ञा की गई है कि स्त्री को सदैव प्रसन्न रखना चाहिये। अ० ६ । ६१, ६२ में सुयोग्या कन्याओं को स्वयम्बर की आज्ञा दी है। अ० २ । २२३ में ब्रह्मचारी के लिये लिखा है कि स्त्री या शूद्र से भी कोई अच्छी गुण की बात सीखे । अ० ५ । १३६ से स्त्री और शूद्र दोनों का सन्ध्योपासन करना पाया जाता है क्योंकि उस में स्त्री के लिये आचमन विधि लिखी है। अ० २। ३३ में स्त्री का नामकर्म संस्कार पाया जाता है । और अ० २ । १२६-१३३ में स्त्रियों के अभिवादन का नियम लिखा है । इस कारण इन श्लोकों के सन्मुख जो श्लोक स्त्री को अपने अधिकार से गिराने वाले अथवा उस का अनादर करने वाले हैं वह कदापि ठीक नहीं हो सकते यथा अ० ६ । २, १२, १८, ६६ । अ० ५ । १५५ अ० ३ । १२१ । अ० २ । ६० इत्यादि ॥

(४५) अ० ६ । ६३-६० में शुल्क अर्थात् रुपया लेकर बेटी के विवाह करने की आज्ञा पाई जाती है और अ० ३ । २६, ३१ में कन्या को रुपया देकर मोल लेना भी विवाहों में माना गया है परन्तु अ० ६। ६८, १०० में कन्या पर शुल्क लेने का सर्वथा निषेध किया है और अ० ३ । ५१ में कन्या के बेचने में बड़ा भारी दोष बताया है और अ० ३ । ५२ में स्त्री वा कन्या का धन लेना बुरा कहा है और अ० ३ । ५३ में बड़े बल पूर्वक कहा है कि वर से कुछ लेना नहीं चाहिये और अ० ३ । ५४-५६ में कन्या को धन देने और स्त्री को भूषण तथा वस्त्रादि से भूषित करने की आज्ञा है ॥

(४६) अ० ३ । २६ में आठ प्रकार के विवाहों में से आर्ष विवाह का लक्षण इस प्रकार लिखा है कि "गो मिथुन अर्थात् एक गौ और एक बैल की जोड़ी अथवा दो जोड़ी धर्म से लेकर विधि पूर्वक कन्या का दान करना आर्ष धर्म्म कहलाता है" । फिर आगे चलकर अ० ३ । ५३ में लिखा है कि "आर्ष विवाह में कोई कहते हैं कि एक गौ और बैल की जोड़ी शुल्क लेले सो यह मिथ्या ही है क्योंकि थोड़ा ले वा अधिक वह कन्या का बेचना ही है" । अब

विचारणीय यह है कि इस पिछले श्लोक में "कोई कहने वाला" कौन है यदि यह कहें कि पहले अर्थात् ५३ वें श्लोक में जो कथन कर आये हैं वह किसी दूसरे आचार्य्य का बचन है तो इसका उत्तर यह है कि मनुस्मृति में इस श्लोक को किसी अन्य आचार्य्य के नाम से नहीं लिखा जैसा कि अ० ८।१४० में कुसीद विषयक वासिष्ठ का बचन लिखते हुवे उस ऋषि का नाम स्पष्ट लिख दिया है। असुर विवाह का लक्षण भी यही लिखा है कि कन्या के सम्बन्धियों वा उस के पिता को वा स्वयम् कन्या को शक्ति अनुसार धन दे कर जो विवाह किया जाता है वह असुर विवाह है। विशेषता यह है कि आर्ष विवाह को उत्तम विवाहों में रक्खा है और उस को ब्राह्मणों के लिये विहित किया है। इस परस्पर विरोध के विद्यमान होते हुवे कदाचित साम्प्रत रुपया लेने की रीति को विहित करने के लिये एक श्लोक और मिलता है जिस में परस्पर विरोधी विधानों के बीच में "राज़ीनामा" कराने का उद्योग किया है वह (अध्याय ३ का श्लोक ५४) इस प्रकार है "जिन कन्याओं के लिये प्रीति कर के वर के दिये हुवे धन को पितादिक ग्रहण नहीं करते किन्तु कन्या ही को दे देते हैं वह बेचना नहीं है वह केवल उन कन्याओं का पूजन है कोई क्रूर कर्म्म (जुल्म) नहीं है"। न्यायशील धर्मज्ञ पुरुष स्वयम् व्यवस्था दे सकते हैं कि कन्या के नाम पर रुपया लेना कदाचित मनु जी विहित कर सकते थे जब कि उन्हों ने एक बार कन्या बेचने का सर्वथा निषेध कर दिया॥

(४७) अ० ६। ६४ वें में लिखा है कि "३० वर्ष का पुरुष १२ वर्ष की मनोहर कन्या से और २४ वर्ष का पुरुष ८ वर्ष की कन्या से विवाह करे इसके विरुद्ध करने से धर्म की हानि होती है"। परन्तु अ० ६।८६, ६० में लिखा है कि "ऋतु काल के पश्चात भी तीन वर्ष पर्य्यन्त अच्छे वर के मिलने की प्रतीक्षा करे और यदि गुणवान वर न मिले तो आयु भर कन्या कुमारी रहे तो कुछ शोच नहीं"। इससे अतिरिक्त सुश्रुत शरीर स्थान में ऋतु कालादि का विचार करके वर और कन्या का विवाह काल यथाक्रम २५ और १६ वर्ष नियत किया है॥

(४८) इसी प्रकार शूद्र के विषय में भी द्वैविध पाया जाता है। अ० ४। ६१ में शूद्र की निन्दा की है। अ० ४। ८० में कहा है कि शूद्र को धर्म न सुनावे। अ० ८। २० में कहा है कि शूद्र को न्याय का अधिकार न दे। अ० ८। २७०, २७३, २८१-२८३ में शूद्र के लिये अत्युग्र दण्ड रक्खा है विशेषतः जब कि वह ब्राह्मण का अनादर करे। परन्तु इनके विरुद्ध बहुत से श्लोक

पाये जाते हैं जिन में शूद्रों का सन्मान और उनके अधिकार को माना है यथा अ० ५ । १४० में शूद्र के संस्कार करने की आज्ञा है। अ० २ । ६२, ५, १३६ में शूद्र के लिये आचमन विधि लिखी है जिससे उसका संध्योपासन आदि करना भी सिद्ध है। अ० १० । १२१, १२८ में शूद्र को धर्म में अधिकार कहा है। अ० ६ । ३३५ व अ० १० । ६५ में शूद्र का ऊंचे वर्ण को प्राप्त होना स्पष्ट लिखा है। अ० ८ । ११३ में शूद्र को 'सर्व पातक' के शपथ दिलाने का विधान है। अ० ८ । ३३७, ३३८ में चोरी का दण्ड शूद्र के लिये ब्राह्मण से द्वादशांश रक्खा है और आपत् काल में वैश्य को शूद्र वृत्ति करने की आज्ञा दी है और उसको बुरा नहीं समझा गया॥

(४६) अ० ४ । २२३ में शूद्र के घर के पक्वान्न खाने को भी वर्जित किया है। और अ० ४ । २५३, २५४ में शूद्र के अन्न के खा लेने की आज्ञा दी है निषेध नहीं किया और न उसको बुरा समझा गया है॥

(५०) अ० ८ । ४१३, ४१४ में शूद्र का दासवत् क्रय विक्रय लिखा है जिस से "बरदा फ़रोशी" की गंध आती है परन्तु अ० ६ । १०६ में शूद्र और दास का पृथक होना सिद्ध होता है। शूद्र के अधिकार और उसकी स्वच्छन्दता विषय में मनु के अन्य स्थलों में दृढ़ लेख विद्यमान हैं जिन से दास क्रय विक्रय विषयक श्लोकों के प्रक्षिप्त होने में कोई सन्देह नहीं हो सकता उदाहरणार्थ देखो अ० ११ । ४२, ४३ व अ० १० । २७ जिनका प्रमाण आगे भी दिया जावेगा॥

(५१) अ० ८ । ४१७ में लिखा है कि शूद्र दास से ब्राह्मण सब धन छीन लेवे क्योंकि अ० ८ । ४१६, ४१८ में लिखा है कि शूद्र और दास का कुछ धन नहीं होता। और अ० १० । १२६ में लिखा है कि शूद्र धन सञ्चय न करे परन्तु अ० ११ । ३४ व अ० ६ । २२६, अ० ११ । १३, अ० १० । २७, अ० ११ । ४२, ४३ आदि से शूद्र का धनवान होना पाया जाता है जैसा कि आगे सिद्ध किया गया है॥

(५२) अ० ११ । २४, ४२, ४३ में लिखा है कि यज्ञ के लिये शूद्र से धन न ले। और अ० ३ । १०६ में लिखा है कि शूद्र से दान न ले क्योंकि निन्दित है परन्तु अ० ११ । १३ में लिखा है कि शूद्र से यज्ञ के लिये जो वस्तु आवश्यक हो लेवे। और अ० १० । २७ में लिखा है कि वैश्वानरी इष्टि (यज्ञ) के लिये शूद्र से धन ले लेवे॥

(५३) अ० ८। ४१६ में दास तथा पुत्र और स्त्री को निर्धन कहा है। और अ० ६। १९३, १९४, १९५ में स्त्री धन की व्याख्या लिखी है। और अ० ६। २०६ में मधुपर्कादि के दान को पुत्र का धन बताया है और दास और शूद्र के विषय में हम ऊपर लिख चुके हैं॥

(५४) अ० ७। ४३ में तर्क विद्या की चर्चा है अ० २। १११ में परिषद में हैतुक और तर्की संयुक्त किये हैं। और अ० १२। १०६ में लिखा है कि वही मनुष्य धर्म को समझ सकता है जिसने वेद और शास्त्रानुकूल तर्क से उसका निश्चय किया हो परन्तु अ० २। ११ व अ० ४। ३० में तर्क की निन्दा की है। और अ० २। १० में स्पष्ट शब्दों में श्रुति और स्मृति दोनों को "अमीमांस्य" अर्थात् तर्क से परे कहा है॥

(५५) ब्राह्मणों के सन्मान, योग्यता और धर्मादि के विषय में प्रसिद्ध मनुस्मृति में दो प्रकार के लेख पाये जाते हैं एक वह जिन में अत्युक्ति और आक्षेप पाया जाता है और दूसरे वह जो समुचित न्याय युक्त और बुद्धि ग्राही हैं। इन में से प्रथम कक्षा के श्लोक यह हैं अ० १। ६७। अ० २। २८, १६२। अ० ११। ६, ३५, २०६, २०७, २६१। अ० ७। १३३, १४४। अ० १२। ७१। अ० ८। १०२। अ० १०। ७५--७७, ८०--८२, १०१, १०२। अ० २। ३७--६०, ७६--८०, १२१, १५७, १५६--१८०, १८७--२४६। अ० ६। १२, २४। अ० ३। १--१५, ६७, ८१, १३३--१३७, १४२--१६६। अ० ६। ४५, १०१। अ० ४। १४७, १८६--२०० इत्यादि इत्यादि। और वह श्लोक जिनमें अत्युक्ति और ऊपर लिखे हुये श्लोकों से विरोध पाया जाता है और जिनको इसी कारण से प्रक्षिप्त मानना अनुचित नहीं यह हैं अ० ६। ३१३--३१६। अ० ११। ८४, ३१--३३, ४०, २०६, २००। अ० ४। १६५। अ० १। १००। अ० ३। २२१, २३१, २३३। अ० १०। १०१--१०८॥

(५६) अ० ६। १८८ में लिखा है कि जिस धन का कोई स्वामी न हो उसको ब्राह्मण लेवे परन्तु उससे अगले अर्थात् १८९ वें श्लोक में लिखा है कि ब्राह्मण को छोड़ कर शेष सब वर्णों के स्वामी रहित धन को राजा लेवे। अब विचारणीय यह है कि राजा और ब्राह्मण के बीच में इस विषय का किस प्रकार निर्णय होगा॥

(५७) अ० ११। १९३, १९४ में दान लेने की निन्दा और उसका प्रायश्चित लिखा है। और अ० ४। १८६ में भी दान लेने वाले की निन्दा की है

परन्तु अ० १ । १०० में लिखा है कि जो कुछ इस संसार में है वह सब ब्राह्मण का धन है । और अ० ११ । ४० में लिखा है कि जब तक बहुत सी दक्षिणा देने को न हो तब तक यज्ञ न करे ॥

(५८) अ० ८ । १११ में मिथ्या शपथ का सर्वथा निषेध किया है परन्तु अ० ८ । ११२ में कई अवसर ऐसे गिनाये हैं कि जिन पर झूठे शपथ का निषेध नहीं ॥

(५६) अ० ५ । १५६, १६० में लिखा है कि पुत्र के बिना भी स्वर्ग में जा सकता है पुत्र का होना आवश्यक नहीं । परन्तु अ० ६ । १३८ में नरक से पार उतरने के लिये पुत्र का होना आवश्यक बताया है । और अ० ६ । ३६ में लिखा है कि बिना पुत्र सन्यास न लेवे परन्तु यह विदित नहीं होता कि जिस दशा में स्त्री भी वानप्रस्थ में साथ जाती थी तो उस अवस्था में पुरुष के सन्यास लेने पर स्त्री का क्या होता था ॥

(६०) अ० ११ । ६० में पुरुष मैथुन को जाति भ्रंश कर लिखा है । परन्तु अ० ११ । १७४ में पुरुष मैथुन का प्रायश्चित स्नान मात्र लिखा है जो वास्तव में कुछ भी प्रायश्चित नहीं ॥

(६१) प्रसिद्ध मनुस्मृति में कितनाही हस्ताक्षेप हुवा हो परन्तु उस में शिव गणेशादिक की* मूर्ति, मन्दिरों, देवी, देवता, शक्तियों वा सति आदिकों का कहीं चर्चा नहीं है और उसमें ऐसे शब्द अलङ्कार और वचन भी पाये जाते हैं जो वेदों से भिन्न और कहीं नहीं मिलते यथा अ० १ । ८७—१०१, १६१ व अ० ६ । २४५, २०३—२११ में वैदिक देवताओं के नाम आये हैं और निम्नस्थ श्लोकों में वेद का स्पष्ट रीति से चर्चा किया गया है अ० १ । २३ । अ० २ । १०, ८१ । अ० ६ । ८३ । अ० ४ । १२३—१२५ । ६५—६७, १०० । अ० ३ । १४५, १८८ । अ० १२ । ६४, १०३ । अ० ११ । ३३, २६४, २६५, ७७, २००, २५८, २६२ इत्यादि ॥

(६२) प्रोफेसर विलसन साहिब की सम्मति है कि अहिंसा विधायक श्लोक और वह श्लोक जिन में चीन का नाम आता है अनुमान से बुद्ध के

* मनु अ० ३ । १५२ में देवलक शब्द आता है जिसका अर्थ प्रतिमा प्रचारक है परन्तु उसमें उन को त्याग करने की आज्ञा है । अ० ९ । २८५ में प्रतिमाओं के तोड़ने वाले को दंड लिखा है । स्वामी जी ने इससे बट्टों के कम रखने का दंड अर्थ लिया है अ० २ । १७६ में देवार्चन से कुल्लूक ने प्रतिमा आदि में हरिहर आदि की पूजा अर्थ लिया है परन्तु वास्तव में उससे हवन यज्ञ तात्पर्य है ॥

पीछे बढ़ाये गये और धर्म के दश नियम जो मनुस्मृति में लिखे हैं उनका वह आदि सृष्टि से सम्बन्ध बताते हैं चाहे सृष्टि के आदित्व विषय में उनकी कुछ ही मति हो ॥

(६३) अ० १० । ८—५१ में वर्ण संकरों की सूची दी है इस सूची में वैद्य, मत्स्य घातक, कुराचारी, बिलों में रहने वाले जन्तुओं का बध तथा बन्धन करने वाले, वणिक पयसेवी, अश्व शिक्षक, सार्थी, अन्तःपुर कर्मचारी, वार्द्धिक, त्वष्टा, कुत्ते और गधे वाले, चर्म बिक्रेता, ग्रामबाह्य निवासी, गायक, बाजा बजाने वाले, भाण्ड बादिन, घड़ियाली, कैवर्त (खेवट), चर्मकार, असत्य पशु हिंसक, सूप पंखादि बनाने वाले, वेत और नरसल का काम करने वाले, पापजीवी (जल्लाद), बन्दी गृहभृत्य, श्मशान सेवक, इत्यादि गिनाये हैं । परन्तु यह सूचि न तो उस समय की प्रतीत होती है जब कि मनु ने प्रथम धर्म का उपदेश किया और न इस समय की क्योंकि अब वर्ण संकरों की संख्या इससे भी अधिक हो गई है । इससे अतिरिक्त यह भी विचारणीय है कि आजीविका विशेष का संकर विशेष के साथ सम्बन्ध प्रकट करना कहां तक ठीक है ॥ और जो शैली संकरों के अन्तर संकरों की इन श्लोकों में दिखाई है वह कुछ इस प्रकार की है कि उसका कहीं अन्त ही नहीं आसकता और फिर वह विषय धर्म शास्त्र के विषयों से निकल कर केवल इतिहास का विषय रह जाता है और यही कारण है कि इस वर्ण संकर के विषय को प्रथम महाभारत में और फिर उससे भी अधिक पुराणों में बड़े विस्तार के साथ लिखा है । उन के सन्मुख मनु की वर्ण संकर सूचि कुछ भी नहीं है । इससे सिद्ध है कि काल के साथ संकरों की वृद्धि होने से यह विषय कदापि धर्म शास्त्र का विषय नहीं हो सकता । पुराणों में ही उसकी शोभा है ॥ इति शम् ॥

नक्षत्र तथा राशि

राशि वास्तव में क्रान्तिवृत्त के (जिसमें सूर्य भूमि की परिक्रमा करता दिखलाई देता है) १२ कल्पित भाग हैं। इसी प्रकार उसको २७ भागों में विभक्त करके नक्षत्र नाम रक्खा हुआ है। एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं और एक २ नक्षत्र के ४ भाग होते हैं जिन्हें चरण कहते हैं। चन्द्रमा प्रतिदिन एक नक्षत्र चलता है। राशि और नक्षत्रों के नाम यह हैं:—

राशि;—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन ॥

नक्षत्र:—अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ॥

कल्प वा सृष्टि संवत्

शतं तेऽयुतं हायनान्द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।

अथर्व काण्ड ८ अनु० १ मं० २१

अर्थ—इस से पूर्व सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन करते हुए परब्रह्म उपदेश करते हैं कि "सृष्टि की स्थिति का हिसाब समझने के लिये इस प्रकार जानो कि वे वर्ष दशहज़ार सैकड़ा अर्थात् दश लाख तक शून्य देने के पश्चात् २, ३, ४, क्रम से लगाने से प्राप्त होते हैं, ४३२०००००० ॥

इस से स्पष्ट सिद्ध है कि सृष्टि (दुनिया) चार अर्ब बत्तीस क्रोड़ वर्ष तक विद्यमान रहेगी। इसी को कल्प वा ब्राह्मदिन भी कहते हैं। एक कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं और एक मन्वन्तर ७१ चतुर्युगी (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) का होता है, और प्रतिकल्प के आदि और प्रति मन्वन्तर के अन्त में १७२८००० वर्ष की एक संधि होती है, और प्रत्येक युग की आदि में संध्या और अन्त में संध्यांश होता है जिसका सविस्तर गणित नीचे लिखा जाता है। जितना समय एक कल्प वा ब्राह्मदिन का होता है उतना ही एक ब्रह्मरात्रि का होता है, जिस के अन्त पर पुनः सृष्टि रची जाती है। इस कल्प के समय को सृष्टि के आदि से प्रचलित होने से "सृष्टि संवत्" और वेदों का ज्ञान भी चारों ऋषियों को आदि सृष्टि में होने के कारण "वैदिक संवत्" और आर्य्य धर्म्म के वेदोत्पत्ति समय अथवा आदि सृष्टि से प्रचलित होने से "आर्य्य संवत्" कहते हैं ॥

भुक्त काल

कल्पादि सन्धी	....	....	....	....	....	१७२८०००

१ स्वायम्भुवमनुमत् =सन्ध्या १४४००० + मूल १४४०००० + सन्ध्यांश १४४००० =एकचमान १७२८०००

त्रेता =सन्ध्या १०८००० + मूल १०८०००० + सन्ध्यांश १०८००० =एकचमान १२९६०००

द्वापर =सन्ध्या ७२००० + मूल ७२०००० + सन्ध्यांश ७२००० =एकचमान ८६४०००

काल =सन्ध्या ३६००० + मूल ३६०००० + सन्ध्यांश ३६००० =एकचमान ४३२०००

.... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८००० = ३०८४४८०००

२ स्वारोचिष .... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८००० = ३०८४४८०००

३ औत्तम .... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८००० = ३०८४४८०००

४ तामस .... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८००० = ३०८४४८०००

५ रैवत .... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८००० = ३०८४४८०००

६ चाक्षुष .... एक चतुर्युगी ४३२००००× ७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८००० = ३०८४४८०००

७ वैवस्वत कोर२७वी चतुर्युगी ४३२००००× २७ = ११६६४०००० .... = ११६६४००००

इसको ....२८वी त्रियुगीके १७२८००० + १२९६००० + ८६४००० .... = ३८८८०००

इसके ....२८वां कलिशालिवाहनशक १८२५ विक्रमी १९६० ईसवी १९०३ = ५००५

} १२०५३३००५

१९७२९४९००५

भोग्य काल

१ वैवस्वत	....के २८वेंभविष्य कलि ४२६६३५		
इसकी	....४३ चतुर्युगी ४३२००००×४३ = १८५७६००००		१८०६१४६६५
इसकी	....अन्त सन्धी १७२८०००		
८ सावर्णि	= एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८०००
९ दक्ष सावर्णि	....एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८०००
१० ब्रह्म सावर्णि	....एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८०००
११ धर्म्म सावर्णि	....एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८०००
१२ रुद्र सावर्णि	....एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८०००
१३ रौच्य	....एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८०००
१४ भौत्य	....एक चतुर्युगी ४३२००००×७१ = ३०६७२०००० + सन्धी १७२८०००	=	३०८४४८००० = २३४७०५०६६५
ब्राह्म दिन अर्थात् कल्प			४३२००००००
ब्राह्म रात्री अर्थात् प्रलय काल			४३२००००००
एक ब्राह्म अहोरात्र			८६४००००००
महाकल्प = १ अहोरात्र×३०×१२×१०० = ...			३११०४००००००००००

भूगोलस्यानेकखण्डेषु प्रचलितानां संवत्सराणां सूची

वर्त्तमानसंवत्संख्यासहिता ॥

संख्या	नाम संवत्	कब से प्रचलित है	वर्ष संख्या	संख्या	नाम संवत्	कब से प्रचलित है	वर्ष संख्या
१	सृष्टि	आदि सृष्टि से	१९७२९४९००५	१६	इब्राहीमी	इब्राहीम से	३८२४
२	वैदिक	,,	,,	१७	स्पार्टा	स्पार्टा नगर के समयसे	३६०७
३	आर्य्य	,,	,,	१८	मूसवी	मूसा के समय से	२४७६
४	चीनी	चीन देशके प्रथम नृपति से	९६००२४०३	१९	दाऊदी	दाऊद के समय से	२९३८
५	खताई	खताके आदि पूर्व बसाने वाले से	८८८४०२७६	२०	यूनानी	ओपमिया के अखाडे से	२६७९
६	पार्सी	ईरान के प्रथम नपति से	१८९८७३	२१	रूमी	रूमनगर के समय से	२६५६
७	कालिडया	पूर्वज के नाम से	१५१९०३	२२	नाबोसारी	बाबल के प्रथम नृपति से	२६५०
८	मिस्री	मीनस नृपति से	२७५५७	२३	बौध	बुध के ५० वें वर्ष से	२४७७
९	कुस्तुन्तुन्या	०	७५१२	२४	सिकन्दरी	सिकन्दर के समयसे	२२५९
१०	अन्ताकिया	०	७३९६	२५	बिक्रमी	महाराजा विक्रम के अभिषेक से	१९६०
११	ईसाई सृष्टि	०	५९०८	२६	ईसवी	ईसा की उत्पत्ति से ४ वर्ष पश्चात्	१९०४
१२	इब्रानी	आदम हव्वा की उत्पत्ति से	५९०८	२७	शालिवाहन	राजा शालिवाहन से	१८२६
१३	कलियुगी	कलि के आदि से	५००५	२८	मुहम्मदी	मुहम्मद के मक्केसे मदीने जाते समय	१३२१
१४	युधिष्ठिरी	महाराजा युधिष्ठिर से	४३५२	२९	नानकशाही	गुरु नानकके समय से	४६४
१५	नूह	नूह के समय से	५००५	३०	दयानन्दी	महर्षि दयानंद सरस्वती स्वर्गवाससे	२१

३१ दिन	जनवरी १९०४ ई०	शव्वाल १३२१ हि०	पौष माघ १३११ फ०	पौष माघ १९६० आर्य १९७२९४९००५ संक्रांति प्रवि०	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदय अस्त तथा तेवहारादि
श	१	१२	२८	१८	१३	१७	१५	रो	१८	८	मिथुन	४६	५४	२५	५८	अंग्रेजी वर्षारम्भ दिन
श	२	१३	२९	१९	१४	१३	७	मृ	१५	४०	मिथुन			२६	०	
र	३	१४	३०	२०	पू	८	१७	आ	१२	२४	कर्क	५४	३५		१	
चं	४	१५	१	२१	मा १ / ब २	२ / ५७	५६ / १४	पु	८	३९	कर्क				३	अस्तं बुध पश्चिमे ९।४
मं	५	१६	२	२२	३	५१	११	पु	४	३५	कर्क				५	
बु	६	१७	३	२३	४	४५	२२	श्ले० म.	० / ५६	३५ / ३३	सिंह	०	२५		६	शकट
बृ	७	१८	४	२४	५	३९	५०	पू	५२	३९	सिंह				७	
शु	८	१९	५	२५	६	३४	४३	उ	४९	२४	कन्या	६	५०		८	
श	९	२०	६	२६	७	३०	१३	ह	४६	५१	कन्या				९	
र	१०	२१	७	२७	८	२६	३२	चि	४५	९	तुला	१६	०		१०	
चं	११	२२	८	२८	९	२३	५०	स्वा	४४	३१	तुला				१२	अस्तं शनि ३५।२४
मं	१२	२३	९	२९	१०	२२	१७	वि	४५		वृश्चिक	२९	५३		१३	लोहड़ी
बु	१३	२४	१०	माघ	११	२१	५८	अ	४६	३६	वृश्चिक				१४	संक्रांति मकर ५५।४
बृ	१४	२५	११	२	१२	२२	५७	ज्ये	४९	३३	धन	४९	३३		१६	
शु	१५	२६	१२	३	१३	२५	१४	मू	५३	४६	धन				१७	
श	१६	२७	१३	४	१४	२८	४०	पू	५८	५९	धन				१८	
र	१७	२८	१४	५	अ०	३३	६	उ	६०	०	मकर	१५	३०		२०	
चं	१८	२९	१५	६	१सु	३८	८	उ	५	२	मकर				२१	
मं	१९	३०	१६	७	२	४३	२८	श्र	११	२८	कुम्भ	४४	११		२२	चन्द्र दर्शन
बु	२०	जि	१७	८	३	४८	४१	ध	१७	५४	कुम्भ				२४	
बृ	२१	२	१८	९	४	५३	२२	श	२३	५९	कुम्भ				२७	
शु	२२	३	१९	१०	५	५७	११	पू	२९	२६	मीन	१३	७		३०	उदयं बुध प्राक् ५।१६ वसंतपं०
श	२३	४	२०	११	६	५९	५७	उ	३३	४८	मीन				३३	
र	२४	५	२१	१२	७	६०	०	रे	३७	२	मेष	३७	२		३६	
चं	२५	६	२२	१३	७	१	२४	अ	३९	४	मेष				४०	
मं	२६	७	२३	१४	८	१	३६	भ	३९	४९	वृषभ	४	४३		४३	
बु	२७	८	२४	१५	९ / १०	० / ५८	३१ / १५	कृ	३९	२५	वृषभ				४६	
बृ	२८	९	२५	१६	११	५४	५६	रो	३७	५४	वृषभ				४९	
शु	२९	१०	२६	१७	१२	५०	४४	मृ	३५	३२	मिथुन	६	४३		५३	
श	३०	११	२७	१८	१३	४५	४७	आ	३२	२६	मिथुन				५६	
र	३१	१२	२८	१९	१४	४०	२३	पु	२८	४७	कर्क	१४	१०		५९	

जनवरी १९०४

आह्निक वृत्तान्त

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१

ज्योतिष तत्ववेत्ता परम विद्वान् महामहोपाध्याय पण्डित बापुदेव शास्त्रीजी स्वर्गवासी सी० आई० ई० मेम्बर आफ़ रायल एशियाटिक सोसाइटी ग्रेट ब्रिटन ऐण्ड आयरलैण्ड व एशियाटिक सोसाईटी आफ़ बंगाल तथा फैलो आफ कलिकत्ता व इलाहाबाद यूनीवर्सिटी का संक्षिप्त जीवनचरित्र—

मुख बन्धन ।

पाठक वृन्द ! एक अग्र गण्य ज्योतिविद महाशय का जीवन वृत्तान्त जो इस लेख का विषय है आप के सन्मुख प्रस्तुत करने से पूर्व इस विद्या के विषय में कतिपय आवश्यक विचारों का संक्षेप से वर्णन करना उचित प्रतीत होता है ॥

प्रकट होकि ज्योतिष विद्या जिसके प्रथमाविषकार होने का महत्व अन्य प्राचीन सत्य विद्याओं के सदृश आर्य्यवर्त्तही को प्राप्त है काल के परिवर्त्तन से इस समय प्रायः दो भागों में विभक्त पाई जाती है। जिसको सर्वसाधारण अपने व्यवहार में गणित और फलित के नाम से प्रसिद्ध करते हैं। ग्रहादि का ज्ञान, सूर्य्य पृथिवी तथा अन्य गगन चारियों के भ्रमण तथा भगण संस्थानादि का यथार्थ विज्ञान

२९ दिन	फरवरी १९०४ ई०	जिल्काद १३२१ हि०	फाल्गुन १३११ फ़०	फाल्गुन सं० १९६० आर्य १९७२९४९००५ सं० प्रविष्ठा	बदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
चं	१	१३	२९	२०	पू०	३४	४०	पु	३४	४८	कर्क			२७	२	
मं	२	१४	फा.	२१	फा बु	२८	४८	अश्ले	२०	३८	सिं	२०	३८		५	
बु	३	१५	२	२२	२	२२	५९	म	१६	३६	सिंह				९	
बृ	४	१६	३	२३	३	१७	४२	पू	१२	४७	कं	२६	५७		१२	
शु	५	१७	४	२४	४	१२	३७	उ	९	२५	कन्या				१५	
श	६	१८	५	२५	५	८	१०	ह	६	४२	त	३५	४६		१८	
र	७	१९	६	२६	६	४	३४	चि	४	४९	तुला				२१	
चं	८	२०	७	२७	७ ८	४ ५९	५६ ५६	स्वा	३	५५	वृ	४९	५		२४	
मं	९	२१	८	२८	९	६०	०	वि	४	९	वृश्चिक				२८	
बु	१०	२२	९	२९	९	०	१५	अ	५	३२	वृश्चिक				३१	
बृ	११	२३	१०	३०	१०	१	१९	ज्ये	८	१७	ध	८	१७		३४	
शु	१२	२४	११	फा.	११	३	४१	मू	१२	१५	धन				३७	सं० कुम्भ २१।५१
श	१३	२५	१२	२	१२	७	१२	पू	१७	१५	म	२२	४२		४०	उदय शनि १२।१२
र	१४	२६	१३	३	१३	११	३९	उ	२३	७	मकर				४४	शिवरात्री
चं	१५	२७	१४	४	१४	१६	४२	श्र	२९	४८	मकर				४७	
मं	१६	२८	१५	५	अ०	२२	२	ध	३५	५२	कु	२	४४		५०	
बु	१७	२९	१६	६	सु	२७	११	श	४२	१३	कुम्भ				५३	
बृ	१८	३०	१७	७	२	३१	५०	पू	५७	४९	मी	३१	२५		५७	चन्द्र दर्शन
श	१९	जि	१८	८	३	३५	३२	उ	५२	३०	मीन			२८	०	पं० लेखराम परलोक गमन
श	२०	२	१९	९	४	३८	१०	रे	५६	२	मे	५६	२		४	
र	२१	३	२०	१०	५	३९	३३	अ	५८	२०	मेष				८	
चं	२२	४	२१	११	६	३९	३६	भ	५९	२५	मेष				१२	
मं	२३	५	२२	१२	७	३८	२४	कृ	५९	१५	वृ	१४	२२		१६	
बु	२४	६	२३	१३	८	३६	३	रो	५८	२	वृषभ				२०	
बृ	२५	७	२४	१४	९	३२	३७	मृ	५५	५०	मि	२६	५६		२४	
शु	२६	८	२५	१५	१०	२८	२१	आ	५२	५४	मिथन				२८	
श	२७	९	२६	१६	११	२३	३४	पु	४९	२३	कर्क	३५	२५		३२	आमला (खट्टा) एकादशी
र	२८	१०	२७	१७	१२	१७	५७	पु	४५	२८	कर्क				३६	बडीईद
चं	२९	११	२८	१८	१३	१२	१२	ऽश्ले	४१	२२	सिं	४२	२२		४०	

फरवरी १९०४	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	

प्रथम अर्थात् गणित भाग के अन्तर्गत है और द्वितीय भाग वह है जिस को अन्यभाषाओं में "नजूम" वा "अस्ट्रालोजी" कहते हैं उससे किसी पुरुष के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति से उस उस के जीवन का आगामि वृत्तान्त विषयक शुभाशुभ फल कहा जाता है।

गणित ज्योतिष का आधार अङ्क विद्या पर है जो जगत में सब प्रकार की जातीय सामयिक देशीय साम्प्रदायिक विशेषता को त्याग कर एकमात्र सर्वतन्त्र सिद्धान्त है। यथा जब गणित से हम यह मानते हैं कि २ और २ मिलके ४ होते हैं तो किसी देश काल मत वा सम्प्रदाय विशेष के गणक ने कदापि सम्भव नहीं है कि २ और २ का संकलन फल ३ वा ४ माना हो संकलन विधि में चाहे प्रकारान्तर हो परन्तु सिद्धान्त में भेद नहीं हो सकता। इस विद्या में यह एक ऐसी विशेषता है जो अन्य विद्याओं तथा दर्शनों में प्रायः अनुपलब्ध है॥

अतएव गणित विद्या की उपपत्ति के निमित्त उसके ऐसे सुदृढ़ सत्य और सरल नियम के आधार होने के कारण हमें किसी हेतु वा युक्ति ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं। वास्तव में हमें यह कहना चाहिये कि हम किसी रीति से उसके साथ विरोध नहीं कर सकते। यथा जब क्षेत्रमिति (ज्योमेट्री) ही में

३१ दिन	मार्च १९०४ ई०	जिलहिज्ज १३२१ हि०	चैत्र १३११ फ०	चैत्र १९६१ वि० आय ११७२९४९००५ संक्रांति प्रवि०	बदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नक्षत्र	घड़ी	पल	चंद्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
मं	१	१२	२९	१९	१४	६	१९	म	२७	१८	सिं			२८	४४	होली
ब	२	१३	३०	२०	पूर्ण	५५	३६	पू	३३	२५	कं	४७	३३		४८	
बृ	३	१४	चैत्र	२१	२	४९	५७	उ	२९	५७	कन्या				५२	
शु	४	१५	२	२२	३	४५	३९	ह	२७	५	तु	५६	३		५६	अस्तं बुध प्राक् ८।५८
श	५	१६	३	२३	४	४२	२	चि	२५	१	तुला			२९	०	
र	६	१७	४	२४	५	३९	२७	स्वा	२३	५३	तुला				४	
चं	७	१८	५	२५	६	३८	१	वि	२३	५३	वृ	८	५३		८	
मं	८	१९	६	२६	७	३७	५२	अ	२५	१९	वृश्चिक				१२	
बु	९	२०	७	२७	८	३८	५४	ज्ये	२७	३८	ध	२७	३८		१६	
बृ	१०	२१	८	२८	९	४१	२०	म	३१	२१	धन				२०	
शु	११	२२	९	२९	१०	४८	४९	पू	३६	९	म	५२	३४		२४	
श	१२	२३	१०	३०	११	४९	१६	उ	४१	५१	मकर				२८	अस्तं गुरु ५२।८
र	१३	२४	११	चैत्र	१२	५४	१७	श्र	४८	१०	मकर				३२	सं० मीन १०।४२।।अस्तं मंगल २९।४७
चं	१४	२५	१२	२	१३	५९	३१	ध	५४	४०	कु	२१	२५		३६	
मं	१५	२६	१३	३	१४	६०	०	श	६०	०	कुम्भ				४०	
बु	१६	२७	१४	४	१४	४	३८	श	२	१	मी	५०	२२		४४	पं० गरुदत्त परलोकगमन
बृ	१७	२८	१५	५	अ०	९	९	पू	६	४८	मीन				४८	सूर्य्य ग्रहण
शु	१८	२९	१६	६	शु०	१२	४८	उ	११	४५	मीन				४८	चंद्र दर्शन। संवतसर प्रा०
श	१९	मु०	१७	७	२	१५	१९	रे	१५	३४	मे	१५	३४		५२	
र	२०	२	१८	८	३	१६	३४	अ	१८	११	मेष				५६	गण गौर तीज
चं	२१	३	१९	९	४	१६	३४	भ	१९	३२	वृ	३४	३५	३०	०	
मं	२२	४	२०	१०	५	१५	१२	कृ	१९	४०	वृषभ			३०	४	
बु	२३	५	२१	११	६	१२	४३	रो	१८	४१	मि	४७	४५		८	
बृ	२४	६	२२	१२	७	९	१२	मृ	१७	४९	मिथुन				१२	
शु	२५	७	२३	१३	९	५४	५३	आ	१३	५६	क	५६	२३		१६	दुर्गाऽष्टमी रामनवमी
श	२६	८	२४	१४	१०	५४	२४	पु	१०	३३	कर्क				२०	
र	२७	९	२५	१५	११	४८	३०	पु	६	४४	कर्क				२४	मर्हर्म
चं	२८	१०	२६	१६	१२	४२	३४	श्ले० म.	५८	३९	सिंह	२	३९		२८	अस्तं बुध २३।४९
मं	२९	११	२७	१७	१३	३६	३४	पू	५४	३५	सिंह				३२	
बु	३०	१२	२८	१८	१४	३९	१२	उ	५१	२	कं	८	४२		३६	
बृ	३१	१३	२९	१९	पू०	२६	८	ह	४८	२	कन्या				४०	

मास	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

हम इस वार्त्ता का उपपन्न देखते हैं कि यह रेखा उस रेखा से बड़ी वा छोटी है तो यद्यपि किसी मापक यन्त्र के अभाव होने पर भी उसकी युक्तियोंसे ही उपपन्न फल को सत्य स्वीकार करना पड़ता है जिसको अन्यथा सिद्ध करना सर्वथा असम्भव है। गणित ज्योतिष में इस प्रकार की उपपत्ति से अतिरिक्त सुप्रसिद्ध फलों (यथा ग्रहण, चन्द्रादि का उदय और अस्त इत्यादि) की सिद्धि प्रत्यक्ष दर्शनादि से भी हो सकती है।

अब रहा फलित ज्योतिष। उस के मानने वाले यह कहते हैं कि उसका आधार अनेक वर्षों के अनुभव पर है अर्थात् किसी वर्ष विशेष में ग्रहों की स्थिति विशेष से अनावृष्टि, जन पदोध्वंस अथवा सुकालादि फल किसीप्रान्त विशेष में हुए थे तो उससे यह अनुमान कर लिया जाता है कि यह उन ग्रहों का फल है। परन्तु जब उन से यह पूछा जावे कि ग्रहों के (जो जड़ पदार्थ हैं) किसी स्थान विशेष में होने से हमारी पृथिवी तथा उस के ऊपर रहने वालों को इस प्रकार का इष्टानिष्ट संयोग कैसे होता है यह बात किसी विद्या युक्ति से समझाओ तो कुछ उत्तर नहीं मिलता। फलित ज्योतिष के मानने वालों में दो पक्ष हैं जिनमें से एक का मत यह है कि किसी ग्रह का अवश्यम्भावी फल किसी प्रकार से नहीं टल सकता परन्तु दूसरा दल

३० दिन	अप्रैल १९०४ ई०	मुहर्रम १३२२ हि०	बैशाख १३११ फ़०	बैशाख १९६१ वि० आर्य१९७२९४९००६ संक्रांति अं०	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहार दि
गु	१	१४	१	२०	अ०	२१	४४	चि	४५	४८	तुला	१६	५५	३०	४४	गड फ्राइडे
श	२	१५	२	२१	२	१८	११	स्वा	४४	२९	तुला				४८	ईस्टर
र	३	१६	३	२२	३	१५	२१	वि	४४	१६	वृश्चिक	२९	१९		५२	,,
चं	४	१७	४	२३	४	१३	५५	अ	४५	२०	वृश्चिक				५६	,,
मं	५	१८	५	२४	५	१३	४१	ज्ये	४७	२६	धन	४७	५६	३१	०	
बु	६	१९	६	२५	६	१४	४१	मू	५०	५३	धन			३१	४	
बृ	७	२०	७	२६	७	१७	१	पू	५५	२९	धन				८	उदयं बुध पश्चिमे
शु	८	२१	८	२७	८	२२	३०	उ	६०	०	मकर	११	५२		१२	
श	९	२२	९	२८	९	२६	५१	उ	१	२	मकर				१६	
र	१०	२३	१०	२९	१०	३१	५२	श्र	७	१४	कुम्भ	४०	२६		२०	
चं	११	२४	११	३०	११	३७	०	ध	१३	३७	कुम्भ				२४	उदयं गुरु ३७।३८
मं	१२	२५	१२	वै१	१२	४२	१०	श	२०	२	कुम्भ				२८	सं०मेष२१।८आद्यतथासौर
बु	१३	२६	१३	२	१३	४६	२५	पू	२५	५९	मीन	९	३०		३२	वर्ष प्रारम्भ वैशाखी स्नान
बृ	१४	२७	१४	३	१४	४७	२३	उ	३१	७	मीन				३६	
शु	१५	२८	१५	४	अ०	४९	४३	रे	३५	१८	मेष	३५	१८		४०	
श	१६	२९	१६	५	सु१	५०	४९	अ	३८	१२	मेष				४४	
र	१७	३०	१७	६	२	५०	३७	भ	३९	५१	वृषभ	५४	५६		४८	चन्द्र दर्शन
चं	१८	१स	१८	७	३	४९	१०	कृ	४०	१३	वृषभ				५२	अक्षय तीज
मं	१९	२	१९	८	४	४६	३३	रो	३९	३१	वृषभ				५६	
बु	२०	३	२०	९	५	४२	५४	मृ	३७	४५	मिथुन	८	३८	३२	०	
बृ	२१	४	२१	१०	६	३९	२५	आ	३५	१०	मिथुन				४	
शु	२२	५	२२	११	७	३३	१५	पु	३१	५३	कर्क	१७	४२		८	
श	२३	६	२३	१२	८	२७	३७	पु	२८	९	कर्क				१२	
र	२४	७	२४	१३	९	२१	४०	श्ले	२४	८	सिंह	२४	८		१५	
चं	२५	८	२५	१४	१०	१५	३६	म	१९	५७	सिंह				१८	
मं	२६	९	२६	१५	११	९	३८	पू	१५	५९	कन्या	३०	०		२१	
बु	२७	१०	२७	१६	१२ १३	३ ५८	५६ ४६	उ	१२	२०	कन्या				२४	
बृ	२८	११	२८	१७	१४	५४	१४	ह	९	१२	तुला	४०	३५		२७	नृसिंह चौदश
शु	२९	१२	२९	१८	पू०	५०	३३	चि	६	४६	तुला				३०	
श	३०	१३	ज्ये	१९	ज्ये	४७	५१	स्वा	५	१३	वृश्चिक	४९	५१		३३	प्रथम ज्येष्ट

अप्रैल १९०४ ई०	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	

इस से विशेष यह मानता है कि यद्यपि पूर्णतया उसकी शान्ति न होसके तथापि कुछ पूजा भेंटादि के देने से उसका बल क्षीण अवश्य हो जाता है शोक का स्थान है कि इस मत के कारण ऋषि सन्तान का एक बड़ा भारी दल इस समय मिथ्या विश्वास रूप ग्रह के मुख में ग्रसित हो रहा है।

पाठक गण यह हमारे लेख का विषय नहीं है इस कारण हम विस्तार भय से इस विषय को कालान्तर के विचारार्थ यहीं छोड़ते हैं नहीं तो हम इस पर भली प्रकार विचार करते। अब हम कुछ थोड़ासा गणित विद्या के विषय में लिख कर मुख बन्धन को समाप्त करते हैं॥

ऊपर के लेख से ज्ञात होगा कि सत्य ज्योतिष विद्या हम उसको मानते हैं जिसकी विशेष स्थिति के लिये हमें गणित का विशेषण लगाना पड़ा अर्थात् यदि कुछ काल से फलित ज्योतिष की प्रसिद्धि न होती तो हमें उस के लक्षण करने में इतना लेख न करना पड़ता। अतएव हमारे इस लेख में जहां २ ज्योतिष का शब्द आवे उस से केवल गणित ज्योतिष (अस्ट्रानोमी) समझना चाहिये॥

हम ऊपर कह चुके हैं कि ज्योतिष सर्वथा गणिताश्रित है यही कारण है कि आर्य्यावर्त्त के पुरातन ऋषियों ने इस विद्या को वेद के छः अङ्गों के अन्तर्गत माना है और इसी कारण इस विचित्र

३१ दिन	मई १९०४ ई०	सफर १३२२ हि०	प्र० ज्येष्ठ १३११ फ०	प्र० ज्येष्ठ १९६१ वि० आर्य १९७२९४९००६ संक्रान्तिप्रवि०	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदय अस्त तथा तेवहारादि
र	१	१४	२	२०	२	४६	२०	वि	४	४४	वृश्चिक			३२	३६	
चं	२	१५	३	२१	३	४६	४	अ	५	२३	वृश्चिक				३९	
मं	३	१६	४	२२	४	४३	५८	ज्ये	७	१७	धन	७	१७		४२	
बु	४	१७	५	२३	५	४३	१४	मू	१०	२७	धन				४५	
बृ	५	१८	६	२४	६	५२	४५	पू	१४	४६	मकर	३१	६		४८	
शु	६	१९	७	२५	७	५७	४	उ	२०	५	मकर				५१	
श	७	२०	८	२६	८	६०	०	श्र	२६	९	कुम्भ	५९	२४		५४	
र	८	२१	९	२७	८	१	४७	ध	३२	३८	कुम्भ				५७	
चं	९	२२	१	२८	९	६	५२	श	३९	५	कुम्भ			३३	०	
मं	१०	२३	११	२९	१०	११	४९	पू	४५	८	मीन	२९	३७		४	
बु	११	२४	१२	३०	११	१३	१३	उ	५०	३१	मीन				७	आखरी चहारशम्बा भद्र
बृ	१२	२५	१३	३१	१२	१९	४३	रे	५४	५१	मेष	५४	५१		१०	काली ११
शु	१३	२६	१४	ज्येष्ठ १	१३	२२	६	अ	५७	५१	मेष				१४	स० वृषभ २९।२
श	१४	२७	१५	२	१४	२३	७	भ	५९	५३	मेष				१८	
र	१५	२८	१६	३	अ०	२२	५३	कृ	६०	०	वृषभ	१५	६		२१	वट पूजनम् (वड़सांयत)
चं	१६	२९	१७	४	सु १	२१	२५	कृ	०	३७	वृषभ				२४	चं०दर्शनउदयंबुधप्राक२४।८
मं	१७	र.१	१८	५	२	१८	४६	रो. मृ	०/५८	६/३३	मिथुन	२५	१९		२७	अगस्त्यास्त २२।३३
बु	१८	२	१९	६	३	१५	५	आ	५६	७	मिथुन				२९	
बृ	१९	३	२०	७	४	१०	३३	पु	५२	५९	कर्क	१९	४६		३२	
शु	२०	४	२१	८	६	५/२२	५/४०	पु	४९	२०	कर्क				३४	
श	२१	५	२२	९	७	५३	४२	श्ले	४५	२०	सिंह	४५	२०		३६	
र	२२	६	२३	१०	८	४७	३३	म	४१	१०	सिंह				३८	
चं	२३	७	२४	११	९	४१	३०	पू	३७	१०	कन्या	५१	१४		४०	
मं	२४	८	२५	१२	१०	३५	४३	उ	३३	२४	कन्या				४१	श्री विक्टोरिया जन्म दिन
बु	२५	९	२६	१३	११	३०	२४	ह	२९	५७	तुला	५८	१३		४४	
बृ	२६	१०	२७	१४	१२	२५	४४	चि	२७	२९	तुला				४४	
शु	२७	११	२८	१५	१३	२१	५३	स्वा	२५	४०	तुला				४५	
श	२८	१२	२९	१६	१४	१९	५	वि	२४	५३	वृश्चिक	१०	५		४६	
र	२९	१३	३०	१७	पू	१७	५१	अ	२५	१०	वृश्चिक				४७	
चं	३०	१४	२ज्ये	१८	२ज्ये	१३	५४	ज्ये	२६	४९	धन	२६	४९		४८	अस्तं सितप्राक् २२।१२
मं	३१	१५	२	१९	२	१७	४२	मू	२९	३९	धन				४९	मलमास प्रारम्भ

	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

विद्या को हमारे देश से वही सम्बन्ध है जो केशर को काश्मीर से दर्पण को हलब देश से तथा कस्तूरी को तातार आदि से है।

आर्य्य यन्त्री का आधार भी गणित ज्योतिष है इस कारण हम उस के द्वारा अपने देश के ज्योतिष तत्त्व वेत्ताओं के जीवन वृत्त समय २ पर देना चाहते हैं। प्राचीन ऋषियों के इतिवृत्त कालान्तर के लिये छोड़ कर हम इस समय अर्थात् गत शताब्द के एक अग्रगण्य ज्योतिषी का जीवन चरित्र संक्षेपतः देते हैं जिनका सुप्रसिद्ध नाम इस लेख के शीर्षक में दिया हुआ है यदि इस लेख को पाठक गण मान्य देंगे तो हम आगे जीवन इतिवृत्तों के प्रबन्ध का बड़े समारोह के साथ आरम्भ करेंगे॥

प्रथम प्रदेश

पण्डित बापुदेव शास्त्री का

जीवनचरित्र*

जो पुरुष आर्य्यावर्त के देश बिभाग तथा इतिवृत्त से परिचित हैं उन को

* शास्त्रीजी का जीवन इतिवृत्त संस्कृत भाषा तथा अंग्रेजी के अनेक पुस्तकों में है परन्तु शोक है कि इस वर्ष हम अनेक त्रुटियों तथा अवकाशाभाव के कारण उन सब से संग्रह नहीं कर सके जो कुछ यहां लिखा गया है यह उन के सुयोग्य शिष्य पं० दुर्गाप्रसाद जी द्विवेदी के संस्कृत पुस्तक "देव चरितम्" से लिया है। यह पं० जी इस समय महाराज जयपुराधीश के संस्कृत पाठशाला में ज्योतिष के मुख्याध्यापक हैं॥

३० दिन	जून १९०४ ई०	बीउलअ. १३२२ हि०	आ. श्रा. १३११ फ०	२ ज्ये. आ. स० १९६१. आर्य १९७२९४९००६ सं० प्रविष्ठा	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
बु	१	१६	३	२०	३	१९	४९	पू	३३	४३	म	५०	०	३३	५०	
बृ	२	१७	४	२१	४	२३	३	उ	३८	४९	मकर				५२	
शु	३	१८	५	२२	५	२७	१४	श्र	४४	४३	मकर				५३	
श	४	१९	६	२३	६	३२	२	ध	५१	६	कु	१७	५५		५४	
र	५	२०	७	२४	७	३७	१	श	५७	३५	कुम्भ				५६	
चं	६	२१	८	२५	८	४१	५०	पू	६०	०	मी	४७	१४		५८	
मं	७	२२	९	२६	९	४६	१२	पू	३	४६	मीन				५९	
बु	८	२३	१०	२७	१०	४९	३८	उ	९	१८	मीन			३४	०	
बृ	९	२४	११	२८	११	५१	३४	रे	१३	५३	मे	१३	५३		१	
शु	१०	२५	१२	२९	१२	५३	१०	अ	१७	१९	मेष				२	
श	११	२६	१३	३०	१३	५३	१	भ	१९	३१	वृ	२४	४५		३	
र	१२	२७	१४	३१	१४	५१	२६	कृ	२०	२८	वृषभ				४	
चं	१३	२८	१५	आ.	अ०	४८	५०	रो	२०	१२	मि	४९	३२		५	संक्रान्ति मिथुन ५४।२४
मं	१४	२९	१६	२	सु	४५	१०	मृ	१८	५३	मिथन				६	सोमवती अमावस
बु	१५	३०	१७	३	२	४०	३१	आ	१६	३८	क	५९	२१		७	चन्द्र दर्शन
बृ	१६	र.	१८	४	३	३५	२४	पु	१३	३६	कर्क				९	
शु	१७	२	१९	५	४	२९	४०	पु	२०	२	कर्क				११	
श	१८	३	२०	६	५	२३	४२	अ	६	५	सिं	६	६५		१३	
र	१९	४	२१	७	६	१७	३०	म. पू	५ ५७	० २१	सिंह				१५	
चं	२०	५	२२	८	७	११	२३	उ	५४	०	कं	११	५४		१६	
मं	२१	६	२३	९	८ ९	६ ५९	३२ २५	ह	५०	३२	कन्या				१५	दक्षिणायन सूर्य्यं
बु	२२	७	२४	१०	१०	५५	२५	चि	४७	४५	तु	१९	८		१३	गंगा स्न न दशहरा
बृ	२३	८	२५	११	११	५०	४२	स्वा	४५	४२	तुला				१२	निर्जला एकादशी, अस्तं
शु	२४	९	२६	१२	१२	४८	२९	वि	४४	४३	वृ	२९	५७		११	बुध प्राक् १।१७
श	२५	१०	२७	१३	१३	४६	३८	अ	४४	४५	वृश्चिक				९	
र	२६	११	२८	१४	१४	४६	१	ज्ये	४६	८	ध	४६	८		८	
चं	२७	१२	२९	१५	पू०	४६	४०	मू	४८	३१	धन				६	
मं	२८	१३	आ.	१६	आ ब	४८	३३	पू	५२	१७	धन				५	
बु	२९	१४	२	१७	२	५१	४३	उ	५७	९	म	८	३०		४	
बृ	३०	१५	३	१८	३	५५	४७	अ	६०	०	मकर				२	

	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	

भली प्रकार ज्ञात होगा कि इस देश का दक्षिण भाग संस्कृत के विद्वानों का आकर है। स्वामी शङ्कराचार्य्य जैसे विद्वान की जन्म भूमि होने का महत्व इसी प्रान्त को प्राप्त है और कुमारिल भट्ट जैसे उदार देशोद्धारक के पूर्वज भी इसी देश के थे॥

यह तात्पर्य नहीं है कि आर्य्यावर्त के अन्य भागों में विद्वानही नहीं हुए अथवा इस समय नहीं होते परन्तु इस प्रान्त की विशेषता इस विषय में मानने योग्य है

प्राचीन काल को छोड़ कर अब भी वेदों का जैसे शुद्धता तथा लालित्य से इस देश के पण्डित स्वर सहित उच्चारण करते हैं वैसा अन्य देश में दुर्लभ है। यहां अब तक ऐसे कुल हैं जिनमें परम्परा से वेद कण्ठाग्र चले आते हैं और गणित को (जो ज्योतिष का प्राण है) दक्षिण से सम्बन्ध विशेष है। मद्रास यूनीवर्सिटी की गणित शिक्षा अन्य सब यूनीवर्सिटियों से प्रधान है और राजकीय वेधालय भी वहीं बनाया गया है। प्रांजपय महाशय भी जिन्हों ने इङ्गलेण्ड में जाकर यूनीवर्सिटी की गणित विद्या की सब से बड़ी उपाधि अर्थात् सीनियर रेङ्गलर (गणक शिरोमणि) की पदवी पाई है जो अब तक किसी एतद्देशीय मनुष्य को नहीं मिली थी दाक्षिणात्य ब्राह्मण हैं॥

इसी देश में सह्याद्रि पर्वत के दक्षिण भाग में समुद्र के तीर, कोङ्कण नाम

३१ दिन	जौलाई १९०४ ई०	रबीउल आ० १३२२ हि०	श्रावण १३११ फ०	श्रावण १९६१ वि० आयं १९७२९४९००६ संक्रांति प्रवि०	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चंद्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहरादि
शु	१	१६	४	१९	४	६०	०	श्र	२	५२	कु	३६	२	३४	१	
श	२	१७	५	२०	४	०	२९	ध	९	१०	कुम्भ			३४	०	
र	३	१८	६	२१	५	५	२५	श	१५	३९	कुम्भ			३३	५९	
चं	४	१९	७	२२	६	१०	१७	पू	२१	५५	मी	५	२१		५८	
मं	५	२०	८	२३	७	१४	३८	उ	२७	३६	मीन				५७	
बु	६	२१	९	२४	८	१८	४	रे	३२	१९	मे	३२	१९		५६	
बृ	७	२२	१०	२५	९	२०	३०	अ	३६	२	मेष				५४	
शु	८	२३	११	२६	१०	२१	४२	भ	३८	३०	वृ	५३	४८		५२	
श	९	२४	१२	२७	११	२१	३७	कृ	३९	४३	वृषभ				५१	
र	१०	२५	१३	२८	१२	२०	१४	रो	३९	४३	वृषभ				५०	
चं	११	२६	१४	२९	१३	१७	४१	मृ	३८	३७	मि	९	१०		४९	
मं	१२	२७	१५	३०	१४	१४	१	आ	३६	३२	मिथुन				४८	
बु	१३	२८	१६	३१	अ०	९	३२	पु	३३	४०	क	१९	२३		४७	
बृ	१४	२९	१७	३२	सु३	४ ५८	२२ ५५	पु	३०	३१	कर्क				४६	चंद्र दर्शन
श	१५	ज०	१८	श्रा०	३	५२	३८	श्ले	२६	१८	सिंह	२६	१८		४५	सक्रांति कर्क ३१।३२
श	१६	२	१९	२	४	४६	२७	म	२२	११	सिंह				४४	
र	१७	३	२०	३	५	४०	२१	पू	१८	१	कं	३२	२		४२	
चं	१८	४	२१	४	६	३४	२१	उ	१४	६	कन्या				४१	
मं	१९	५	२२	५	७	२९	४	ह	१०	३१	तु	३९	१		४०	
बु	२०	६	२३	६	८	२४	१५	चि	७	३१	तुला				३८	उदयं बुध पश्चिमें ५७।२०
बृ	२१	७	२४	७	९	२०	१४	स्वा	५	१६	वृ	४९	१७		३७	
श	२२	८	२५	८	१०	१७	१०	वि	३	५८	वृश्चिक				३५	
श	२३	९	२६	९	११	१५	१५	अ	३	४३	वृश्चिक				३२	
र	२४	१०	२७	१०	१२	१४	३२	ज्ये	४	४२	ध	४	४२		२९	
चं	२५	११	२८	११	१३	१५	७	मू	६	५५	धन				२६	
म	२६	१२	२९	१२	१४	१६	५८	पू	१०	२३	म	२६	३२		२३	
ब	२७	१३	३०	१३	पू०	२०	०	उ	१४	५९	मकर				२०	व्यास पूजा
बृ	२८	१४	श्रा.	१४	श्रा बदि१	२४	०	श्र	२०	३१	कु	५३	३६		१८	
शु	२९	१५	२	१५	२	२८	४०	ध	२६	४१	कम्भ				१६	
श	३०	१६	३	१६	३	३३	३७	श	३३	८	कम्भ				६१	
	३१	१७	४	१७	४	३८	३०	पू	२९	२९	मीन	२२	५४		१२	उदयं मंगल ५६।४८
															१०	

सितम्बर १९०४ ई०	आह्निक वृत्तान्त ।
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

एक स्थान है जहां बलेश्वर महादेव का एक प्रसिद्ध मंदिर है यहां के ब्राह्मण संस्कृत की अनेक विद्याओं में सर्वोपरि होते रहे हैं ॥

कहते हैं कि प्राचीन काल में उन ब्राह्मणों में एक ब्रह्म विद्या का वेत्ता पूर्ण विज्ञ प्राजपय नाम थे जिनको पं० दुर्गाप्रसादजी महर्षि के नाम से लिखते हैं उस के ३ पुत्र और एक कन्या थी कालान्तर में जब प्राजपय जी का देहान्त हो गया तो उन की पतिव्रता स्त्री पति के वियोग से बहुत व्याकुल हुई और उसी विरह की अवस्था में अपने पुत्रं को लेकर काशी में चली आई और यहीं रहने लगी ॥

उन तीन बालकों में सब से कनिष्ट का नाम महादेव देव था जिसने अपना सर्व जीवन काशी में ही व्यतीत किया परन्तु उन का पुत्र सदाशिव देव जो कर्मकाण्ड का पूर्ण ज्ञाता था कुछ समय के पश्चात् अपने परिवार सहित अपने जन्म देश के अनुराग से दक्षिण की ओर चला । परन्तु बीच ही में गोदावरी के तीर टेंक नामी एक स्थान में रहने लगा यहां उसके सीताराम देव नामी एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो वेद-शास्त्र का सुज्ञ विद्वान हुआ उन का विवाह सत्यभामा से हुआ कालान्तर में उन्होंने उस स्थान को छोड़ कर पूना का बास स्वीकार किया जिससे वह अपने जन्म स्थान के निकट तर

३१ दिन	अगस्त १९०४ ई०	जमादिउ.अ. १३२२ हि०	भाद्रपद १३११ फ०	भाद्रपद १९६१ वि० आर्य१९७२९४९००६ संक्रांतिप्र०	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिन मान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
चं	१	१८	५	१८	५	४२	५४	उ	४५	२०	मीन			३३	७	
मं	२	१९	६	१९	६	४३	२८	रे	५०	१५	मेष	५०	१५	३३	४	
बु	३	२०	७	२०	७	४८	५४	अ	५४	१४	मेष			३३	०	
बृ	४	२१	८	२१	८	५०	११	भ	५७	२	मेष			३२	५७	उदयं सित पश्चिमे
शु	५	२२	९	२२	९	५०	१०	कृ	५८	३०	वृषभ	१२	२४		५४	
श	६	२३	१०	२३	१०	४८	५५	रो	५८	४७	वृषभ				५१	
र	७	२४	११	२४	११	४६	२५	मृ	५७	५५	मिथुन	२८	२१		४८	
चं	८	२५	१२	२५	१२	४२	५६	आ	५६	४	मिथुन				४४	
मं	९	२६	१३	२६	१३	३८	३१	पु	३४	२२	कर्क	३९	२		४१	
बु	१०	२७	१४	२७	१४	३३	३१	पु	५०	०	कर्क				३८	
बृ	११	२८	१५	२८	अ०	२७	४०	श्ले	४६	४२	सिंह	४६	४२		३५	
शु	१२	२९	१६	२९	सु१	२१	४८	म	४२	७	सिंह				३३	चन्द्र दर्शन
श	१३	जे१	१७	३०	२	१५	४१	पू	३७	५८	कन्या	५१	५८		३०	
र	१४	२	१८	३१	३	१०	४१	उ	३३	५८	कन्या				२८	तीज
चं	१५	३	१९	३२	४ ५	३ ५८	१ २६	ह	३०	१६	तुला	५८	४०		२६	नाग पंचमी
मं	१६	४	२०	भा१	६	५३	३८	चि	२७	४	तुला				२४	संक्रांति सिंह ५९।५०
बु	१७	५	२१	२	७	४९	३७	स्वा	२४	४१	तुला				२२	
बृ	१८	६	२२	३	८	४६	३५	वि	२३	८	वृश्चिक	८	३१		२०	
शु	१९	७	२३	४	९	४४	३७	अ	२२	३८	वृश्चिक				१८	
श	२०	८	२४	५	१०	४३	५५	ज्ये	२३	१९	धन	२३	१९		१६	
र	२१	९	२५	६	११	४४	३०	मू	२५	१६	धन				१२	
चं	२२	१०	२६	७	१२	४६	२१	पू	२८	२६	मकर	४४	३१		९	
मं	२३	११	२७	८	१३	४९	२२	उ	३८	४६	मकर				६	
बु	२४	१२	२८	९	१४	५३	२०	श्र	३८	८	मकर				३	
बृ	२५	१३	२९	१०	पू०	५८	२	ध	४४	११	कुम्भ	११	१०	३२	०	श्रावणी, सलोनो, रक्षाबंधन
शु	२६	१४	भा	११	भा ब १	६०	०	श	५०	२८	कुम्भ			३१	५६	
श	२७	१५	२	१२	१	३	६	पू	५७	६	मीन	४०	२९		५२	
र	२८	१६	३	१३	२	८	३	उ	६०	०	मीन				४८	अस्तं बुध पश्चिमे ५०।४६
चं	२९	१७	४	१४	३	१२	३०	उ	३	५	मीन				४४	
मं	३०	१८	५	१५	४	१६	१३	रे	८	२४	मेष	८	२४		४०	
बु	३१	१९	६	१६	५	१८	५१	अ	१२	३७	मेष				३६	चांदन छट

अगस्त १९०४ ई०	आह्निक वृत्तान्त ।				
१					
२					
३					
४					
५					
६					
७					
८					
९					
१०					
११					
१२					
१३					
१४					
१५					
१६					
१७					
१८					
१९					
२०					
२१					
२२					
२३					
२४					
२५					
२६					
२७					
२८					
२९					
३०					
३१					

हो गये इस स्थान पर शकाब्द १७४१ ईस्वी सं० १८१९ कार्तिक शुक्ल ६ रविवार को अर्द्धरात्री के समय उनके एक बालक उत्पन्न हुआ जिसका जन्मनाम नृसिंहदेव था परन्तु पीछे वही बापुदेव के नाम से प्रसिद्ध हो गया ॥

थोड़े ही दिनों में माता पिता ने उनका विद्यारम्भ संस्कार करा कर उनको संस्कृत पढ़ाना आरम्भ किया यह बालकपन सेही तीक्ष्ण बुद्धि और सुदृढ़ स्मृतिवान थे इस कारण थोड़े से ही समय में अनेक साधारण ग्रन्थों की समाप्ति कर लिया परन्तु उन को गणित विद्या में रस विशेष था इस कारण अधिक विद्या की प्राप्ति के लिये वह नागपुर पहुंचे वहां एक पण्डित ढुण्ढिराज नामी कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न संस्कृत गणितज्ञ तथा ज्योतिष विद्या के सुप्रसिद्ध विद्वान मिल गये दूर २ से विद्यार्थी उन की प्रसिद्धी सुन कर शिक्षा ग्रहणार्थ आते थे पण्डित बापुदेवजी ने ऐसे सुयोग्य गुरु को पाकर बीज गणित का पढ़ना आरम्भ कर दिया और थोड़े ही काल में अपने सहपाठी अन्तेवासियों से वरता को प्राप्त हो गये । गुरु का भी सुयोग्य शिष्य पर अधिक प्रेम था शनैः शनैः उनकी योग्यता तथा सुज्ञता की कीर्ति सर्वत्र फैलने लगी ॥ (शेष फिर)

(शालिगराम प्रयाग निवासी)

३० दिन	सितम्बर १९०४ ई०	जमादि०आ. १३२२हि०	आश्विन १३१२फ०	आश्विन सं० १९६१. आर्य १९७२९४९००६ सं० प्रविष्ठा	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिन मान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
बृ	१	२०	७	१७	६	२०	१६	भ	१५	३९	वृ	३१	६	३१	३२	
शु	२	२१	८	१८	७	२०	२३	कृ	१७	२६	वृषभ				२८	
श	३	२२	९	१९	८	१९	१४	रो	१७	५८	मि	४७	५०		२४	श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी
र	४	२३	१०	२०	९	१६	५९	मृ	१७	२२	मिथुन				२०	गूगा नवमी
चं	५	२४	११	२१	१०	१३	२८	आ	१५	४२	क	५८	२०		१६	अगस्त्युदयम् २०।३४
मं	६	२५	१२	२२	११	९	८	पु	१३	१३	कर्क				१२	
बु	७	२६	१३	२३	१२ १३	४ ८	८ ३	पु	९	५६	कर्क				८	गोवत्स पूजनम्
बृ	८	२७	१४	२४	१४	५२	२०	श्ले	६	१३	सिं	६	१३		४	
शु	९	२८	१५	२५	अ	४६	१८	म. पू	५८	[illegible]	सिंह			३१	०	
श	१०	२९	१६	२६	सु१	४०	२८	उ	५३	५७	कं	१२	०	३०	५६	
र	११	३०	१७	२७	२	३४	४२	ह	५०	११	कन्या				५२	चन्द्र दर्शन
चं	१२	१	१८	२८	३	२९	२१	चि	४६	५४	त	१७	५०		४८	
मं	१३	२	१९	२९	४	२४	२७	स्वा	४४	१८	तुला				४४	गणेश चौथ
बु	१४	३	२०	३०	५	२०	२९	वि	४२	३२	वृ	२७	५८		४०	ऋषि पंचमी
बृ	१५	४	२१	३१	६	१७	३०	अ	४१	४८	वृश्चिक				३६	
शु	१६	५	२२	आ.	७	१५	२५	ज्ये	४७	१३	ध	४२	१३		३२	संक्रान्ति कन्या १।५२
श	१७	६	२३	२	८	१४	५६	मू	४२	५३	धन				२८	उदयं बुध प्राक् १२।४२
र	१८	७	२४	३	९	१५	२२	पू	४२	४६	धन				२४	
चं	१९	८	२५	४	१०	१७	२८	उ	५०	५४	म	२	४८		२०	
मं	२०	९	२६	५	११	२०	३२	श्र	५६	३	मकर				१६	
बु	२१	१०	२७	६	१२	२४	३७	ध	६०	०	कु	२९	१		१२	वामन १२
बृ	२२	११	२८	७	१३	२९	२२	ध	१	५९	कुम्भ				८	
शु	२३	१२	२९	८	१४	३४	२८	श	८	२१	मी	५८	११		४	अनन्त चौदश
श	२४	१३	३०	९	पू०	३१	३१	पू	१४	४७	मीन			३०	०	
र	२५	१४	आ.	१०	आ ब.	४४	८	उ	४०	५४	मीन			२९	५६	फ़सली सम्वत प्रारम्भः
चं	२६	१५	२	११	२	४८	५	रे	२६	२६	मे	२६	२६		५२	
मं	२७	१६	३	१२	३	५०	४१	अ	३०	५४	मेष				४८	
बु	२८	१७	४	१३	४	५२	११	भ	३४	१६	वृ	४९	४६		४४	
बृ	२९	१८	५	१४	५	५२	२५	कृ	३६	१८	वृषभ				४०	
शु	३०	१९	६	१५	६	५१	२२	रो	३७	७	वृषभ				३६	

सितम्बर १९०४ ई०	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	

उपयोगी और परीक्षित औषध

[१] गठिया बाय रोग निवारक तैल—

पन्सारी की औषधि—असगन्ध नागोरी, मालकंगनी, सोंठ, मीठा तेलिया, इन्द्र जौ, बायबडंग, कचूर, अड़ब अजवायन, एक २ तोला, सतावर २ तोला, च्योंटली (रत्ती) सफेद ६ मासा ॥

जंगल की औषधि—रासना, धतूरे के बीज, कंडाई जड़ पत्तों समेत, महुवे की छाल, गिलो, अरण्ड की जड़ का छिलका, आख की जड़ की छाल व पत्ते, पीपल वृक्ष की छाल सब दो दो तोला॥

पंसारी की औषधियों को कूट कर तीन पाव मीठे तेल के साथ कड़ाही में डालकर पकावे, फिर पावभर भेड़ का दूध उसमें डाल दे, जब दूध जल जावे तो जंगल की औषधियों को पृथक सेर भर जल में उबाल कर छान ले। फिर उस जल में से थोड़ा २ कड़ाही वाले तेल में डालता जावे जब वह सब जल जल जावे तो तैल को छान कर शुद्ध कर रख लेवे ॥

प्रयोग—यदि कोई गठिये से पीड़ित हो तो उसको एक सप्ताह तक धूप में बिठला कर उस तैल की मालिश सब शरीर पर करे जब पसीना आजावे तो गोबर मलकर उष्ण जल से स्नान करे

३१ दिन	अक्टूबर १९०४ ई०	रजब १३२२ हि०	कार्तिक १३१२ फ०	कार्तिक १९६१ वि० आर्य १९७२९४९००६ सं० प्रतिपदा	बदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र नक्षत्र	घड़ी	पल	चन्द्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिनमान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
श	१	२०	७	१६	७	४९	६	मृ	३६	४६	मिथुन	६	५७	२९	३२	
र	२	२१	८	१७	८	४५	४७	आ	३५	१९	मिथुन				२८	
चं	३	२२	९	१८	९	४१	३४	प	३३	५९	कर्क	१९	१९		२४	
मं	४	२३	१०	१९	१०	३६	३७	पु	२९	५४	कर्क				२०	
बु	५	२४	११	२०	११	३१	७	श्ले	२६	१६	सिंह	२६	१६		१६	
बृ	६	२५	१२	२१	१२	२५	१६	म	२२	२७	सिंह				१२	
शु	७	२६	१३	२२	१३	१९	१४	पू	१८	६	कन्या	३२	५		८	
श	८	२७	१४	२३	१४	१३	१	उ	१४	२	कन्या				४	
र	९	२८	१५	२४	अ०	७	२०	ह	१०	११	तुला	३८	२८	२९	०	
चं	१०	२९	१६	२५	सु १ २	२ ५७	४ २६	चि	६	४६	तला			२८	५६	चंद्र दर्शन, अस्तंबुध प्राक
म	११	शा.	१७	२६	३	५३	२२	स्वा	४	०	वृ	४७	३१		५२	१०।१२
बु	१२	२	१८	२७	४	५०	३८	वि	२	२	वृश्चिक				४८	
बृ	१३	३	१९	२८	५	४८	४८	अ	१	३	वृश्चिक				४४	
शु	१४	४	२०	२९	६	४८	१३	ज्ये	१	१०	धन	१	१०		४०	
श	१५	५	२१	३०	७	४८	५५	मू	२	३९	धन				३६	
र	१६	६	२२	का. १	८	५०	५६	पू	५	१०	मकर	२१	८		३२	संक्रांतितुला२८।५२दुर्गा ८
चं	१७	७	२३	२	९	५४	५	उ	९	०	मकर				२८	
मं	१८	८	२४	३	१०	५८	१५	श्र	१३	५६	क	४६	४९		२४	विजय दशमी, दशहरा
बु	१९	९	२५	४	११	६०	०	ध	१९	४२	कुम्भ				२०	
बृ	२०	१०	२६	५	११	३	६	श	२६	०	कुम्भ				१६	
शु	२१	११	२७	६	१२	८	२२	पू	३२	२८	मीन	१५	५१		१२	
श	२२	१२	२८	७	१३	१३	२१	उ	३८	४२	मीन				८	
र	२३	१३	२९	८	१४	१८	५५	रे	४४	४२	मे	४४	२२		४	
चं	२४	१४	३०	९	पू०	२२	३	अ	४९	३	मेष			२९	०	
मं	२५	१५	का.	१०	का ब१	२४	५१	भ	५२	३९	मेष			२७	५७	शब्बरात
बु	२६	१६	२	११	२	२६	३६	कृ	५५	१	वृ	८	१४		५४	
बृ	२७	१७	३	१२	३	२६	४३	रो	५६	५	वृषभ				५१	करवाचौथ
श	२८	१८	४	१३	४	२५	४४	मृ	५५	५२	मि	२६	०		४७	
श	२९	१९	५	१४	५	२३	३१	आ	५४	५०	मिथुन				४४	
र	३०	२०	६	१५	६	२०	१८	प	५२	३६	कर्क	३८	१०		४०	
चं	३१	२१	७	१६	७	१६	८	पु	४९	३९	कर्क				३६	

अक्टूबर १९०४ ई०	आह्निक वृत्तान्त
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

तत्पश्चात् केवल उसी अंग पर मालिश करे जिस में पीड़ा मरती हो। यदि पीड़ा किसी अंग विशेष में हो तो उसी स्थान पर मालिश करता रहे मालिश करने पर उस अंग पर रुअड़ वा फलालेन बांधनी चाहिये और शीतल वायु से बचना चाहिये॥

[२] दन्त शूल निवारक चूर्ण—

कुचला फुका हुआ (१ तोला), अमलतास के बीज फुके हुये (१ तोला), काली मिरच (६ मासे), अकरकरहा (४ मासे), सेंधा लवण (६ मासे) इन सब को कूटकर रख लेवे जब दांत जाढ़ में शूल प्रतीत हो उस पर एक चुकटी भर कर लगा लेवे थोड़ी देरमें आराम हो जायगा। जल से मुख प्रक्षालन नहीं करना चाहिये। कुचला फूकने में सावधानी करनी चाहिये क्योंकि उसका धुवां आंखों को हानि पहुंचाता है। अमलतास के बीज और कुचले फूकने की विधि यह है कि दोनों को पृथक २ मट्टी की कुल्या में डाल कर और कुल्या के मुंह पर चुगड़ा रखकर गारा लगा देवें और फिर अग्नि में उन कुल्याओं को डाल देवें थोड़ी देर में भस्म हो जायगी। कुचले वाली कुल्या में एक छोटा सा छिद्र भी कर देना चाहिये ताकि धुवां निकलता रहे॥

३० दिन	नवम्बर १९०४ई०	शाबान १३२२हि०	मार्गशीष १३१२फ़०	मार्ग शीष १९६१वि. आर्य १९७२९४९००६ संक्रांति प्रवि०	वदि सुदि तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	चंद्रराशि राशि	घड़ी	पल	दिन मान घड़ी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहरादि
मं	१	२२	८	१७	८	११	१२	श्ले	४६	७	सिं	४६	७	२७	३२	
बु	२	२३	९	१८	९	५	५०	म	४२	११	सिंह				२८	
ब	३	२४	१०	१९	१०/११	०/५५	०/६	पू	३८	२	कं	५२	०		२४	
शु	४	२५	११	२०	१२	४९	७	उ	३३	५५	कन्या				२१	
श	५	२६	१२	२१	१३	४२	२७	ह	२९	५८	तु	५७	१०		१८	यमदीवा
र	६	२७	१३	२२	१४	३७	१	चि	२६	२३	तला				१५	
चं	७	२८	१४	२३	अ०	३२	२७	स्वा	२३	२६	तला				१२	*
मं	८	२९	१५	२४	सु०	३८	४०	वि	२१	१५	वृ	६	४८		८	गोवरधन पूजा
बु	९	३०	१६	२५	२	२५	५२	अ	२०	०	वृश्चिक				५	चंद्र दर्शन, भैय्या दूज
ब	१०	म	१७	२६	३	२४	८	ज्ये	१९	५०	ध	१९	५०		२	
शु	११	२	१८	२७	४	२३	४१	मू	२१	४	धन			२६	५९	
श	१२	३	१९	२८	५	२४	३१	पू	२३	१३	म	२९	४		५६	
र	१३	४	२०	२९	६	२६	२८	उ	२६	३८	मकर				५२	
चं	१४	५	२१	३०	७	२९	५६	श्र	३१	२६	मकर				४९	उदयं बध पश्चिमें ५।७
मं	१५	६	२२	मा०	८	३४	१२	ध	३७	१	कु	४	१४		४६	संक्रांति वृश्चिक २२।२
बु	१६	७	२३	२	९	३९	१४	श	४३	१३	कुम्भ				४३	
ब	१७	८	२४	३	१०	४४	३०	पू	४९	३९	मी	३३	३		४०	
शु	१८	९	२५	४	११	३९	४१	उ	५५	५७	मीन				३६	प्रबोधनी ११। देवउठान
श	१९	१०	२६	५	१२	५४	२३	रे	६०	०	मीन				३३	
र	२०	११	२७	६	१३	५८	१७	रे	२	२	मे	२	२		३०	
चं	२१	१२	२८	७	१४	६०	०	अ	६	५८	मेष				२७	
मं	२२	१३	२९	८	१४	१	८	भ	१०	४९	वृ	२६	२९		२४	
बु	२३	१४	३०	९	पू०	२	४२	कृ	१३	२८	वृषभ				२२	टुकड़ी गंगा स्नान
ब	२४	१५	मा.	१०	मा/१	२	५८	रो	१४	५१	मि	४४	५६		२१	
शु	२५	१६	२	११	२/३	२/५२	५८/४६	मृ	१५	१	मिथन				२०	
श	२६	१७	३	१२	४	५६	३२	आ	१४	५	क	५७	३५		१८	
र	२७	१८	४	१३	५	५२	१९	प	१२	५	कक				१७	
चं	२८	१९	५	१४	६	४७	२७	पु	९	१८	कर्क				१६	
मं	२९	२०	६	१५	७	४२	८	श्ले	५	१४	सिं	५	१४		१४	
बु	३०	२१	७	१६	८	३६	२०	म. प	२/५७	२/५८	सिंह				१३	

*दीवाली, सोमवतीअमावस, महर्षि दयानन्द परलोकगमन दयानन्द सम्वत २२ प्रारम्भ:

नवम्बर १९०४ ई०	आह्निक वृत्तान्त			
१				
२				
३				
४				
५				
६				
७				
८				
९				
१०				
११				
१२				
१३				
१४				
१५				
१६				
१७				
१८				
१९				
२०				
२१				
२२				
२३				
२४				
२५				
२६				
२७				
२८				
२९				
३०				

[३] दांतों का मञ्जन

छोटी इलायची, त्रिफला, माजूफल, जंगी हरड़, कपूर, खेरसार, लोहचूर्ण, अनारवृक्ष की छाल, वंशलोचन, लीलाथोथा, मजीठ, रूमी मस्तगी, सुपारी फुकी हुवी, लोध, फटकरी, कुचला फुका हुआ, हिंगोट की जड़। सब औषधियां सम भाग कूटकर छानकर रख लेवे। इसको नित्यप्रति दांतों पर मञ्जन करनेसे दांतशुद्ध और रोगोंसे सुरक्षित रहवे हैं, यदि किसी को 'मिस्सी' बनाना हो तो इसमें एक भाग कसीस डाल देवे॥

[४] तिल्ली की औषध—

केशर (१ तोला), नौशादर (पावभर) सुहागा (२ तोला), आख का दूध (पाव भर) एक घड़े का मुंह तोड़कर उसमें जल भर कर एक गढ़े में जो उसके माप का हो खोद कर रक्खें और एक खाली बोतल चौड़े मुंह वाली उस घड़े में रक्खें कि मुंह उस बोतल का जल से बाहर रहे फिर औषधियों को रगड़ कर लुगदी बनाकर एक कूजे में कि पेंदी में उसमें सूई के नाके के समान छिद्र हो रखकर कूजे को चपनी से ढांप कर छिद्र को बोतल के मुंह पर सावधानी से रक्खें और ऊपर एक बड़ा माट का मुंह पृथक करके उसपर औंधा रख

३१ दिन	दिसम्बर १९०४ ई०	रमजान १३२२ हि०	पौष १३१२ फ०	पौष १९६१ वि० आर्य१९७२९४९००६ संक्रांति प्रवि०	बदि सुदि तिथि	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	चन्द्रराशि राशि	घटी	पल	दिन मान घटी	पल	ग्रह उदयास्त तथा तेवहारादि
बृ	१	२२	८	१७	९	३०	२७	उ	५२	४६	कन्या	११	५३	२६	१२	
शु	२	२३	९	१८	१०	३४	३६	ह	४९	५४	कन्या	१			१०	जुमतुल विदा
श	३	२४	१०	१९	११	१८	५६	चि	४६	५	तुला	१७	५५		९	
र	४	२५	११	२०	१२	१२	४२	स्वा	४२	५९	तुला				८	
चं	५	२६	१२	२१	१३	९	१८	वि	४०	३५	वृश्चिक	२६	११		६	
मं	६	२७	१३	२२	१४	५	१८	अ	३९	६	वृश्चिक				५	
बु	७	२८	१४	२३	अ०	२	३५	ज्ये	३८	४२	धन	३८	४२		४	
बृ	८	२९	१५	२४	सु१	१	२	मू	३९	२८	धन				२	चंद्र दर्शन
श	९	शा१	१६	२५	२	०	४१	पू	४१	२९	मकर	५७	५८		१	छोटी ईद
श	१०	२	१७	२६	३	१	३९	उ	४४	४५	मकर			२६	०	
र	११	३	१८	२७	४	३	५६	श्र	४९	९	मकर			२५	५९	
चं	१२	४	१९	२८	५	७	२१	ध	५४	३४	कुम्भ	२१	५२		५८	
मं	१३	५	२०	२९	६	११	४४	श	६०	०	कुम्भ				५७	
बु	१४	६	२१	पौष. १	७	१६	४७	श	०	३९	मीन	५०	२९		५६	सक्रांति धन ५१।१
बृ	१५	७	२२	२	८	२२	८	पू	७	५	मीन				५४	
शु	१६	८	२३	३	९	२७	२०	उ	१३	२६	मीन				५३	
श	१७	९	२४	४	१०	३२	१	रे	१९	२४	मेष	१९	२४		५२	
र	१८	१०	२५	५	११	३५	५१	अ	२४	३५	मेष				५०	
चं	१९	११	२६	६	१२	३८	२७	भ	२८	४३	वृषभ	४४	२७		४९	
मं	२०	१२	२७	७	१३	४०	८	कृ	३१	४०	वृषभ				४८	अस्तं बध पश्चिमे ५७:५८
बु	२१	१३	२८	८	१४	४०	२०	रो	३२	२२	वृषभ				४४	उत्तरायण सूर्य
बृ	२२	१४	२९	९	पू	३९	३५	मृ	३३	४९	मिथुन	३	३६		४६	
शु	२३	१५	पौ१	१०	प्र	३७	१४	आ	३३	८	मिथुन				४६	
श	२४	१६	२	११	२	३३	४३	पु	३१	१७	कर्क	१७	०		४८	
र	२५	१७	३	१२	३	२९	४२	पु	२८	४९	कर्क				४९	बडा दिन
चं	२६	१८	४	१३	४	२४	३३	श्ले	२५	३३	सिंह	२५	३३		५०	
मं	२७	१९	५	१४	५	१९	१२	म	२१	४८	सिंह				५२	
बु	२८	२०	६	१५	६	१३	२९	पू	१७	४४	कन्या	३१	४९		५३	
बृ	२९	२१	७	१६	७	७	३७	उ	१४	४	कन्या				५४	
श	३०	२२	८	१७	८ ९	१ ५६	५८ १५	ह	९	३७	तुला	३७	४५		५६	
श	३१	२३	९	१८	१०	५१	११	चि	५	५२	तुला				५७	

दिसम्बर १९०४ ई०

आह्निक वृत्तान्त।

दिसम्बर	
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	
१२	
१३	
१४	
१५	
१६	
१७	
१८	
१९	
२०	
२१	
२२	
२३	
२४	
२५	
२६	
२७	
२८	
२९	
३०	
३१	

देवें, और माट को गारा लगा देवें, फिर बहुत से उपलों को चारों ओर चुनकर उसमें अग्नि लगा देवें जब शुष्क और ठंढा हो जावे उतार लेवें। औषधियों का तैल बोतल में आजायगा—उसको शीशी में रख छोड़े। आवश्यकता पड़ने पर एक बूंद तैल की बतासे में डालकर खा लेवें। भोजन केवल चने की दाल के रस से गेहूं की रोटी खायें। दाल का दाना न खायें। थोड़ी तिल्ली वाला एक समय और बड़ी तिल्ली वाला दोनों काल नित्य प्रति खाये, बारह दिन में तिल्ली जाती रहेगी॥

आर्य्यसमाज के साथ अन्यमतों के शास्त्रार्थ

सं० १९०२ ई० में सारे भारत वर्ष में दो बड़े प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुवे प्रथम शास्त्रार्थ हैद्राबाद में दक्षिण प्रान्त के एक सुप्रसिद्ध सन्यासी अच्युताश्रम नामक के साथ २४ अप्रैल को होना निश्चित हुआ था। उसका पक्ष था कि ।"यज्ञ में पशु बध वेदोनुकूल है" और आर्य्यसमाज का तद्विरुद्ध। समाज की ओर से पण्डित तुलसीराम स्वामि, आर्य्य मुनि, ज्वालादत्त, रुद्रदत्त, पूर्णानन्द महोदयगण नियत तिथि से पूर्व पहुंच गये और शास्त्रार्थ के नियम भी परस्पर स्थिर हो गये परन्तु अत्यन्त शोक से लिखना पड़ता है कि अच्युताश्रम जी अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर न रहे और मध्यस्थ नियत करने पर विवाद करते २ पंद्रह दिन बिता दिये। जिसका परिणाम यह हुआ कि आर्य्य पण्डित निराश हो हैद्राबाद से लौट आये। इस शास्त्रार्थ के संबन्ध में आर्य्य समाज का १५००) के लगभग व्यय हुवा। समाज को इतना लाभ फिर भी हुआ कि हैद्राबाद प्रान्त में वैदिक धर्म का प्रचार बड़ी धूमधाम से हो गया और सर्व साधारण को उसके सिद्धान्तों की प्रबलता भली भांति प्रकट हो गई॥ सविस्तर वृतान्त पुस्तकाकार छपा हुवा है जो उक्त समाज के मंत्री महाशय के पास से मिल सकता है॥

दूसरा वृहत् शास्त्रार्थ देवरिया ज़िला गोरखपुर में आर्य्य समाज देवरिया तथा मुसलमानों का १६ से २१ अगस्त तक हुवा। समाज की ओर से स्वामि दर्शनानन्द सरस्वती ललता प्रसाद अग्निहोत्री पं० मुरारी लाल शर्म्मा, नन्दकिशोर देव, रुद्रदत्त, और बसन्त लाल थे और प्रतिपक्ष की ओर से अनुमान पांच सहस्र यवन विद्वान एकत्रित हुवे थे जिन में भारत वर्ष के सब ही प्रान्तोंके प्रसिद्ध मौलवी सम्मिलित थे। शास्त्रार्थ में यवन मत की ओर से ४० मौलवी और समाज की ओर से केवल उक्त स्वामि जी और अग्निहोत्री जी थे शेष आर्य्य पण्डित व्याख्यान आदि देते थे और मौलवी अपने ४० प्रति निधियों को सम्मति आदि से सहायता देते थे। नियम स्थिर हो गये। विषय यह था कि "वेद ईश्वरकृत है या क़ुरान" छः दिन तक लगातार लिखित शास्त्रार्थ होता रहा परन्तु सातवें दिन मौलवी साहबान (यद्यपि शास्त्रार्थ के नियमों में कोई अवधि नियत न थी) चले गये और अपने अन्तिम पत्र का उत्तर समाज से लेने की भी प्रतीक्षा न की। यह शास्त्रार्थ उर्दू भाषा में सत्य धर्मप्रचारक प्रेस हरद्वार में छप रहा है शीघ्र प्रकाशित होगा। ऐसा शास्त्रार्थ मुसलमानों के साथ आज तक कभी नहीं हुवा। इसमें समाज को पूरी २ जय हुई और वेद ईश्वरकृत और क़ुरान मनुष्यकृत निश्चित हो गया। सविस्तर वृत्तान्त पुस्तकावलोकन से ज्ञात होगा। पुस्तक में शास्त्रार्थ संबन्धी लेख से अतिरिक्त संपादक महाशय ने जो उपोद्घात उपसंहार आदि बढ़ाये हैं वह पढ़ने योग्य है। पुस्तक छप जाने पर मंत्री आर्य्य समाज देवरिया से मिलेगा॥

नूतन पुस्तक

वेदान्तार्य्य भाष्य—श्रीमान् पं० आर्य्य मुनि कृत--के मुद्रित होने से सर्व साधारण की वह अभिलाषा पूर्ण होती है जो उन्हें चिरकाल से "वेदान्त सूत्रों" पर एक उत्तम भाष्य की थी। यह महर्षि व्यास कृत वेदान्त दर्शन का भाष्य है भाष्य का क्रम इस प्रकार है कि (१) मूल सूत्र (२) पदच्छेद (३) पदार्थ (४) सूत्र का पिछले सूत्र से सम्बन्ध और उपनिषदों के मंत्रों से मिलान (५) अन्त में स्वामि शंकराचार्य्य और रामानुज के सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ करके वैदिक सिद्धान्त को पुष्ट किया गया है। यह पहला ही आर्य्य भाष्य है जो वेदान्त सूत्रों पर प्रकाशित हुआ है। वेदान्त के अभिलाषियों को एक बार अवश्य देखना चाहिये। परिमाण ६०० पृष्ठ मूल्य २॥) है॥ मिलने का ठिकाना पं देवदत्त शर्म्मा मकान ला० जीवन्दास पेन्शनर शाहालमी दर्वाजा लाहौर॥

आर्य्य मन्तव्य प्रकाश प्रथम और द्वितीय भाग--श्रीमान् पं० आर्य्य मुनि कृत--इसमें ८ समुल्लास हैं जिन में प्राचीन आर्य्यों के मन्तव्य, वेदमन्त्रों के अर्थ जिनको पौराणिक लोग श्राद्ध विषय, अवतार सिद्धि, आदि में प्रमाण दिया करते हैं, ठीक २ किये गये हैं और उन समस्त वेदमन्त्रों को संग्रह किया गया है जिनको सनातन धर्म्मी आर्य्य समाज के प्रतिपक्ष में दिया करते हैं। सगुण निर्गुण उपासना की समानता दिखाई गई है और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त का वेदार्थ से मिलान किया गया है पुस्तक बहुत उत्तम है। मूल्य २) दोनो भाग॥ मिलने का ठिकाना उपरोक्त है॥

वैदिक विवाह आदर्श—मास्टर आत्माराम जी कृत—पृष्ठ ३१२ मूल्य केवल ॥।) इसमें वैदिक संस्कारों पर उर्दू भाषा में बड़ी उत्तमता से बहस की गई है। पुस्तक पढने योग्य है। मंत्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब बच्छोवाली लाहौर से मिल सकता है॥

भारतवर्ष की आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के संक्षिप्त वृत्तान्त

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब तथा सीमा प्रान्त
[स्थान लाहौर]

प्रधान श्रीमान् महाशयराय ठाकुरदत्त जी एक्सट्रा ऐसिस्टण्ट कमिश्नर व रिजिस्ट्रार जुडिशल कमिश्नर पेशावर

मंत्री श्रीमान् महाशय केदारनाथ थापर लाहौर

यह सभा श्रीमान् स्वामी जी महाराज के स्वर्गवास पश्चात् वैदिक धर्म के प्रचार और रक्षा के निमित्त स्थापित की गई थी। सन् १८८५ ई० में इस की राजनियमानुसार रजिस्टरी हो चुकी है। १९०३ में इस सभा से २५८ समाज सम्बन्ध रखते थे। इन में से ६० समाजों की ओर से ७० प्रतिनिधि नियत थे॥

सभा के आधीन निम्नलिखित फण्ड (कोष), समाचार पत्र, पुस्तकालय, पाठशालादि हैं :—

(१) पूंजी—३१ अगस्त १९०३ को सारी पूंजी सभा की ११६३९९॥)। थी, समस्त आय उक्त मिति तक ४२८६८।-)० और समस्त व्यय ३००६५॥।)१० हुवा॥

अधोलिखित कोषों का आय गतवर्ष में निम्न लिखित प्रकार हुआ।

कोष	समस्त पूंजी	आय	कोष	समस्त पूंजी	आय
वेद प्रचार	२०१९३=)२	१२३२६।)८	चिरंजीलाल	६५।-)॥	१००)
गुरुकुल	५५६१९॥=)१॥	२३०४८=)	प्रदेशिकप्रचार	८४३॥=)॥	३३८॥)८
लेखराम स्मारक	२३८९३॥≡)	२३०५॥)११	व्यभिचार निवारण	६७९।)॥	८७।)
गुरुदत्त स्मारक	२०१२।-)३	१४५)	प्रेमदेवी होम करुण भंडार	६३६)	३६) व्याज

(२) वेद प्रचार कोष—यह कोष सन् १८९४ ई० में वैदिक धर्मोपदेशक धर्मोन्नति तथा वेदप्रचार के लिये एवं पुस्तकालय, पाठशालादि खोलने के लिये स्थापित किया गया था, जिस्के कारण उपदेशकों की संख्या तथा वैदिक धर्म

प्रचार में बहुत उन्नति हुई । उक्त कोष में से एक उपदेशक मद्रास प्रान्त के
लिये भी रक्खा हुआ है जिसके उद्योग से बङ्गलोर, धारुड़, विज़ीगापट्टम में
समाज स्थापित हो गये हैं और येलोर में होने वाला है ॥

(३) गुरुकुल कोष—प्राचीन रीत्यनुसार पूर्ण ब्रह्मचारी और वैदिक धर्मवेत्ता
बनाने के लिये यह गुरुकुल गङ्गा तट पर हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में
२४ मार्च १६०२ को स्थापित किया गया है, इसमें ७१ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं ।
श्रीमान् महाशय मुन्शीरामजी इसके मुख्य अधिष्ठाता और श्रीमान् पं० गङ्गादत्त
शास्त्रीजी मुख्य अध्यापक हैं । सविस्तर वृत्तान्त उचित स्थान में वर्णित है
वहां देख लेवें ॥

(४) लेखराम स्मारक कोष—यह कोष श्रीमान् पं० लेखराम जी आर्य्यपथिक
के स्वर्गवास होने पर उनके धार्मिक उद्देश के पूर्ण करने के लिये स्थापित किया
गया था । इस कोष से १०) मासिक उक्त पण्डित जी की माता के निर्वाहार्थ
दिया जाता है । श्रीमान् महाशय मुन्शीराम जी, पण्डित जी का जीवन चरित्र
तय्यार कर रहे हैं और उक्त महाशय के सुप्रबन्ध से पण्डित जी की समस्त
अमुद्रित पुस्तकें संचित हो चुकी हैं । जो सब की सब बिक चुकी हैं । इन
पुस्तकों को थोड़े मूल्य पर बेचने के लिये एक "सेट" में छपवाकर२) प्रति
"सेट" शीघ्र ही बिकेगा । चार उपदेशक भी इस कोष से प्रचार के लिये नियत हैं ॥

(५) गुरुदत्त स्मारक कोष—यह कोष श्रीमान् विद्वद्वर्य्य पण्डित गुरुदत्त
विद्यार्थी एम० ए० के स्वर्गवास पश्चात् स्थापित किया गया था, जिसमें से १०)
मासिक उनकी स्त्री तथा बालकों के निर्वाहार्थ दिया जाता है ॥*

(६) चिरञ्जीलाल स्मारक कोष—यह कोष लाला चिरञ्जीवलाल लुधियाना
निवासी की मृत्यु पर स्थापित किया गया था इस कोष से ५) मासिक उनकी
स्त्री और बालकों के पालनादि के लिये दिया जाता है ॥

(७) वैदिक पाठशाला गुजरानवाला—यह शाला सं० १९४५ से उपदेशक
तय्यार करने के लिये स्थापित हैं इस समय १५ विद्यार्थी पढ़ते हैं सविस्तर
वृत्तान्त उचित स्थान पर देखें ॥

(८) वैदिक पुस्तकालय लाहौर—इस पुस्तकालय में वेद, वेदांग तथा अन्य
अन्य आर्ष पुस्तकों के अतिरिक्त प्रत्येक मतमतान्तर तथा अनेक प्रकार के

* गत वर्ष में "कालेज वालों" ने रुपया रोक लिया था इस लिये यह रुपया आधो आध बांट
लिया गया है । और अब सभा १०) और "कालेज वाले" १०) मासिक पृथक २ भेजते हैं ॥

विद्या सम्बन्धी पुस्तक विद्यमान हैं। सन् १९०२ में ५८७३ पुस्तक थे, १९०३ में १३६७ पुस्तक अधिक आए। दो आने मासिक देने से प्रत्येक मनुष्य पुस्तकाध्ययन कर सकता है। ७४८० मनुष्यों ने उक्त तिथि तक पुस्तक अध्ययन किया। नियत मासिकादि के देने से लाहोर से बाहर के रहने वाले भी पुस्तक ले सकते हैं। पुस्तकों का सूची ✓) मूल्य पर मिलता है॥

(९) समाचार पत्रादि—उक्त सभा की ओर से "आर्य्य पत्रिका" नामक समाचार पत्र अङ्गरेज़ी भाषा में साप्ताहिक निकलता है जिस में सामाजिक समाचारों और लेखों के अतिरिक्त बहुत से धार्मिक और विद्या सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते हैं। मूल्य ५) वार्षिक है और "आर्य्य मुसाफिर मैगज़ीन" उर्दू में पं० लेखराम आर्य्य मुसाफिर की यादगार में मासिक पुस्तकाकार निकलता है। इसके सम्पादक ला० वज़ीरचन्द जी हैं। इस पुस्तक में वेद मंत्रादि की व्याख्या और इतर धार्मिक सिद्धान्तों पर सभ्यतापूर्वक युक्ति और प्रमाण सहित संवाद तथा विद्या और इतिहास सम्बन्धी लेख दिये जाते हैं। पृष्ठ १०० मूल्य ३) रुपये वार्षिक है॥ एप्रिल सन् १९०१ से सभा की ओर से एक "मासिक पत्र" उर्दू में जारी हैं मूल्य केवल) वार्षिक है इस में सभा के कार्य्यवाही और आयव्ययादि का लेखा मुद्रित होता है॥

(१०) वैदिक संस्कार—सम्प्रति संस्कार प्रायः सभी समाजों में होते हैं अतएव उनकी यथावत् संख्या का ज्ञात होना कठिन है। अनुमान संख्या एक सहस्र से न्यून नहीं है।

(११) प्रायश्चित्तादि—अनेक समाजों में समय २ पर पतित शुद्ध किये जाते रहे हैं ठीक संख्या ज्ञात नहीं तथापि "ओड़", "मेघ" और "रहितया" जातियों की प्रायश्चित्तों की संख्या ५००० से न्यून न होगी॥

(१२) शास्त्रार्थ—इस वर्ष २० शास्त्रार्थ जैनी, पुराणी, कुरानी, किरानी सब से हुवे और सफलता प्राप्त हुई॥

(१३) नूतन समाज—१९०३ में ३१ अगस्त तक ३४ नये समाज स्थापित हुए गतवर्ष २७ हुए थे। महामारी (प्लेग) के कारण उपदेशक अनेक नगरों में नहीं जा सके जिससे प्रचार में बाधा हुई॥

(१४) मेलों पर प्रचार—सं० १९०३ में कई छोटे २ मेलों पर प्रचार का प्रबन्ध किया गया परन्तु सब से बड़े दिल्ली दर्बार के मेले पर प्रचार हुवा सैकड़ों

ट्रैक्ट और पुस्तक बिना मूल्य बांटे गये लखों मनुष्यों तक वैदिक ध्वनि पहुंचाई गई इसमें सभा का ६००० के लगभग व्यय हुआ ॥

(१५) पुस्तक प्रचारिणी सभा—लाला आतमाराम जी रचित एक पुस्तक "बल और उसका साधन" उर्दू में छप कर तैयार है। यह यजुर्वेद के मन्त्र की व्याख्या है जिसको सनातन धर्मी कहा करते हैं कि स्वामि जी ने अश्लील अर्थ किये हैं ॥ दूसरा पुस्तक ३१२ पृष्ठ का "वैदिक विवाह आदर्श" नामक भी उर्दू में छपा है। इसकी समालोचना अन्यत्र की गई है ॥

(१६) वार्षिकोत्सव—१६०३ में ३२ वार्षिकोत्सव हुये और १० उत्सव महामारी के कारण रुक गये ॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश [स्थान मुरादाबाद]

प्रधान—श्रीमान् पं० भगवानदीन जी	मंत्री—श्रीमान् महाशय श्यामसुन्दर जी बी० ए० वकील (मैनपुरी)

यह सभा भी स्वामी जी महाराज के पश्चात् वैदिक धर्म्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी। सन् १८६७ में इसकी राज्य नियमानुसार रजिस्टरी हो चुकी है। समस्त पंजी ३१ अगस्त १६०३ को १३११६॥।)७॥ थी। सभा के आधीन निम्न लिखित कोष पत्रादिक हैं :—

(१) वेद प्रचार कोष—यह कोष १८६६ में वैदिक धर्म प्रचार और तदुन्नत्यर्थ स्थापित किया गया था इस कोष में ३१ अगस्त को ३३३७॥।)१॥ एकत्रित था॥

(२) लेखराम स्मारक कोष—यह कोष सन् १८६७ में स्थापित किया गया था। इसकी पूंजी १०४६)॥ है॥

(३) गुरुकुल कोष—इस के लिये ३१ अगस्त को ५०६८॥⁄)८ जमा है॥

(४) पुस्तकालय—इस पुस्तकालय में वैदिक धर्म और अन्य मतमतान्तर सम्बन्धी ३६५ (मूल्य ८४८) के लगभग पुस्तक हैं।

(५) समाचार पत्र—सभा की ओर से "आर्य्यमित्र" नामक समाचार पत्र नागरी भाषा में साप्ताहिक प्रकाशित होता है। मूल्य २) वार्षिक है। यह आर्य्य भास्कर नाम सभा के निज यंत्रालय में छपता है॥

(६) आर्य्यपुस्तकप्रचारिणी सभा—इस सभा के निरीक्षक महाशय जीवन मल, ललता प्रसाद, शिवचरण लाल, ब्रज किशोर, काली चरण, हज़ारी लाल, और श्याम सुन्दर हैं। इस कोष में २८३।⁄ २ जमा है॥ १६०२—३ में छः ट्रैक्ट तैय्यार किये गये॥

(७) नूतन समाज—१९०२ में ९ नये समाज स्थापित हुए गत वर्ष ३३ समाज हुए थे ॥

(८) मेलों पर प्रचार—विविध मेलों पर प्रचार किया गया ॥

(९) प्रायश्चित्त, उत्सव संस्कारों—की संख्या ज्ञात न हो सकी ॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान [स्थान अजमेर]

प्रधान—श्रीमान् बाबू रामविलास जी शारदा | मंत्री—श्रीमान् पं० रघुनन्दन जी

यह सभा राजस्थान में वैदिक धर्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी। इस की राज्य नियमानुसार रजिस्टरी हो चुकी है। उक्त सभा ने वेद प्रचार कोष खोल रक्खा है जिस में सम्प्रति ३२५॥) है। पं० प्रभुदयाल जी उपदेशक हैं। अजमेर समाज ने अपने ज़िले के लिये पं० भागीरथ जी को भजन मण्डली सहित और कोटा समाज ने पं० गंगादत्त जी को रक्खा हुआ है ॥

आर्य्यप्रतिनिधिसभा बंगाल बिहार [स्थान बांकीपुर ज़िला पटना]

प्रधान—श्रीमान् बाबू बालकृष्ण सहाय जी वकील (रांची) | मंत्री—श्रीमान् बाबू जयनारायण सहाय जी (रांची)

यह सभा बङ्गाल बिहार में वैदिक धर्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी। सन् १८९७ से वेद प्रचार कोष स्थापित है, जिसकी पूंजी बहुत सूक्ष्म है। सभा की ओर से "आर्य्यावर्त" नामक समाचार पत्र प्रति सप्ताह नागरी भाषा में प्रकाशित होता है। सम्पादक बाबू बालकृष्ण सहाय जी हैं। इस प्रान्त में एक वैदिक पाठशाला भी रांची में खोली हुई है। अप्रैल १९०२ में सभा ने निज नागरी यंत्रालय मोल लेकर नियत किया है, जिस में आर्य्यावर्त छपता है। बांकीपुर में सभा के लिये मन्दिर बनाने का प्रबन्ध हो रहा है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश तथा विदर्भ स्थान [नरसिंहपुर]

प्रधान—श्रीमान् पण्डित खूबचन्द जी बुधूलया (कोड़िया) | मंत्री—श्रीमान् महाशय नन्हेलाल मुरलीधर जी (नरसिंहपुर)

यह सभा २७ दिसम्बर १८९९ को वैदिक धर्म प्रचारार्थ स्थापित की गई थी और उसी समय वेद प्रचार कोष भी खोला गया था जो बहुत थोड़ा है, आय इस वर्ष में १०५०) और व्यय १२५०) हुआ फालतू खर्च गत वर्ष की बचत से पूरा किया गया उक्त सभा के आधीन ३८ समाज हैं। १२ नूतन समाज स्थापित हुवे पुस्तकालय में २०० के लगभग पुस्तक हैं एक मासिक पत्र सभा की ओर से "आर्य्य सेवक" नामक प्रकाशित होता है मूल्य ॥) वार्षिक है संस्कार वर्ष भर में २५ और वार्षिकोत्सव ४ हुवे। एक ईसाई को शुद्ध किया गया। दो ट्रैक्ट छापकर बांटे गये तीन उपदेशक सभा में काम करते हैं। और नरसिंहपुर में एक पाठशाला भी स्थापित है जिस का सविस्तर वृतान्त उचित स्थान में लिखा गया है॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई [स्थान मुम्बई]

प्रधान—श्रीमान् डाक्टर मोरेश्वर गोपालराव देशमुख बी० ए० एस० सी. एम० डी० जी० बी० | मंत्री—श्रीमान् मास्टर प्राणजीवन दास कान्हदास जी

यह सभा नाम मात्र है और इस में कुछ कार्य्य नहीं होता परन्तु आर्य्य समाज मुम्बई और वैदिक धर्म्म प्रचारिणी सभा मुम्बई के उद्योग से वैदिक धर्म का प्रचार होता रहता है। आर्य्य समाज मुम्बई के आधीन एक "दयानन्द पुस्तकालय" है जिस में प्रातः से सायं तक प्रत्येक पुरुष को पुस्तक और पत्र देखने की आज्ञा है और एक उपनिषद् श्रेणी खोली हुई है जिस में प्रति रविवार प्रातःकाल सन्ध्या और हवन यज्ञ के पश्चात् पं० नरहरि शर्म्मा शास्त्री जी उपनिषदों से शिक्षा देते हैं और एक मासिक पत्र गुजराती भाषा में निकलता है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा ब्रह्मदेश [स्थान रंगून]

प्रधान—श्रीमान् ला०बधावामलजीठेकेदार | मन्त्री—बाबू फ़क़ीरचन्द्रजी स्टेशनमास्टर

यह सभा १९०३ ई० में स्थापित हुई है। अन्तरङ्ग सभा में ११ सभासद हैं ५ समाज आधीन हैं। वेदप्रचार फण्ड खोल दिया है। १००) नगद जमा है॥

आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं और समाजों के उपदेशकों
और व्याख्यानदाताओं की सूची

नाम सभा वा समाज	उपदेशक के प्रकार	नाम
स्वतन्त्र उपदेशक	संन्यासी	स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वतीजी, स्वा० आत्मानन्द स०, स्वा० सच्चिदानन्द स०, स्वा० विद्यानन्द स० (बड़ोदा), स्वा० दर्शनानन्द स०, स्वा० नित्यानन्दजी, स्वा० लक्ष्मणानन्दजी
	ब्रह्मचारी	ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी, ब्र० ब्रह्मानन्दजी ॥
	पण्डित	पं० तुलसीराम स्वामी (मेरठ शहर), पं० यज्ञदत्त शास्त्री (सुलतानपुर ज़िला फ़र्रुखाबाद), पं० देवदत्त शास्त्री (कानपुर), पं० ज्वालादत्त शर्म्मा (फ़र्रुखाबाद)
आर्य्य प्र० नि० सभा पञ्जाब	उपदेशक	पं० दौलतराम शर्म्मा, पं० पूर्णानन्द, पं० रामरत्न, पं० सूर्यदत्त, पं० भक्तराम, पं० हरनामसिंह, पं० भोजदत्त, महाशय वज़ीरचन्द पं० ए० सोमनाथ राव (मद्रास), महा० तुलसीरामसिंधी, लाला आत्माराम, पं० ललताप्रसाद, स्वा० सत्यानन्द, स्वा० परमानन्द, पं० मेलाराम शास्त्री, पं० शम्भूदत्त, पं० सोमदेव, महा० प्रवीणसिंह, स्वा० योगेन्द्रपाल।
	व्याख्यान दाता	महाशय मुन्शीरामजी जिज्ञासु, ० रामभजदत्तजी बी०ए०, ला० देवराज, भक्त रेमलदास, ला० काशीराम वैद्य, महता जैमिनि बी०ए०, ला० बक़शीशराम, ला० शिवदयालु एम०ए०, ला० रोशनलाल बी०ए०, पं० सीताराम शास्त्री वैद्यराज, ला० सीताराम, ला० रामदास बी० ए०, ला० कर्म्मचन्द्र बी० ए०, ला० लक्ष्मणदास (रामनगर), ला० ठाकिमराय बी० ए० ॥
आर्य्य प्र० नि० सभा संयुक्त प्रदेश	उपदेशक	पं० नन्दकिशोरदेव शर्म्मा, पं० धर्म्मदत्त, पं० बसन्तलाल पं० मनुदत्त, पं० रामेश्वर, पं० मुत्सद्दीराम, पं० विष्णुदत्त पं० हनुमान प्रसाद, पं० भवदेव, पं० निरञ्जनदेव ॥
	व्याख्यान दाता	पं० भगवानदीन, बाबू श्यामसुन्दर वर्मा बी० ए०, चौधरी खूबचन्द्र, ला० कृष्णलाल, बा० कालीचरण, बा० द्वारकाप्रसाद, पं० गङ्गाप्रसाद एम० ए०, पं० ललताप्रसाद, पं० मूलचन्द्र, पं० मुरारीलाल, पं० शिवसहाय ब्रह्मचारी, पं० पद्मसिंह, पं० छुट्टनलाल स्वामी, स्वा० पूर्णानन्द, पं० गोपीनाथ उपनाम इन्द्रदत्त, पं० कैलासनाथ, पं० रामभरोसा ॥

नामसभा वासमाज	उपदेशक के प्रकार	नाम
आ० प्र० नि० स० राजस्थान	उपदेशक	पं० प्रभूदयाल
	व्याख्यानदाता	बाबू मथुराप्रसाद, बा० रघुवीरसिंह, बा० रामविलास, पं० शिवशङ्कर, बा० ब्रह्मानन्द, पं० बद्रीदत्त, पं० ब्रह्मदत्त, पं० बंशीधर एम० ए०
,, बङ्गाल बिहार	उपदेशक	पं० शिवनन्दनमिश्र, पं० वृन्दादत्त
	व्याख्यानदाता	बा० बालकृष्ण, मा० जनकधारीलाल, बा० मुरलीधर बी० ए०, पं० शङ्करनाथ, बा० गदाधरसिंह, बा० नारायणसिंह, बा० नीलाम्बर प्रसाद, पं० कृष्णलाल, बा० मिथलाशरण, बा० मनेश्वरानन्द, बा० नथनीप्रसाद शाह।
,, मध्य प्रदेश बरार	उपदेशक	पं० इन्द्रदत्त, पं० विष्णुदत्त, पं० गणपति
	व्याख्यानदाता	बा० बिहारीलाल बी० ए०, पं० बालमुकुन्द, ठा० शिवरत्नसिंह, पं० हरदत्त

नामसभा वासमाज	उपदेशक के प्रकार	नाम
मुम्बई	उपदेशक	पं० कृष्णराम इच्छाराम, पं० नरहरिशर्म्मा
कर्णाल	उपदेशक	पं० बासुदेव शर्म्मा
भर्तपुर	,,	पं० मुकुन्दराम
अजमेर	,,	पं० भागीरथजीशर्म्मा
कोटा	,,	पं० गङ्गादत्तजीशर्म्मा
डेराइस्माईल खां	,,	पं० बालकृष्ण
बदायूं	,,	पं० निरञ्जनदेव
लायलपुर	,,	पं० रुद्रदत्त
बुलन्दशहर	,,	पं० धर्मदत्त
भिरावटी	,,	पं० रुद्रदत्त
खुशगञ्ज	,,	पं० रामविलास
सिकन्द्राबाद	भजन मण्डली	ठाकुर तेजसिंह।
जयपुर	उपदेशक	पं० रामप्रताप
चँदौसी	,,	पं० हनुमान प्रसाद
मुलतान	,,	पं० सत्यव्रतशास्त्री
भवीगढ़ (अलीगढ़)	भजन मण्डली	पं० रघुनन्दन शर्म्मा
मुजफ्फरगढ़	उपदेशक	पं० ज्वालादत्त शर्म्मा
स्यालकोट	,,	पं० हीरानन्द
आगरा	,,	पं० नारायण दत्त
कोडियागंज	,,	पं० श्रीदत्त
कर्णवास	,,	पं० धर्म्मदत्त
मैलसी	,,	पं० नन्दलाल

भारतवर्ष के आर्य्य समाजों की सूचि *

पंजाब तथा सीमा प्रान्त†

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	दिल्ली ज़िला		
१	दिल्ली शहर	गिरधारीला.	भागीरथलाल
२	,, सदर	यमुनादास	नवलकिशोर
३	मुर्थल	शंकरलाल	मोलड़मल
४	बल्लबगढ़	भोलानाथ	भीकमसिंह
५	सुनपेर	प्राणसुख	सुखीराम
६	मस्जिद मोठ	हरीसिंह	मुखीराम
७	फ़रीदाबाद	श्रीकृष्णदास	चिरंजीलाल
८	सही	बरामदास	कल्याणदा०
९	महरोली	छज्जूमल	धर्मदास
१०	सुनीपत	०	०
	हिसार ज़िला		
११	हिसार	चन्दूलाल	चूड़ामणि
१२	भिवानी	लच्छीराम	जानकीप्रसाद
१३	सिर्सा	रञ्जीतराय	शिवजीराम
१४	हांसी	बधाऊमल	किशोरीलाल
१५	रत्तक	०	०
१६	बहादरां	रामानन्द	अर्जीतमल
	गुड़गावां ज़िला		
१७	गुड़गावां	चन्दूलाल	रामबिलास
१८	रेवाड़ी	दीनदयाल	मुसद्दीलाल
१९	हथीन	दुलीचन्द	रञ्जीतसिंह
२०	होडल	प्रसादीला०	देवीसहाय
२१	सोहना	प्रभुसिंह	क़ीमितराय
२२	पलवल	०	शिवलाल
२३	कासन	उजागरमल	रामजीलाल
२४	नूह	गंगासहाय	मुन्नालाल
	कर्णाल ज़िला		
२५	कर्णाल	आराम	नरसिंहदास
२६	पानीपत	खेमचन्द्र	शादीराम
२७	गुमथलागढ़	नरसिंहदास	०
२८	पून्ड्री	मिट्ठनला.	दयालाल
२९	फूसगढ़	यमुनादास	दाताराम
३०	कुंजपुरा	साहराम	बुद्धराम
३१	गगसीना	नानकचन्द	जगन्नाथ
३२	बसताली	जगराम	द्वारिकादा०
३३	खरिंडवा	यमुनादास	बूलचन्द
३४	थानेसर	काकाराम	भक्तराम
३५	हलाहर	बधावाराम	दौलतराम
३६	शाहाबाद	नागरमल	परमानन्द
३७	कैथल	मोतीराम	बसन्तलाल
३८	सीवां	मुगला	नेकीराम
३९	रादौर	घसीटूमल	आतमाराम
४०	लाडवा	उदयराम	नानूमल
४१	फतहपुर	कर्ताराम	मनसाराम
४२	घोघड़ीपुर	०	श्रीचन्द
४३	रोहतक	हरिकृष्णला०	सदानन्द

* स्थानाभाव के कारण किसी नाम के साथ कोई उपपद "लाला" "पण्डित" आदि का नहीं लिखा गया जिसको आवश्यकता हो वह नाम से पूर्व "महाशय" ऐसा शब्द नियुक्त करलें॥

† इस प्रान्त में आर्य्य समाज सम्बन्धी अन्य सभायें निम्न प्रकार हैं:—

(आर्य्य कुमार सभा) शिमला, अलीपुर, लुधियाना, सक्खर, भागोवाला, भटिण्डा, लाहौर, रामनगर। (बाल आर्य्य समाज) मोगा, दीनानगर, मुजफ्फरगढ़, किदा। (आ० डिबेटिंगक्लब) राहों, बन्नू। इनसे अतिरिक्त लाहौर म सतसंग सभा, प्रचारमण्डली और सेवक कुमार सभा, पेशावर और डेरा इस्माइलखां में संगीत नीत सभा तथा जलंधर में सत्य धर्मप्रचारिणी सभा स्थापित है॥

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	अम्बाला ज़िला		
४४	सदरअम्बाला	शिवकर्णदास	नन्दलाल
४५	जगाधरी	गंगाराम	श्यामसुन्दरलाल
४६	मुस्तफ़ाबाद	गोबिन्दराम	हमीरसिंह
४७	छप्पर	फुलेलसिंह	जयचन्द्र
४८	रोपड़	सोमनाथ	गोबिन्दराम
४९	रामगढ़	कमलासिंह	जातीराम
५०	रामसरनमाजरा	0	0
५१	मुरिंडा	0	आत्माराम
५२	बवियाल	सावनरास	0
५३	खड़	0	आत्माराम
५४	घनोली	0	हृदयराम
	शिमला ज़िला		
५५	शिमला	भंडारीराम	फ़क़ीरचंद्र
५६	कालका	कृष्णचन्द	शिवदयाल
५७	सपाटू	दौलतराम	रामरक्खा
५८	सोलन	नवलकिशोर	दुनीचन्द
	लुधियाना		
५९	लुधियाना	लालसिंह	शिवप्रशाद
६०	जगरावां	कृष्णगोपाल	कर्ताराम
६१	बागड़ियां	0	रामलाल
६२	भैनीरोड़ा	0	0
६३	जमांना	0	0
६४	कान्हढेसियां	0	0
६५	बसियां	छज्जू राम	तेलूराम
	जालन्धर		
६६	जालंधरशहर	रामकृष्ण	तेलूराम
६७	,, सदर	नारायणदास	रामचंद्र
६८	कर्तारपुर	जगतराम	ठाकुरदास
६९	नवा शहर	काशीराम	रामवर्णदास

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
७०	छिङ्गा	0	0
७१	फिल्लौर	मोतीराम	रोड़ामल
७२	बस्तीशेखदर्वेश	मयादास	उमरामल
७३	राहों	रामरत्न	शिवदत्त
	अमृतसर		
७४	अमृतसर	जैकृष्णदास	कर्मचंद्र
७५	जण्डियाला	नत्थूराम	मेलाराम
७६	महलांवाला	गेंडासिंह	गिरिधारीलाल
७७	बीरोवाल	0	0
७८	गोयंदवाल	0	गूजरमल
७९	जलालाबाद	केशरसिंह	गणपतिराय
८०	नोशहरापुन्वां	अमींचन्द	कृष्णदयाल
	लाहौर		
८१	लाहौर	रोशनलाल	शिवदयाल
८२	मियांमीर	कालूराम	रामरक्खामल
८३	शर्कपुर	देवीदयाल	सम्मनलाल
८४	क़सूर	जमादत्त	सुखदयाल
८५	खेमकर्ण	चुन्नीलाल	रामशरणदास
	होशियारपुर		
८६	होशियारपुर	0	हीरालाल
८७	हरियाना	गंडामल	गूजरमल
८८	मुकेरियां	रामशरणदास	घनैयालाल
८९	दसूहा	पूर्णचंद	मुन्शीराम
	काङ्गड़ा		
९०	धर्मशाला	लोधीराम	गंगाराम
९१	कुल्लु	ज्वालादास	नानकचन्द
९२	घिल्लौर	हरिसिंह	दुनीचन्द
	फ़ीरोज़पुर		
९३	फ़ीरोजपुरछावनी	राधाकृष्ण	गोपालसहाय

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
९४	कोटईसाखेल	गंगाराम	नन्दलाल
९५	धर्मकोट	बिन्द्राबन	ब्रह्मानन्द
९६	अबोहर	रलाराम	सुन्दरलाल
	गुजरानवाला		
९७	गुजरानवाला	केवलकृष्ण	हाकिमराय
९८	वज़ीराबाद	प्रीतमदास	नन्दलाल
९९	ख़ानकी	प्यारेलाल	जगतराम
१००	मधुरयांवाला	दयाराम	बाबूराम
१०१	शाहकोट	अमीचंद	हवेलीराम
१०२	खान्कोहडोगरां	शंकरदास	अर्जुनदास
१०३	दिलावर	मेलाराम	गोपालदास
१०४	रामनगर	गोविन्दसहाय	लछमणदास
१०५	सांगला	०	०
१०६	सरायऔरंगाबाद	०	०
१०७	जलालपुरभटियां	०	०
१०८	हाफ़िज़ाबाद	०	०
१०९	चूहड़काना	अरोड़चंद	कर्मचंद
	स्यालकोट		
११०	स्यालकोट	सुन्दरदास	गंगाराम
१११	ज़फ़रवाल	हीरालाल	रलियाराम
११२	डसका	कर्मचन्द	देवीदास
११३	बदोमली	प्रभुदयाल	नारायणदास
११४	गोयिन्दकी	परशुराम	मोतीराम
११५	जस्टर	सदानन्द	वीरभान
११६	काज़ीपिटारंग	गुलजारीमल	दीवानचन्द
११७	क़िलासोभासिंह	०	०
११८	धानांवाली	मेलाराम	हरिचन्द
११९	मुरको	प्रभुदयाल	दौलतराम
१२०	उल्लेकी	०	०
१२१	नारोवाल	बर्कतराम	सुखरामदास
१२२	बड़ागोरिया	कृपाराम	धारीराम
१२३	बडाला सिंघवां	०	हरिचन्द
१२४	अदुफ़ताह	दुनीचन्द	अहूड़ामल
१२५	उदुपिडारियां	देवीदयाल	खुशहालचंद
१२६	महधी	बधावाराम	कृपाराम
	गुरुदासपुर		
१२७	गुरुदासपुर	शामदास	दिलबागराय
१२८	पठानकोट	शालिग्राम	नेहालचन्द
१२९	बटाला	शिवसिंह	नत्थूराम
१३०	भागोवाला	बिशनसिंह	फ़कीरचन्द
१३१	बयानपुर	नत्थूराम	साधूराम
१३२	बड़ा पिण्ड	सुखरामदास	परशुराम
१३३	बोरावला	पोहलमल	दीनानाथ
१३४	छीना	सुचेतसिंह	भोलानाथ
१३५	दीनानगर	गौरीशंकर	जेठूमल
१३६	श्रीगोबिन्दपुर	हरजसराय	रञ्जीतमल
१३७	शङ्करगढ़	जयदयाल	बेलीराम
१३८	बारामंगा	बूटामल	हरिराम
१३९	शाहपुरजाजन	हाकिमराय	दौलतराम
१४०	सोहल	०	०
१४१	बड़ालाबाङ्गर	नरेन्द्रसिंह	हरिचन्द
१४२	कादियान	शरणपतिराय	अछरचन
१४३	दघोचक	हरीश्चन्द	हरिराम
१४४	करवाल	दारामल	सांवलमल
१४५	कोटली सुर्थली	०	०
१४६	घम्मनकलां	सेखेरीमल	कृपाराम
१४७	डेरानानक	०	०
१४८	घंकीवांगर	मूलचन्द	हीरानन्द
	गुजरात		
१४९	गुजरात	सावन सिंह	ताराचन्द

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१५०	फालया	0	गणपतिराय
१५१	डिङ्गा	भगतराम	निरञ्जनदास
१५२	औरंगाबाद	लखमीदास	हाकमराम
१५३	जलालपुरजट्टां	0	गणेशदास
१५४	किलादार	0	॥
१५५	लखनवाल	0	॥
१५६	मूंगरसूल	0	॥
१५७	लालामूसा	नन्दलाल	जसराम
१५८	कादिराबाद	देवीदयाल	बेलीराम
	जेहलुम		
१५९	जेहलुम	देबीसहाय	बोधराज
१६०	भवन	हरिचन्द	देवीदित्तामल
१६१	पिंडदादनखां	गुरुसहाय	रामलभाया
१६२	चकवाल	गोकलचंद	रामलभायाम.
१६३	दगडोत	लखमीदासदत्ता	नानकचन्द
१६४	अहमदाबाद	कन्हैयाला.	सीताराम
१६५	दलवाल	कर्मचन्द	हरि चन्द
१६६	खेवरा	शिवराम	ठाकुरदास
१६७	पटरीदरवेज।	ज्ञानचन्द्र	शिवराम
	मणटगुमरी		
१६८	मणटगुमरी	गोर्धन दास	मङ्गतराय
१६९	कमालिया	शादीराम	गुरदित्तामल
१७०	पाकपट्टन	जमीयतरा	नेहालचन्द
१७१	सैदवाला	जोतीराम	भीमसेन
	झङ्ग		
१७२	झङ्गमघयाना	सवायाराम	ईश्वरदास
१७३	लायलपुर	बिहारीला.	झण्डाराम
१७४	शोरकोट	कालाराम	गणेशदास

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	शाहपुर		
१७५	शाहपुर	देवीसहाय	कालकाप्रसा
१७६	खुशाब	बुधसिंह	धनपतिराय
१७७	भेरा	गोकलचन्द	कृपाराम
१७८	कोटमोमिन	रघुबरचन्द	मयादास
	मुज़फ्फरगढ़		
१७९	मुजफ्फरगढ़	कँवरकृष्ण	गङ्गाराम
१८०	खैरपुरसादात	चूहड़लाल	चेलाराम
१८१	अलीपुर	लालचन्द	तेलूराम
१८२	डेरादीनपना.	आयाराम	जैंद राम
१८३	जतोई	तुलसाराम	तुलसीदास
१८४	खानगढ़	गङ्गाराम	भक्तराम
१८५	झोगीवाला	सीतराम	जस्सूराम
१८६	सीतपुर	नौरत्नदास	मूलचन्द
१८७	कोटउद्दू	धर्मचन्द्र	टेकचन्द
	मुलतान		
१८८	मुलतानशहर	काशी राम	ईश्वरदास
१८९	,, छावनी	मदनलाल	गोपालदास
१९०	दुनियापुर	केवल राम	आत्माराम
१९१	कबीर्वाला	जगत्राम	दर्बारीलाल
१९२	मैलसी	सीतलदास	ब्रजनाथ
१९३	खरोर	0	गिरधारीला०
	डेराइस्माईल खां		
१९४	डेराइसमाईलखां	बेलीराम	तुलसीराम
१९५	भक्कर	पुरुषोत्तमदास	ठाकुरदास
१९६	टांक	टोपनदास	तख्तराम
	डेरागाजीखां		
१९७	डेरागाजीखां	जैमिनीदास	दीवानचन्द
१९८	जाम्पुर	डीडाराम	झांगीराम

स०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१९९	महतम	नेत्रराज	कालूराम
२००	कोटछत्ता	परशुराम	आत्माराम
	बन्नू		
२०१	बन्नू	दौलतराम	गुरुप्यारा
	मियांवाली		
२०२	मियांवाली	बूटामल	बोधराज
२०३	लैय्या	लीलाराम	आयाराम
२०४	ईसा खेल	हरी राम	जसराम
२०५	करोड़	गङ्गा राम	धर्मचन्द
	कोहाट		
२०६	कोहाट	चरणसिंह	हीरासिंह

स०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	रावल पिण्डी		
२०७	रावल पिण्डी	कृपा राम	गौरीशङ्कर
२०८	,, सदरबज़ार	हरदयाल	सदानन्द
२०९	मरीपर्वत	कृपा राम	कालीशरण
२१०	गूजरखां	सोभासिंह	अवतारसिंह
२११	नेडी	०	मुन्नीराम
२१२	केम्बलपुर	कामताप्र०	लछमणदास
	पेशावर		
२१३	पेशावर	रायठाकुरदत्त	सुरजन मल
२१४	नौशहरा	नन्दलाल	मङ्गलसेन
२१५	मर्दान	नन्दगोपाल	तारासिंह

देशीय राजधानी पञ्जाब

स०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	पटियाला		
२१६	पटियाला	रामेश्वरप्रसा	भगवान दास
२१७	बरनाला	नारायणदत्त	जीवाराम
२१८	बलवाना	रामरछिपाल	गुरुदित्तामल
२१९	राजपुरा	०	०
२२०	भटिण्डा	रायमक्खन लाल	जीवाराम
२२१	निर्वाना	रामशरणदा.	कृष्णचन्द
	जींध		
२२२	जींध	रघुनाथदास	श्रीपतराय
२२३	सफीदों	कंवरसेन	मुन्शीराम

स०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	मालेरकोटला		
२२४	मालेरकोट०	सावनराम	गुरुदत्तसिंह
	कपूरथला		
२२५	कपूरथला	खुशीराम	तेलूराम
२२६	सघवान	०	दौलतराम
	कश्मीर		
२२७	श्रीनगर	गोविन्दसहा	गुरुबख्शराय
२२८	जम्बू	भक्तराम	मेलाराम
	नाहन		
२२९	नाहन	कुंवरबहादुर सिंह	रामचन्द्र

स०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री	स०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
			बिलोचिस्तान				
२३०	क्वेटा	गणेशदास	हुक्मचन्द	२३१	सीबी	०	०
			सिंध देश				
२३२	हैद्राबाद	गुलाबसिंह	तुलजाराम	२३५	लसबेला	०	रामदास
२३३	सक्खर	हरीसिंह	हाकिमराय	२३६	कराची	रेवाचन्द	सीताराम
२३४	शिकारपुर	चन्दूमल	मङ्गतराय				

संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	मुरादाबाद		
१	मुरादाबाद	दुर्गाचरण	कुंवरसेन
२	चंदोसी	भगवानदास	रामस्वरूप
३	अमरोहा	बाबूलाल	ब्रजभूषनलाल
४	सम्भल	0	0
५	सुर्जननगर	भवालसिंह	ईश्वरीप्रसाद
६	रामपुर	सोहनलाल	शिवसहाय
७	टांडाअफ़ज़ल	0	0
८	सरकड़ा	मथुराप्रसाद	फ़क़ीरचन्द
९	ठाकुरद्वारा	0	0
१०	डिभाई	0	0
११	सैदनगली	गङ्गाप्रसाद	हुक्मसिंह
१२	कांठ	0	0
	बिजनौर		
१३	बिजनौर	शेरसिंह	जियालाल
१४	धामपुर	माधोशरण	रूपचन्द
१५	शेरकोट	0	0
१६	नगीना	केवलराम	ईश्वरीप्रसाद
१७	बढ़ापुरा	भूपसहाय	नारायणदास
१८	नहटौर	अनूपसिंह	0
१९	खटाई	लेखराज	छदम्मीलाल
२०	ब्राह्मणवा०	0	बलदेवसिंह
२१	नजीबाबाद	छगुनलालसिं	बालमुकुन्द
२२	मुहम्मदपु॰ देवमल	प्रतापसिंह	लेखराजसिंह
२३	चांदपुर	द्वारिकादास	शङ्करलाल
२४	बगरामपुर	0	0
२५	ताजपुर	हरदेवसिंह	बृजमोहनला॰
२६	फीना	0	0

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
२७	बाष्टा	0	0
२८	ससौना	0	0
२९	गुहावर	0	0
३०	सिसैाना	मनोहरसिंह	छज्जूसिंह
३१	स्योहारा	लालमणि	रञ्जीतसिंह
३२	नागल	फतहसिंह	द्वारिकाप्रसाद
३३	पुरैनो	हरदयालसिं.	जानसिंह
	बरेली		
३४	बरेली	बलदेवप्रसाद	बाबूराम
	पीलीभीत		
३५	पीलीभीत	जानकीप्रसाद	उमरावसिंह
	शाहजहांपुर		
३६	शाहजहांपुर	बख़्तावरसिंह	इन्द्रजीत
३७	खुदागञ्ज	भोलानाथ	रामबिलास
३८	सिंघा	रामबिलास	ब्रजविलास
३९	तिलहर	श्यामसुन्दरला.	लक्ष्मीनारायण
	बदायु		
४०	बदायु	जुगुलकिशोर	मङ्गलसेन
४१	दहगवां	टीकाराम	अङ्गनलाल
४२	गुन्नौर	गौरीसहाय	सुखलाल
४३	गोंतरा	दयाकृष्ण	गुलज़ारीला.
४४	दातागञ्ज	मुरलीधर	जगल किशोर
४५	सेरहा	शिवराजसिं॰	झाडूलाल
४६	नौनी	दुलारीसिंह	हुलासराम
४७	उझियानी	सीताराम	रामलाल
४८	बिलसी	गङ्गाराम	गेंदनलाल
४९	बिसोली	कल्याणराय	सुखलाल
५०	इस्लामनगर	नाथूराम	लछमणप्रसा

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
५१	महेशमपुर	भीष्मसिंह	शिवसिंह
५२	खैलपुर	नन्हामल	शालियाम
५३	सहसवां	कन्हैयालाल	पीताम्बरदा०
५४	शम्सपुरवहूड़	कालिकाप्र०	केशवदेव
५५	करियाली खादर	कँवरसेन	बासुदेव
५६	नटरौली	मोहनलाल	श्यामलाल
५७	रम्पुरी	गङ्गाराम	रामदयाल
५८	दहलोलपुर	घनश्यामसिं	तिलोकसिंह
५९	सनेती	खेलसिंह	वकामल
६०	रसूलपुर	0	0
६१	करिया	0	0
६२	रैजन्या	टीकाराम	भोजराज
६३	सरतौल	टीकमसिंह	नित्यानन्द
६४	सोरहा	अयोध्याप्र०	तिलोकचन्द
६५	सारहपुर	मुकुन्दसिंह	नौबतसिंह
६६	हरभरी	टीकाराम	वेदराम
६७	भिरावटी	दम्मड़सिंह	शिवसहाय
६८	असदपुर	नन्दराम	लक्ष्मीचन्द
६९	सरावल	मथुराप्रसाद	बाबूराम
७०	पिपला	शिवसिंह	बलदेव सहाय
	नैनीताल		
७१	नैनीताल	रामप्रसाद	रमादत्त
७२	रामनगरमंडी	0	0
७३	बसी रामनगर	0	0
७४	कोटा	0	0
७५	जसपुर	0	0
७६	लोहाघाट	बेणीराम	महादेवप्रसा
७७	हलद्वानी	चेतराम	चिरञ्जीलाल
	मेरठ		
७८	मेरठशहर	नेहालसिंह	घासीराम
७९	मेरठलालकु०	केदारनाथ	भवानीप्रसा
८०	मेरठसदर	विश्वम्भरस	भवानीसहा
८१	सनौता	दुर्गाप्रसाद	जीवनलाल
८२	फलावदा	टेकचन्द	ईश्वरीप्रसा
८३	भवानीकलां	भगवान्दास	हरस्वरूप०
८४	नगलाहरेरू	मथुराप्रसाद	घासीराम
८५	बिसौला	0	0
८६	दौराला	रामसिंह	टीकाराम
८७	बड़ौत	राजसिंह	चरणदास
८८	परीक्षतगढ़	तुलसीराम	छुट्टनलाल
८९	गाज़ियाबाद	0	0
९०	टिकौली	0	0
९१	खिर्वाजलालपुर	टोडरमल	गंगासहाय
९२	कपसाढ़	चंदनसिंह	हंसासिंह
९३	लावड	0	0
९४	किठौल	0	0
९५	नरैना	0	0
९६	धौलड़ी	0	0
९७	ततैना	0	0
९८	सटला	0	0
९९	भौमा	0	0
१००	अमानुल्लापुर	0	0
१०१	कुर	फूलसिंह	गंगासहाय
१०२	सलावा	मुसद्दीलाल	दौलतराम
१०३	हापुड़	0	0
१०४	डोला	0	0
	बुलन्दशहर		
१०५	बुलन्दशहर	रामप्रसादसिं	नारायणदा०
१०६	सिकन्द्राबाद	जयरामसिंह	मुरारीलाल
१०७	मुहीयुद्दीनपुरनगला	0	0

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
१०८	गुलावठी	0	0
१०९	बुकलाना	गोर्धनदास	कृष्णदेव
११०	बस्तोली	समेरसिंह	कढासिंह
१११	सीकरा	0	0
११२	दूहरा	0	0
११३	सांबनी	बुधसेन	मातीराम
११४	जहांगीराबा॰	0	0
११५	डिबाई	लखपतिसिं०	रामचन्द्र
११६	साबितगढ़	गिर्वरसिंह	हरबक्षसिंह
११७	उदयभाननगला	0	0
११८	भदौरा	0	बल्लभसिंह
११९	वेल न	0	केदारनाथ
१२०	दानपुर	0	0
१२१	पिगड्रावल	0	0
१२२	पहासू	0	0
१२३	कर्णवास	शेरसिंहवर्म्मा	शेरसिंह
१२४	आहार	सीताराम	छीतरमल
१२५	मथरावली	0	0
१२६	घुङ्गरौली	0	0
१२७	धूम	जयरामसिंह	नारायणसिंह
१२८	छतारी	0	0
१२९	पारसौल	0	0
१३०	भज	0	हीरालाल
१३१	स्याना	0	0
१३२	रौंही	चन्दनसिंह	बिशालसिंह
१३३	उठरावली	छत्रसिंह	भोजराज

देहरादून

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
१३४	देहरादून	ज्योतिःस्व०	लालसिंह
१३५	चकराता	बद्रीदत्त	गोमतीप्रसाद
१३६	बुहडपुर	कृपाराम	मुकुन्दलाल

सं०	नामसमाज	प्रधान	मंत्री
१३७	मसूरी	ज्योतीस्वरूप	रघुनाथसहा०
१३८	कालसी	नाथीराम	0

मुज़फ़्फ़रनगर

सं०	नामसमाज	प्रधान	मंत्री
१३९	मुज़फ़्फ़रन	गुरादत्तामल	बद्रीप्रसाद
१४०	बनत	0	0
१४१	खरड	0	0
१४२	कुडाना	ब्रजलाल	खूबचन्द
१४३	बलवाखेड़ी	जयमलसिं॰	दौलतराम
१४४	चौसाना	अमोलकराम	गोबर्धनदास
१४५	कैराना	0	मुसद्दीलाल
१४६	लुहारी	सन्तलाल	रामचन्द्रदयाल
१४७	कांधला	हरनारायणप्रसा	रामचन्द्रसहा
१४८	बराल	टीकासिंह	मुसद्दीसिंह
१४९	सलम	0	बिहारीलाल
१५०	बुढाना	कल्याणसिं॰	चांदनराम
१५१	घुलाना	0	0
१५२	जानसठ	0	गौरीसहाय
१५३	गढ़ीअब्दुल्लाखां	मुसद्दीलाल	उमरावसिंह

सहारनपुर

सं०	नामसमाज	प्रधान	मंत्री
१५४	सहारनपुर	हरबंशलाल	यमुनाप्रसाद
१५५	तीतरों	रघुबरदया०	केदारनाथ
१५६	खेडाअफ़ग़ानान	गणेशीलाल	सुखदेवराम
१५७	हर्पाली	देबीचन्द	हरगुलालसिं॰
१५८	रुड़की	शङ्करलाल	मुसद्दीलाल
१५९	गङ्गोह	रहतूलाल	रहतूलाल२
१६०	महेपड़	भागीरथसिं	सौदागरमल
१६१	बेहट	0	0
१६२	बहेड़ी	रतनसिंह	रतिशङ्कर
१६३	लंढौरा	मूलराज	फूलसिंह
१६४	देबन्द	हरपतराय	खेमचन्द

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१६५	कन्खल	मनवारीलाल	शेरसिंह
१६६	अम्बहटा	मंगलसेन	रिखलाल

अलीगढ़

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१६७	अलीगढ़	शिवप्रसाद	रोशनसिंह
१६८	अत्रौली	कालीचरण	रघुनाथसिंह
१६९	क़ाज़िमाबा०	०	०
१७०	हरनौट	०	०
१७१	छर्रा	०	०
१७२	कौड़ियागञ्ज	बुधसेन	बद्रीप्रसाद
१७३	जलाली	फूलूलाल	ब्रजलाल
१७४	विजयगढ़	लक्ष्मीचन्द	फूलचन्द
१७५	सिकन्दरारा०	तुलसीप्रसाद	लालबिहारीलाल
१७६	नोकनेर	०	०
१७७	दादोंन	०	०
१७८	बम्हनोई	०	०
१७९	दत्तावली	०	०
१८०	बिजौली	हुलाससिंह	शिवलाल
१८१	मुर्सान	०	०
१८२	बघराया	०	०
१८३	महँगौरा	०	०
१८४	छड़ावलीमाछवा	०	०
१८५	जरौलीडोर	०	०
१८६	खनेसर	०	०
१८७	कलाई	०	०
१८८	बरौठा	उमरावसिंह	मक्खनसिंह

आगरा

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१८९	आगरा	रामप्रसाद	कृपाशङ्कर
१९०	,, गोकुलपु०	माधोसिंह	हरचरण
१९१	फ़ीरोज़ाबाद	०	शेरबहादुर
१९२	एत्मादपुर	०	०

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१९३	कागारौल	प्राणसुख	नारायणसिंह

मथुरा

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
१९४	मथुरा	कृष्णलाल	विश्वनाथ
१९५	सारंव	०	हरलाल
१९६	हसनपुर	प्रभुदयाल	आदिराम
१९७	बेरी	०	गुलाबशङ्कर
१९८	दे मूहा	जवाहरला०	राजबहादुर
१९९	आंगई	०	भूपसिंह

एटा

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
२००	एटा	मेवाराम	रामस्वरूप
२०१	सकीट	०	०
२०२	कासगञ्ज	तोताराम	छीतरमल
२०३	नधौली	०	०
२०४	नरदौली	टीकासिंह	राजाराम
२०५	जलेसर	केशरनाथ	कृष्णलाल
२०६	रूपधनी	०	०
२०७	तृणवान	०	०
२०८	पटियाली	०	०
२०९	ऊंचागांव	०	०
२१०	अलीगञ्ज	०	०
२११	सरायअगहत	०	०
२१२	धूमरी	०	०
२१३	बिलसड़कलां	द्वारिकाप्रसाद	राजाराम
२१४	गढ़ीचंबेरी	०	०

इटावा

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
२१५	इटावा	दंगीलाल	जगन्नाथ
२१६	जसवंतनगर	गंगासहाय	रामचरण
२१७	औरय्या	बद्रीप्रसाद	अयोध्याप्रसाद
२१८	फफूंद	मातादीन	हरदयालसिंह
२१९	अजीतमल	निरंजनसिंह	मोहनलाल

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
२२०	मुढी	भद्रसेन	ज्वालाप्रसाद
२२१	जयतापुर	मातादीन	गौरीशङ्कर
	मैनपुरी		
२२२	मैनपुरी	0	0
२२३	घढियाछिङ्कोरी	गुरदयालसिंह	जंगसिंह
२३४	शिकोहाबाद	0	0
२३५	किशनी	0	ललताप्रसाद
२२६	करहल	दौलतराम	गिरवरलाल
२२७	मानकपुर	0	0
२८	कहरा	केवलसिंह	सज्जनसिंह
	एवायां राजधानी		
३२६	एवायां	श्री.फतहसिंह	गार्गीदीन
	फ़र्रुखाबाद		
२३०	फ़र्रुख़ाबाद	देवाराम	राजबहादुर
२३१	कायमगञ्ज	सन्तराम	गिरिधारीला॰
२३२	दिलखना	खन्नालाल	प्यारेलाल
२३३	रसीदाबाद	ज्वालाप्रसा॰	गजाधरप्रसा॰
२३४	भलेपुर	छुन्नीलाल	रघुबरदयाल
२३५	बिहारीपुर	0	0
२३६	कन्नौज	लक्ष्मीनारायण	देवीदीन
२३७	फतहगढ़	0	0
२३८	जलालाबाद	0	0
२३९	सिरौली	0	0
२४०	रोहली	0	0
२४?	तेराजाकट	महाराजसिंह	चक्रपाणि
२४२	सकवां	अनंतराम	मन्नूलाल
	इलाहाबाद		
२४	इलाहाबाद	गोविंदप्रसा॰	रामजीदास
२४४	,, कटरा	रामलाल	नारायणदेव

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	बांदा		
२४५	बांदा	छघलकिशोर	रामप्रसाद
	कानपुर		
२४	कानपुर	आनन्दस्वरूप	ज्वालाप्रसाद
२४७	बाडाअकबरपुर	बद्रीदीन	गङ्गाचरण
२४८	सचेंडी	0	0
२४९	मूसानगर	0	0
२५०	बिठूर	रामेशचंद	चंद्रिकाप्रसाद
२५१	शेवलीपुर	0	0
२५२	ठ[illegible]रा	0	0
	फ़तहपुर		
२५३	बिंदकी	0	0
२५४	असोथर	0	0
२५५	सिमौरी	कन्हैसिंह	शिवरत्नसिंह
	झांसी		
२५	झांसी	शंकरसहाय	नानकचन्द
	जालौन		
२५७	कालपी	शिवबख्शराय	शिवचर्णला॰
	बनारस		
२५८	काशी	जगदेवप्रसाद	माधोप्रसाद
	मिर्जापुर		
२५९	मिर्जापुर	0	संतप्रसादसिंह
२ 0	पचरावां	मक्खनलाल	रामनाथ
२ १	रामगढ़	0	0
	गोरखपुर		
२ २	गोरखपुर	ठाकुरप्रसाद	हरिहरदत्त
२ ३	भागलपुर	रजूप्रसाद	मातादीनला
२ ४	देवरिया	घनश्यामदा॰	विंध्याचलप्र

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	बस्ती		
२६५	बस्ती	आसाराम	ललताप्रसाद
२६६	मंहदावल	कालीचरण	०
	लखनऊ		
२६७	लखनऊ गणेशगंज	रामदुलारे	बेणीप्रसाद
२६८	,, शहर	शीतलसहाय	श्रीशचंद्रबोस
	हरदोई		
२६९	हरदोई	अयोध्याप्रसा	हरविलास
२७०	नीर	रत्नसिंह	भवानीसिंह
२७१	शाहाबाद	ब्रजकिशोर	रामविलास
२७२	पिहानी	मिश्रीलाल	बलदेव
२८३	उधरनपुर	दिलासाराम	शिवसागर
२७४	थमरवां	किदारनाथ	अवधबिहारीला.
२७५	मडसा	टीकमसिंह	नोखेसिंह
२७६	गोकुलबेहट	जोधनसिंह	हीरालाल
२७७	पलिया	तिलकसिंह	ओमानसिंह
	खेरी		
२७८	लखीमपुर	राजानीलकंठ छत्रजशाह	सीताराम
२७९	मुहमदी	लछमणप्रसाद	कन्हैयालाल
	रायबरेली		
२८०	रायबरेली	गौरीशंकर	अदितप्रसाद

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	उन्नाव		
२८१	उन्नाव	जानकीप्रसा	रामभरोसा
२८२	नवाबगंज	रामगोपाल	मातादीन
२८३	पाठकपुर	०	०
	सीतापुर		
२८४	सीतापुर	मुरलीधर	हरगोबिंद
	ग़ाज़ीपुर		
२८५	ग़ाजीपुर	०	०
	फैज़ाबाद		
२८६	फैजाबाद	गोकलचंद	नौरङ्गमल
२८७	टांडा	बद्रीदत्त	सर्जू प्रसाद
२८८	कुम्भिया	रामेश्वरप्रसा	हरबख़शसिंह
	गोंडा		
२८९	गोंडा	०	ग्यासीलाल
	बहरायच		
२९०	बहरायच	हरगोबिंदप्र०	अमीचन्द
	जौनपुर		
२९१	मछलीशहर	लालबहादुर	भगवतीप्रसा०
२९२	हुहँरी	०	०
	प्रतापगढ़		
२९३	प्रतापगढ़	रघुबंशसहा०	श्यामसुन्दर
	बुंदेलखंड		
२९४	नौगाव	भगवन्तसिंह	रामचन्द्र

राजस्थान

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	अजमेर		
१	अजमेर	पद्मचन्द	मथुराप्रसाद
२	ब्यावर	चिमनसिंह	उमरावसिंह
३	नसीराबाद	०	०
	जयपुर		
४	जयपुर	श्यामसुन्दर	रामलाल
५	सेठ का रामगढ़	०	०

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	भावलपुर		
६	ओच	सुखराम	परमानन्द
७	रोभांवाली	रामेश्वरीदास	बिशुनसिंह
८	अहमदपुर	0	मोहनलाल
	जोधपुर		
९	जोधपुर	खेमकर्णदास	मुन्नीलाल
१०	खर्वा	0	0
११	सोजत	गिरधारीलाल	मयाराम
	बीकानेर		
१२	चूरू	0	0
	मेवाड़		
१३	उदयपुर	मनोहरसिंह	शकुनचन्द
	शाहपुरा		
१४	शाहपुरा	श्रीमानराजा नाहर सिंह बहादरजी	पं०हमीरमल
१५	नीमच	मुल्तानमल	मांगीलाल

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	मालवा		
१६	इन्दौरछावनी	शम्भूलाल	जगन्नाथ
१७	उज्जैन	0	0
१८	देवास	गोर्धनलाल	दौलतसिंह
१९	धार	महीपतिराम	बिहारीलाल
	कोटा		
२०	कोटा	श्रीमान राजा बिजय सिंह बहादुर	मथुराप्रसाद
	ग्वालियर		
२१	ग्वालियरलशकर	ज्योतिस्व०	हरप्रसाद
२२	मुरार	देवीप्रसाद	दीनदयाल
२३	बजरङ्गगढ़	राधाराम	देवीचरण
२४	महू	बलदेवसिं०	कुन्दीलाल
	भरतपुर		
२५	भरतपुर	कुञ्जलाल	हीरालाल
	जोबनेर		
२६	जोबनेर	कर्णसिंह	गुरुलाल

मध्य देश तथा विदर्भ

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	जबलपुर		
१	जबलपुर	रंगोरामचंदभट्ट	गोविंदस्वा.मुदल्यार
२	मुड़वारा	बालाप्रसाद	शिवप्रसाद
	नरसिंहपुर		
३	नरसिंहपुर	नन्हेसिंह	चरणदास
४	मुहपानी	नारायणदास	मोतीलाल
५	पलोहाकलां	काशीराम	भोलानाथ
६	सांई खड़ा	हरलाल	बिहारीलाल
७	पिपरिया	मानसिंह	0

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	होशंगाबाद		
८	होशङ्गाबाद	नारायणसिंह	सूरतसिंह
९	हरदा	कृष्णाराव	नन्दकिशोर
१०	सुहागपुर	काशीराम	जयमङ्गल
११	सेमरीहरचंद	शिवलाल	लक्ष्मीनारायण
१२	अजनास	आनन्दराव	ग.गोशशर्म
	भूपाल		
१३	भूपाल	बिहारीलाल	गिरजाप्रसा
	नीमाड़		
१४	खडुवा	चेतराम	मङ्गलप्रसाद

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
१५	सनावद	घनश्याम	कालूराम
१६	हर्सूद	अर्जुनसिंह	हीरालाल
१७	बुर्हानपुर	हरिकृष्ण बजाज	हरिकृष्ण अरजीनवीस
१८	मंझी	०	०
१९	रुस्तमपुर	०	०
२०	सुलतान	०	०
	सागर		
२१	सागर	रावठाकुरमहाराज सिंह	कामताप्रसाद
	सीवनी		
२२	सीवनी छपारा	चन्दीप्रसाद	केवलप्रसाद
	दिवारी		
२३	सीवनी	छोटेलाल	शिवप्रसाद
	रायपुर		
२४	रायपुर	हरद्वारीलाल०	बुद्धूलाल
२५	बलोदाबजार	०	सूर्यबलि
२६	नान्दगांव	०	रामलाल देवकरण
२७	डूंगरगढ़	०	मथुराप्रसाद
२८	खैरागढ	मूलचन्द	प्रद्युम्नसिंह

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	बिलासपुर		
२९	बिलासपुर	शालिग्राम	बलदेवप्रसा०
	सम्भलपुर		
३०	सम्भलपुर	महादेवकन्हैयाला०	मुरलीधर
	नागपुर		
३१	कामठी	देवीदीन	रामदयाल
	वर्धा		
३२	वर्धा	शिवविलास	गणपतराव
	बालाघाट		
३३	बालाघाट	०	ओंकारदास
	अमरावती		
३४	अमरावती	बलदेवसिंह	कुञ्जविहारीला०
३५	चांदूर	चन्द्रभान	बैजनाथ
	अकोला		
३६	अकोला	रंछोरदास	धनजी गुप्त
३७	हविरखेडरुपराव	राधाकृष्ण	वेङ्कटराव
	खामगांव		
३८	खामगांव	शिवप्रसाद	बुवन्नावेक्य

दक्षिण प्रान्त निज़ाम राजधानी

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
१	हैदराबाद	केशवराव	योगानन्द
२	सिकंद्राबाद	गोपालराव	रङ्गनाथ
३	धारूढ	गोकलप्र०	कुन्दनलाल

मुम्बई प्रदेश

सं०	नाम समाज	प्रधान	मंत्री
	मुम्बई		
१	मुम्बई	प्राणजीवन	राम०जी०द्वि०
	गुजरात		
२	सूरत	तिलोकचंद्र	गणपतिराम
३	नागधारा	शिवाभाई रवजी	प्रयागजी दाताभाई
४	बालोड़	०	नारायण श०
५	येवला	०	०

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
६	उगत	हीराभाई	भुरारजीहीरावर्मा
७	अहमदाबाद	जयेठालाल	मोहनलाल
८	बड़ोदा	गणपति सिंह	रूपसिंह
९	भड़ोच	हरिजीवनजी	शिवकर्णजी
१०	बीजलपुर	जीनाभाई देवाभाई	जीनाभाई भीमजी
११	खलीखच	०	०
१२	खेरसद	०	०
१३	दादरा	०	०
१४	डोकरा	०	०

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	काठियावाड़		
१५	भावनगर	त्रिभुवनदास भोलाभाई	मुन्नीलाल रघुभाई
१६	वीरपुर	कुंवर रामसिंह	०
१७	जामनगर	प्राणजीवन नारायणडाक्टर	सेठपोपतला०
१८	रायपुर	मोतीला० कुवेर दा०	भवानीशङ्कर
१९	राजकोट	प्राणजीवन नारायणडा.	कल्याणजी बनारसी

मद्रास प्रदेश

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	मद्रास		
१	मसुलीपट्टम	दोरास्वामी	रामशास्त्रलु
२	विज़ीगापट्टम	रायबोसारा०	ग.नी कानाकासोबाई
	मैसोर		
३	बङ्गलोर	ठाकुरसिंह वर्मा	पी०एम०शेषगिरिशर्म्मा

बंगाल—बिहार

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	कलकत्ता		
१	कलकत्ता	रायरलाराम	महावीर प्र०
२	भवनीपुर	०	०
	पटना		
३	दानापुर	जनकधारीलाल	गुलाबचंदला०
४	खगोल	०	बिहारीलाल
५	पटना	नारायण सिंह	शिवनन्दनप्र
६	पटनापुर्बदरवाला	गोकरणला०	रामेश्वरप्रसा
७	बांकीपुर	नीलामबरप्र०	विष्णुदयाल
८	हसनपुर	गौरीशरणसिं	शिवखिलावनसिं.
९	नोबतपुर	रघुनारायण	सीताराम
१०	बिहार	०	०
११	दाऊदपुर	०	०
१२	बाढ़	विशुनप्रसा०	गणेशीलाल
१३	कोठवां	मिथिलाशर्मा	श्यामसुन्दर
१४	मनेर	कृष्णलाल	ब्रजमोहनप्र०
१५	बेला	अम्वरसिंह	नंदलालसिंह
	शाहाबाद		
१६	आरा	हरप्रसाद	हरसू प्रसाद
	मुंगेर		
१७	मुंगेर	तारणीप्रसा०	मुरलीधर
	रांची		
१८	रांची	बालकृष्णसहाय	जादोनन्दनसिंह
	लुहारडगा		
१९	लुहारडगा	सुग्रीवसहा०	हरिहरसिंह

सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री	सं०	नामसमाज	प्रधान	मन्त्री
	बर्दवान				दार्जिलिङ्ग		
				२३	दार्जिलिङ्ग	माधोप्रसाद	कालीचरण
२०	रानीगंज	श्रावनसिंह	0		मुज़फ्फ़रपुर		
२१	असंसोल	0	0	२४	हाजी.पुर	मजलिसस०	गलजारसहाय
	सारन				मेमनसिंह		
२२	सीवान	रामबिहारी	प्रयागराम	२५	मेमनसिंह	0	0
			ब्रह्मदेश				
	उत्तर ब्रह्मा				दक्षिण ब्रह्मा		
१	मेमयो	सा०वासुदेवनै:	रामस्वरूपसिंह				
२	मुक्तचिना	0	0	४	रंगून	मक्खनलाल	0
३	सोगांग	शालिग्राम	बघानामल	५	टाटमो	सरनदास	रङ्गीलाल
			आसाम				
१	गोहाटी	मदनलाल	मधुसूदन		0	0	0
			चीनदेश				
१	इपोह १	रामजीदास	कृपाराम		0	0	0
			पूर्वी अफ़रीका				
१	नरोबी	इन्द्रसिंह	बद्रीनाथ	३	नकोरो	रामधन	लालचन्द
२	बोई	शालिग्राम	दौलतराम	४	कोर्टफ्लारन्स	फकीरचंद	0
			दक्षिणी अफ़रीका २				
१	दर्वन (इलाका नटाल)		गङ्गाराम		0	0	0

१ इलाका "पेराक" Via "पेनांग" २ मम्बासयुगण्डा रेलवे

आर्य्य सामाजिक तथा अन्य अनाथालय

[१] श्री मद्दयानन्द अनाथालय अजमेर

यह अनाथालय सन् १८६५ ई० में आर्य्य समाज के संस्थापक श्री महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की स्मार्क में आर्य्यसमाज अजमेर ने भारतवर्ष के विशेष कर राजपूताने के अनाथों के पालन पोषणार्थ स्थापित किया है— इस समय राजपूताने में अनाथों के पालनार्थ यही एक बड़ा अनाथाश्रम है। श्रीमान् औनरेबल चीफ़ कमिशनर साहब बहादुर अजमेर मेरवाड़ा ने भी आज्ञा दी है कि सर्ब हिन्दू अनाथ बालक इसी अनाथालय में भेजे जाया करें। इस्का प्रबन्ध एक सभा के आधीन है कि जिस्के सभासद आर्य्य समाज अजमेर के सभासद तथा अन्य अनाथालय के सहायक प्रेमी सज्जन महाशय भी हैं जिस्के प्रधान मुं० मिट्ठनलालजी वकील मन्त्री पं० बंशीधर जी शर्म्मा एम० ए० वकील और अधिष्ठाता पं० रघूनन्दन जी शर्म्मा हैं। ता० ३१। ८। ०३ को २१० अनाथ बालक उपस्थित थे जिन में १३० कुमार और ८० कन्यायें थीं— और १०६०३॥=)। नक़द थे जिस्में से १००००) फ़िक्स डिपोज़िट अलांयस बङ्क शिमला (अजमेर) में जमा हैं। बालक तथा बालिकाओं के निवास के लिये दो मकान अलग २ हैं जिनपर १३३८०) लगा है इस के अतिरिक्त अनुमान ६०००) की और भी जायदाद है कि जिस्का किराया आता है इस समय स्थिर आय अनुमान २८० और व्यय अनुमान ८३१) मासिक है। प्रत्येक अनाथ को पढ़ना अत्यावश्यक है। दश वर्ष से अधिक वय वाले बालकों को दरी, निवार, कपड़ा, क़ालीन, मोज़े आदि बुन्ना, कपड़े सीना और बढ़ई का काम भी सिखाया जाता है। खाती और कपड़े के काम के अतिरिक्त अन्य काम अनाथ स्वयम् करते हैं। इसके प्रबन्धकर्ता बा० रामविलास जी शारदा हैं। अनाथालय के साथ एक छोटा सा औषधालय भी है। इस समय अनाथालय में निम्नलिखित कर्मचारी हैं १ सुप्रेण्टेण्डेण्ट १ असि० सुप्रे० १ पण्डितानी २ पण्डित १ डाक्टर १ क्लिर्क।

देश हितैषी महाशयों को इस परोपकारी कार्य्य की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये॥

[२] आर्य्यअनाथालय फ़ीरोज़पुर छावनी—यह अनाथालय आर्य्यसमाज फ़ीरोज़पुर के उद्योग से सन् १८९८ से चल रहा है और "रजिस्टर्ड" है, सितम्बर १९०३ के अन्त में १२० कुमार और १४१ कन्या सब २६१ अनाथ उप-

स्थित थे। इसमें एक कन्या पाठशाला है जिसके लिये पृथक् अध्यापक नियत हैं, एक "हस्पताल" बालकों की चिकित्सा के लिये है अनाथालय का प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन है जिसके प्रधान बा० काशीराम जी वकील और मन्त्री ला० विष्णुसहाय जी हैं। इस वर्ष के भीतर ६० अनाथ इस अनाथालय में प्रविष्ट हुए और १२५ प्रथक् किये गये जिनका ब्योरा इस प्रकार है कि १८ भाग गये, ७ का विवाह होगया, ४ वारिसों को दिये गये। ० छोड़ दिये गये, और ५१ अन्य अनाथालयों में भेजे गये॥

१६०२ में समस्त आय १३८३१॥)८ और व्यय १४४२१॥≈)४ हुआ। अनाथालय में यह "कारखाने" हैं जिनमें बालक काम सीखते हैं, कपड़ा बुनना, गोटा बनाना, कालीन बुनना, जुर्राब बुनना, दरी बनाना, और बढ़ई का काम अनाथालय के लिये मकान की अति आवश्यकता है देश निवासियों को अनाथ बालकों की दशा पर दया करके अवश्य सहायता देनी चाहिये॥

(३) आर्य अनाथालय बरेली—यह अनाथालय आ० स० बरेली के उद्योग से सन् १८८४ से चल रहा है। प्रबन्ध एक सभा के आधीन है। सरकार द्वारा प्रविष्ट अनाथों को सरकार २॥) मासिक प्रति अनाथ खानपानादि के लिये देती है। (सविस्तर वृत्तान्त प्राप्त नहीं हुये)

[४] श्रीमद्दयानन्द अनाथालय आगरा—यह अनाथालय आर्य्य समाज आगरा के उद्योग से अप्रैल सं० १६०० ई० से स्थापित है। इस समय ३० अनाथ हैं, दरी क़ालीन आदि बुन्ना सिखाया जाता है। खर्च चन्दे से चलता है, पण्डित जयीराम उपदेशक हैं।

[५] कन्या अनाथालय जालन्धर शहर—यह अनाथालय २६ अगस्त १८६७ से स्थापित है गतवर्ष में २५ कन्या थीं (इस वर्ष कोई वृत्तान्त प्राप्त नहीं हुआ)

[६] वैश्य अनाथालय मेरठ शहर—यह अनाथालय वैश्य सभा के अधिकार में दिसम्बर १८६७ से जारी है। १ सितम्बर १६०३ ई० को ६५ (४२ कुमार और २३ कन्या) अनाथ थे। ला० रामानुजदयाल जी मन्त्री और ला० मोहनलाल जी मेनेजर हैं, इसका मकान बन रहा है जिस पर अद्यावधि १५०००) भूमि की लागत के अतिरिक्त ख़र्च हो चुका है। आय २०६६≈)६ और व्यय ३४२॥) हुआ—मकान का आय व्यय और मुस्तकिल आमदनी इस से भिन्न है। शिक्षा

और प्राइमरी तक दी जाती है, बढ़ई, दरी निवार बुन्ने, दरज़ी और नक्शा कशी का काम सिखाया जाता है इन में कोई न कोई काम प्रत्येक अनाथ को सीखना आवश्यक है ताकि बड़ा होने पर अपनी जीविका कर सके। बालकों को धार्म्मिक शिक्षा भी दी जाती है और यज्ञो पवीत संस्कार कराया जाता है॥

[७] विक्टोरियाअनाथालय भरतपुर—यह अनाथालय श्री महाराणी विक्टोरिया की यादगार में राज्य की सहायता से खोला गया था। राज्य की ओर से एक मकान ५०००) का अनाथाश्रम के लिये मिला हुआ है, इसका प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन है जिसके प्रधान रायबहादुर मुं० सोहनलाल साहब सेक्रेटरी कौनसल राज्य भरतपुर और मन्त्री बाबू उदयराम जी स्कूल इन्सपेक्टर हैं। पण्डित मुकुन्दराम शर्म्मा पूर्व आर्य्य उपदेशक मेनेजर हैं। इस समय २५ अनाथ (४ कन्या और २१ कुमार) उपस्थित हैं आय १५१) और व्यय ११०) मासिक है, अनुमान १४००) नक़द पूंजी मौजूद है और ७०) मासिक के लगभग राज्य की ओर से प्राप्त होता है॥

[नोट] उपर्युक्त अनाथाश्रमों के अतिरिक्त निम्न लिखित स्थानों में भी हिन्दुओं के अनाथ बालकों के लिये अनाथालय मौजूद हैं परन्तु उनके वृतान्त प्राप्त नहीं हुए अतः विस्तार पूर्वक नहीं लिखा गया:—

शाहपुरा राज्य, कानपुर, गोरखपुर, अहमदाबाद (बरेली), अमृतसर, लाहौर, भिवानी, पटियाला, कोहाट, जेहलुम, लखनौ॥

भारतवर्षस्थ आर्य्य समाज सम्बन्धी संस्कृत पाठशालादि

[१] गुरुकुल कांगड़ी (हरद्वार)—यह गुरुकुल कांगड़ी ग्राम में जो मुं० अमनसिंह जी नजीबाबाद निवासी ने इसी हेतु आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब को जून १९०१ ई० में दान किया था २४ मार्च १९०२ ई० से स्थापित है। यह ग्राम कनखल के सामने गङ्गातट से अनुमान १०० गज़ के अन्तर से स्थित है। समस्त भूमि ११६६ बीघा पक्का १५०००) के मूल्य की है। गतवर्ष की आय १९८३॥)६ है, जलवायु अति सुन्दर और गुरुकुल के लिये सर्व प्रकार से उचित है। प्रथमवार ५० ब्रह्मचारी गुरुकुल में प्रविष्ट हुए थे, इस वर्ष २१ नये ब्रह्मचारी

प्रविष्ट होकर कुल ७? हो गये प्रति श्रेणि की संख्या इस प्रकार है :- प्रथम में १६, दूसरी में २४, तीसरी में १८, चौथी में १० और पांचवी में ३ ॥

स्थान—कनखल के बाज़ार से चलकर गङ्गा की नीलधारा के नौकासेतु से उतर कर नजीबाबाद की कच्ची सड़क पर एक मील अन्तर से पूर्व की ओर काङ्गड़ी ग्राम है जिसकी बोई हुई भूमि पर्वत की तली तक फैली हुई है, पश्चिम की ओर एक उच्च स्थान पर गुरुकुल के मन्दिर दृष्टि आते हैं जहां से १०० गज़ की दूरी पर गङ्गा की धारा बहती है। तट पर खुला बालू का मैदान है जिस में ४०० बालक खेल सकते हैं धारा के परलेतट पर गुरुकुल भूमि से भी किञ्चित् उच्च स्थल है वर्षा काल में चहुं ओर जल फैल जाने से यह स्थान एक टापू सा बन जाता है और इसी कारण उसका नाम "आनन्द वाटिका" रक्खा गया है। जब गङ्गा उतर जाती है तो विद्यार्थी उसी ओर शौचादि जाते हैं और "आनन्द वाटिका" में खेलते हैं ॥

जलवायु—इस स्थान का जलवायु अत्युत्तम है। अत्युष्ण दिनों में भी ४ बजे अपराह्न से यहां का पवन शीतल हो जाता है वर्षाकाल में मशक (मच्छर) नहीं होते जलवायु के विषय में वर्तमान वर्ष गतवर्ष की अपेक्षा उत्तम रहा क्योंकि जङ्गल बहुत कट गया है और आगामी वर्ष जब दूर तक जङ्गल काटा गया तो "मलेरिया" का चिन्ह मात्र भी यहां न रहेगा ॥

कालविभाग—तीसरी और चौथी श्रेणी के विद्यार्थी ४ बजे और पहली और दूसरी के ४॥ बजे सवेरे उठकर अपने २ अधिष्ठाताओं के साथ शौच के लिये बाहर जाते हैं तत्पश्चात् सब विद्यार्थी और उन के अधिष्ठाता गङ्गातट पर व्यायाम करते हैं पुनः कुछ काल ठहर कर स्नान और संध्या करते हैं और ६॥ बजे आश्रम में वापिस आकर हवन करते हैं तदनु दूध पीकर ७ बजे सब अपनी २ श्रेणी में पढ़ने के लिये चले जाते हैं, ६॥ बजे तक पढ़ाई होती है तत्पश्चात् भोजन करके विद्यार्थी कुछ काल विश्राम करते हैं पुनः ११॥ बजे से ५ बजे तक पढ़ाई होती है ३ बजे ब्रह्मचारी पुनर्बार दूध पीते हैं जिसके लिये उनको २० मिनट का अवकाश दिया जाता है ५ बजे फिर शौच के लिये बाहर जाकर व्यायाम स्नान संध्या करते हैं और लौट कर हवन करते हैं और ७॥ बजे भोजन करके ६ बजे रात्रि को सो जाते हैं ॥

अध्यापक और अधिष्ठाता—इस समय गुरुकुल में अध्यापक इस प्रकार हैं (१) श्री पं० काशीनाथ जी शास्त्री काशीनगर के प्रसिद्ध वैयाकरण और

प्रदर्शनी (२) पण्डित गङ्गादत्त जी शास्त्री (३) पण्डित भीमसेन जी (४) पण्डित विष्णुमित्र जी (५) पण्डित यज्ञेश्वर जी ज्योतिषी (६) पण्डित पद्मसिंह जी गणित अध्यापक (७) मुख्य पण्डित गणेश अनन्त धारेश्वर बी० ए० (छुट्टी पर) (८) पण्डित भक्तराम जी श्रीमान् महाशय मुन्शीराम जी मुख्याधिष्ठाता और श्रीमान् महाशय खुशीराम जी सहकारी अधिष्ठाता हैं ॥

कर्मचारी—रसोई और अन्य सेवादि के लिये चार रसोइये और ५ कहार हैं, एक चौकी दार रात्रि में पहरा देने और डाक लाने को नियत है और दो चपरासी विद्यालय और मुख्याधिष्ठाता के दफ़्तर के लिये, छः नौकर बाग के लिये और ५ गोशाला और छकड़ों पर नियत हैं ॥

भोजन प्रबन्ध—प्रतिदिन १२ छटांक पक्का दूध प्रत्येक ब्रह्मचारी को चाहे किसी आयु का हो दिया जाता है भोजन में एक दाल दो भाजी (शाकादि) हर एक ब्रह्मचारी को एक छटांक घृत डाल कर दी जाती है, सप्ताह में एक वा दो बार मोहन भोग खीर अथवा मीठे चावल बनते हैं कभी २ सायं समय दूध के साथ कुछ मिठाई भी दी जाती है। लाल मिर्च, खटाई, पलाण्डु (प्याज) और अन्य हानिकारक मसाले नहीं वर्ते जाते शुद्ध जल पीने को दिया जाता है निदान भोजन की प्रत्येक वस्तु और जल की भी पूरी २ सावधानी की जाती है॥

चिकित्सा प्रबन्ध—"औषधालय" के लिये एक पृथक् कमरा है। १ नवेम्बर सन १९०३ ई० से डाक्टर छदम्मीलाल काम करते हैं जिनको ४१ वर्ष की नौकरी के पश्चात् सर्कार से पिन्शन मिली है ॥

निवास स्थान—दो बड़े अहाते बनाये गये हैं जिनके चारों ओर खम्भे लगे हैं एक अहाता ३००×२५० फुट है जिसमें अतिथियों और गुरुकुल के सम्बन्धि जनों के परिवार के लिये छप्पर डाले गये हैं और इससे कुछ दूरी पर आगे की ओर गुरुकुल के मन्दिर हैं जो ३००×२२० फुट के अहाते में हैं उनके बाहर एक नया कूप बनवाया गया है जिसका जल बहुत उत्तम और मीठा है इस में गुरुकुल के विद्यार्थियों, अधिष्ठाताओं, कर्मचारियों, डाक्टर और मुख्य अधिष्ठाता के रहने के मकान, पाठशाला, शयन करने के कमरे, भण्डारा, और पाठशालायें हैं। अहाते के मध्य में एक सुन्दर ४० फुट व्यास की अष्टकोणी यज्ञशाला है सारे मकान ऊंची कुर्सी देकर सम बनाये गये हैं और सब में बरामदे हैं। वर्तमान वर्ष में एक कमरा ७०×१५॥ और तीन कमरे ५२×१५ फुट ब्रह्मचारियों के निवासार्थ और दो कमरे पढ़ाई के लिये १४×२०, १४×२६ फुट नये

बनाये गये हैं तथा भण्डारे का मकान भी बड़ा किया गया है और एक नया पक्का कमरा बीमारों के स्नानादिक के लिये और दुग्धरक्षणार्थ बनवाया गया है। इस के अतिरिक्त एक छपा हुआ मकान "खरास" के लिये बनाया गया है जहां आटा पिसता है। बाग़ अनुमान १४ बीघे पक्की भूमि में तय्यार हो रहा है ८ बीघे में फलदार वृक्ष लगाये गये हैं। ३ कुएं और बनाने का विचार है॥

गुरु दक्षिणा—प्रथम समुदाय के ब्रह्मचारियों से (जिन की पढ़ाई १२ वर्ष की है) १०) मासिक और दूसरे समुदाय से (जिसकी १३ से १८ वर्ष तक पढ़ाई होती है) १५) मासिक लिया जाता है, इसमें भोजन, वस्त्र, दूध, असबाब और सारा व्यय सम्मिलित है॥

श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा के पास इस निमित्त इतना धन हो जाने पर कि जिस के व्याज से सम्पूर्ण व्यय पूरे हो सकें किसी विद्यार्थी से कुछ नहीं लिया जावेगा, अतएव गुरुकुल को सहायता देना सब सज्जन पुरुषों का काम है॥

गुरुकुल वार्षिकोत्सव—प्रथम वार्षिकोत्सव ८ से १२ मार्च १९०३ तक बड़ी धूमधाम से हुआ था जिसमें कई सहस्र पुरुष स्त्री सम्मिलित हुए थे और अपील पर २००००) के लगभग रुपया जमा हुआ था॥

(२) वैदिक पाठशाला गुजरानवाला—यह शाला सन् १८९५ ई० से आर्य्य प्रतिनिधि पञ्जाब की ओर से स्थापित है एक छात्रशाला (बोर्डिङ्गहौस) भी खोली हुई है। सम्प्रति १५ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। पं० रलाराम जी अध्यापक हैं, शिक्षा आर्ष ग्रन्थों की दी जाती है। मुं० नारायणकृष्ण जी प्रबन्ध कर्त्ता और महाशय रलाराम जी अधिष्ठाता हैं। समस्त व्यय अनुमान १००) मासिक है कतिपय विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति (वज़ीफ़ा) भी दी जाती है। आज तक इस पाठशाला से ४ उपदेशक तय्यार होकर निकले हैं जो सभा का काम कर रहे हैं॥

(३) गुरुकुल सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर—यह गुरुकुल ९ मार्च १८९८ ई० से सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन के निकट चल रहा है। शिक्षा स्वामी जी कृत पाठ विधि अनुसार दी जाती है। भोजन छादन और पुस्तकादि का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से है। सम्प्रति २५ ब्रह्मचारी हैं। वार्षिक व्यय ३१००) है। गुरुकुल के मकान २०००) की लागत के तय्यार हैं और अधिक बनाये जा रहे हैं। गुरुकुल कमेटी के २४ मेम्बर हैं। ठाकुर जयरामसिंह जी प्रधान, पं० मुरारीलाल शर्म्मा मन्त्री और पं० गङ्गासहाय जी देवठा निवासी कोषा-

छपगये हैं। गुरुकुल के नियम छप गये हैं मँगाने पर मिल सकते हैं। ब्रह्मचारियों की निगरानी श्रीमान् स्वामि मङ्गलदेव जी (जो आगरा अनाथालय में काम कर चुके हैं जिनके शुभगुणों से आर्य्य पब्लिक और आगरा निवासी विशेष कर परिचित हैं) करते हैं। मैनेजर पं० नरदेव शर्म्मा और उपदेशक पं० नन्दलाल जी व्यास रायकोट (लुधियाना) निवासी है उपदेशक क्लासके अध्यापक पं०गोविन्दसहाय जी ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर निवासी एक प्रसिद्ध विद्वान हैं। उपदेशक क्लास के विद्यार्थियों ने आसपास के ग्रामों में १९६ संस्कार सं० १९०३ में कराये जिनमें ६०३।।।)३ दान मिला और ३०० मन अन्न इससे भिन्न। सितम्बर १९०३ ई० में गुरुकुल का तीसरा वार्षिकोत्सव धूमधाम से हुआ जिस में अपील पर ३३००) जमा हुआ॥

[४] **गुरुकुल बदायूं**—यह गुरुकुल २५ अप्रैल १९०३ ई० को श्रीस्वामि दर्शनानन्द सरस्वती जी ने खोला है। इस के लिये पं० रामजीलाल उपप्रधान आर्य्य समाज बदायूं ने ८ बीघा भूमि सूर्य्यकुण्ड पर जो एक अच्छा स्थान है और बदायूं से एक मील पर है दान दी है। जून १९०३ ई० में २३ ब्रह्मचारी थे, इसके साथ एक उपदेशक क्लास भी खोली गई है जिस में ८ विद्यार्थी हैं। इसका प्रबन्ध एक सभा के आधीन है जिसके प्रधान राय गोबर्धनदास साहिब रईश ओनरेरी मैजिस्टेट और मंत्री मु० कन्हैयालाल जी रईश सहसवान हैं। अगस्त के अन्त तक ६०००) के लगभग आमदनी हो चुकी है पं० जीवाराम जी अध्यापक हैं॥

[५] **बलदेवार्य्य संस्कृत पाठशाला मुरादाबाद**—यह शाला ८ बर्ष से आर्य्यसमाज के आधीन चलरही है, श्रीस्वामि जी कृत पाठविधि अनुसार शिक्षा दी जाती है, जीवारामजी मुख्यअध्यापक और ३ अन्य अध्यापक हैं। पूंजी ३१ अगस्त १९०३ को ७३०४॥≈)३ थी। गतवर्ष में ६०३॥) आय और ७८०।≈) व्यय हुआ, विद्यार्थियों की संख्या १२० है, पाठशाला के साथ एक "बोर्डिङ्ग हौस" भी है, जिसमें ६ विद्यार्थी रहते हैं। साहु श्यामसुन्दर जी प्रधान और ला० नारायणप्रसाद जी मन्त्री हैं॥

[६] **दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालिज लाहौर**—यह कालिज सं० १९४५ में महर्षि स्वामि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की यादगार में प्राचीन संस्कृत बिद्या के विद्वान पैदा करने के उद्देश से खोला गया था आज

कल बी० ए० तक शिक्षा दी जाती है, ला० हंसराज जी बी० ए० अवैतनिक प्रिन्सपल है, प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन है जिसके प्रधान ला० लालचन्दजी वकील है। शिक्षा पंजाब यूनिवर्सिटी की पाठविधि अनुसार दी जाती है इसके अतिरिक्त एक वैद्यक क्लास, एक इञ्जिन्यरिङ्ग क्लास और दर्जी क्लास भी खोल गई है। मार्च १९०३ ई० के अन्त में समस्त पूंजी ४४०७०८॥≠)२ थी। परन्तु इस कालिज में अब तक प्राचीन संस्कृत विद्या के पठन पाठन का कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया गया जिसके कारण कालिज का मुख्य उद्देश्य अब तक इतने समय तक पूरा न होने से समस्त आर्य्य समाजों ने कालज से निराश होकर प्राचीन संस्कृत विद्या के विद्वान पैदा करने के लिये "पञ्जाब आर्य्य प्रतिनिधि सभा" की ओर से गुरुकुल खुलवाया है जिसका वृतान्त अपने स्थान पर लिखा है॥

[७] वैदिक पाठशाला नरसिंहपुर—यह शाला कई वर्ष से आर्य्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के अधिकार में चल रही है। इस शाला में १०० विद्यार्थी पढ़ते है अनाथों को भोजन बस्त्र सभा की ओर से मिलता है १३०) वार्षिक सरकार से सहायता मिलती है पं० हरदत्त शर्म्मा अध्यापक है। व्यय २५) मासिक है। शाला का निज का मकान २०००) की लागत का मौजूद है॥

[७] संस्कृत हाईस्कूल जबिनेर [जयपुर]—यह स्कूल अलाहाबाद यूनीवर्सिटी का स्वीकृत है। १ नवेम्बर १८८१ ई० से श्रीमान् ठाकुर कर्णसिंहजी ने स्थापित किया है सम्प्रति ८५ विद्यार्थी पढ़ते है, फ़ीस नहीं ली जाती इसके साथ एक "बोर्डिङ्ग हौस" भी है, बोर्डिंग का खर्च प्रत्येक विद्यार्थी से ४) मासिक लिया जाता है। स्कूल का खर्च १००) मासिक है और पूंजी २००००) है। इसमें एक पुस्तकालय भी है जिसमें ५००) के पुस्तक है। मकान की लागत ६५५३) है। मैनेजर उक्त ठाकुर साहिब है, अब ठाकुर साहब ने प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन कर दिया है दश अध्यापक और तीन सेवक है॥

[९] वैदिक पाठशाला रांची—अनुमान ४ वर्ष से यह पाठशाला आर्य्यसमाज रांची की ओर से स्थापित है। संस्कृत और अंग्रेजी आदि की शिक्षा दी जाती है। बाबू बालकृष्ण सहायजी प्रधान आर्य्यसमाज प्रबन्धकर्त्ता हैं ४ अध्यापक हैं। व्यय ४०) मासिक विद्यार्थी ५० है॥

[१०] वैदिक आश्रम आगारा—इस आश्रम में विविध कालेजों के विद्यार्थी रहते है। सम्प्रति संख्या १३ है, जिन को प्रतिदिन नियत समय पर

सन्ध्या अग्निहोत्र करना और समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में सम्मिलित होना मुख्य है ॥

[११] मिठाभाई मुम्बई संस्कृत पाठशाला—यह शाला आर्य्य समाज मुम्बई के प्रबन्ध में है। पं० नरहरि शास्त्री अध्यापक है। ८१ विद्यार्थी पढ़ते है। पूंजी १००० है ॥

नोट—इस से अतिरिक्त निम्न लिखित स्थानों में पाठशालादिक हैं परन्तु उनके वृत्तान्त बहुत ही सामान्य होने से विस्तार पूर्वक नहीं लिखे गये। दनापुर, शाहजहांपुर, कोटाराज्य, धर्मशाला, हरदोई, कनखल, सेवहारा, देवरिया, सहसवान ॥

निम्नस्थ पाठशालादिक से कोई वृत्तान्त प्राप्त नहीं हुये। अजमेर, मुज़फ्फरनगर, मेरठशहर, हैद्राबाद दक्षिण, अलीगढ़, कासगंज, बदायं, शाहपुरा राज्य ॥

भारतवर्षस्थार्यसामाजिकपुत्रीपाठशालानां वृत्तान्तः ॥

[१] कन्या महाविद्यालय जलन्धर शहर—

यह महाविद्यालय १८९६ से स्थापित है। ३१ मार्च १९०३ ई० को ११५ कन्यायें उपस्थित थीं। कन्या अनाथालय की कन्यायें भी इसी महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करती हैं, कन्याओं को ६ छात्रवृत्ति (वज़ीफ़ा) भी दिये जाते हैं। महाविद्यालय में सब १५ कार्म्मचारी हैं जिनमें से ४ अध्यापक, ६ अध्यापिका, और ५ सेवक हैं। सारी कन्याओं को संस्कृत और नागरी में शिक्षा दी जाती है सामान्य पाठविधि से अतिरिक्त वेद पाठ, भजन, सन्ध्या, हवन, धर्मशिक्षा, सीना, जाली आदि का काम भी सिखाया जाता है, शारीरिक स्वस्थता का भी ध्यान रक्खा जाता है। बाहर से आई हुई कन्याओं के लिये जो आश्रम १८९५ में खोला गया था उक्त तारीख को उसमें ३८ कन्यायें थीं। आश्रम के खानपान का व्यय पुस्तक और वस्त्रादि के अतिरिक्त ६) मासिक है। महाविद्यालय की पूंजी इस वर्ष अनुमान २४ सहस्र है प्रबन्ध एक सभाधीन है जिसकी रजिस्ट्री हो चुकी है महाशय रामकृष्णजी वकील प्रबन्धकर्त्ता और लाला बद्रीदासजी एम० ए० मन्त्री प्रबन्धकर्तृ सभा हैं। विद्यालय में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक पढ़ने के लिये एक पुस्तकालय भी है ॥

[२] भगवती पुत्रीपाठशाला हरियाना [होशियारपुर]—यह शाला माई भगवती जी के स्मरणार्थ उनकी ही जन्म भूमि में कई वर्षों से स्थापित है प्रबन्ध एक सभा के प्राधीन हैं। मैनेजर ला० रामलाल मेहता हैं, कन्या ६० हैं। शाला का स्थान निज का है, १०००) नक़द है ॥

आर्य्य समाचार पत्राणां

स्थान	संख्या	समाचार पत्रादि नाम	*भाषा	प्रकाशित समय ÷	वार्षिक मूल्य
लाहौर	१	आर्य्य पत्रिका	अं	सा०	५)
,,	२	मासिक सर्क्युलर आ० प्र० नि० सभा	उ	मा०	१)
,,	३	भारत भगिनी	ना	मा०	१॥)
,,	४	आर्य्य जीवन	ना	मा०	१।)
हरद्वार	५	सत्यधर्म प्रकाशक	उ	सा०	४)
,,	६	आर्य्य मुसाफ़िर मेगज़ीन	उ	मा०	३)
,,	७	सत्यवादी	ना	सा०	२॥)
जलन्धर	८	पांचाल पण्डिता +	ना	मा०	१॥)
,,	९	सहायक	उ	सा०	२॥)
अमृतसर	१०	हितकारी	उ	सा०	२)
मेरठ शहर	११	वेद प्रकाश	ना	मा०	१)
,,	१२	आर्य्य समाचार	उ	मा०	२)
रांची	१३	आर्य्यावर्त्त	ना	सा०	३॥)
बदायूं	१४	आर्य्य सिद्धान्त	ना	मा०	१।)
नरसिंहपुर	१५	आर्य्य सेवक	ना	मा०	॥)
अजमेर	१६	अनाथ रक्षक	ना	मा०	१)
,,	१७	आर्य्य	ना	मा०	॥।)
मुरादाबाद	१८	आर्य्य मित्र	ना	सा०	२)
सिकन्द्राबाद	१९	गुरुकुल समाचार	उ	मा०	॥।)
बरेली	२०	आर्य्य पत्र	उ	सा०	१।)
फ़र्रुखाबाद	२१	भारतसुदशा प्रवर्तक	उ ना	मा०	१।)
शाहजहांपुर	२२	आर्य्य दर्पण	ना	मा०	२॥)
अलीगढ़	२३	वनिता हितैषी	ना	मा०	४)
जबलपुर	२४	आर्य्य वनिता	ना	मा०	१)
मुम्बई	२५	आर्य्य	गु	मा०	१॥)
,,	२६	ऋषि विद्या	गु	मा०	१।)

* "अं" से अंग्रेज़ी, "ना" से नागरी, "उ" से उर्दू, "गु" से गुजराती जानो।

÷ "सा०" से साप्ताहिक, "मा०" मासिक जानो। + स्त्रियों के लिये यह एक उत्तम पत्र है॥

पुस्तक विक्रेतृणां च नामावलि।

स्थान	संख्या	आर्य्य पुस्तक विक्रेता
लाहौर	१	मैनेजर आर्य्यप्रिंटिंग पब्लिशिंग जेनेरल टेडिंग कम्पनी
,,	२	पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य समाज बच्छोवली
,,	३	कृष्णचन्द्र कम्पनी
,,	४	शालिग्राम अरोड़वंश प्रेस
हरद्वार	५	मैनेजर सत्यधर्म प्रचारक प्रेस
मेरठ शहर	६	पं० तुलसीराम स्वामि प्रेस
,,	७	ला० केदारनाथ (बाज़ार बज्ज़ाज़ा)
फ़रुखाबाद	८	मैनेजर गुर्जर प्रेस
दानापुर	९	बा० रामशरण लाल कमलपुर वैश्य
इटावा	१०	पं० बाबूराम शर्म्मा
बरेली	११	पं० माता प्रसाद
मुरादाबाद	१२	पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश
,,	१३	,, आर्य्यसमाज
आगरा शहर	१४	,, ,,
अजमेर	१५	,, ,,
,,	१६	मैनेजर वैदिक यंत्रालय
सक्खर	१७	डा० खानचन्द आर्य्य
बुलन्द शहर	१८	ला० बिहारीलाल

आर्य्य समाजों के मन्दिरों तथा पुस्तकालयों की सूचि
और वैदिक संस्कारों तथा प्रायश्चित्तों की संख्या

पंजाब तथा सीमा प्रान्त

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय		वैदिक संस्कार				प्रायश्चित्त		
			संख्या	मूल्य	विवाह	बाल विधवा विवाह		मृतक	यवन	ईसाई	अन्य
१	लाहौर(वच्छोवाली)	१००००	१००००	५००००							
२	डेराइस्माईलखां	१००००		५००							
३	पेशावर	१००००		४००							
४	मुलतान शहर	७०००	१००	१००	२०	१	१००	३०	५	१	ओढ़ ३०००
५	अमृतसर	६०००	४००		१५	२०	५०	२००	४०	२०	
६	स्यालकोट	५०००		५०	८	१	४	१५	२	१	मे.२०००
७	शिमला (नगद)	५०००					२	१			
८	क्विटा मन्दिर / भूमि	३००० / ८०००		१००			२	५			
९	जालन्धरशहर	४३००									
१०	मुकेरियां	४०००		८०							
११	कोहाट	४०००		२००							
१२	वज़ीराबाद	४०००		१००							
१३	रोपड़ *	३०००	२००		३		७	३४	३	१	रहतये २५
१४	कराची*	३०००		३००			३	८	१		
१५	दिल्ली शहर*	२६००									
१६	गुजरात*	२५००									
१७	जामपुर*	२५००	३२०	१००	२	२	२	१८	१	१	
१८	झंग*	२३००		८०							
१९	लुधियाना(नगद	२२०६									
२०	मरी*	२२००		१००				२			
२१	जेहलुम*	२०००	२००								
२२	शाहाबाद*	२०००	४०	५०		१	३	३०	२	१	
२३	धर्मसाला*	२०००					२	७			
२४	पूंडरी* (नगद)	१८६६		१२५		१	१	३			

संख्या	आर्य्य समाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय संख्या	पुस्तकालय मूल्य	वैदिक संस्कार विवाह	वैदिक संस्कार बालवि.वि०	वैदिक संस्कार मृतक	वैदिक संस्कार अन्य	प्रायश्चित यवन	प्रायश्चित ईसाई	प्रायश्चित अन्य
२५	कर्णाल*	मन्दिर १२०० नगद ५००			५	१	५	३१			
२६	डेरागाज़ीखाँ*	१५००	७४६	१००							
२७	लायलपुर*	१५००	१००	६५			२०	१			१६ रहतये
२८	मैलसी*	१५००		१२५		१	१	१६			६६६ ओड
२९	करोड़	१५००	२००	१५०	३		१	२५			
३०	जलन्धर छावनी	१३००					२				
३१	भिवानी	११६०	५०	७०	१		३	१०			
३२	मरदान	१०००		५०				६			
३३	चकवाल	१०००			२			२			
३४	मनटगुमरी	१०००	३००	४००			३	४	१		
३५	बन्नू*	१०००	२५०	१०५				४			
३६	शरक़पुर*	१०००			५			१			
३७	पानीपत (नगद)	८००		२००							
३८	कमालिया	८००	३११	१०८	३		१३				
३९	सक्खर (नगद)	८००		६०	८		२	४०	१५		
४०	सिरसा*	८००	८८	५०	२		२	२६			
४१	जलालाबाद	८००	१००	५०	१		४	४२			
४२	भैरा*	८००	१००	७५							
४३	अलीपुर*	७००	५०	६०	१			८०			
४४	मालिरकोढला	६५०									
४५	बटाला (नगद)	६००					४		१		
४६	दीना नगर	६००			४	१	४	२४			
४७	मुल्तान छावनी	न० ५००						६			
४८	कादियान	५००			३		३		१		
४९	लैय्या*	५००							२		
५०	फालिया (नगद)	५००									
५१	रामनगर *	५००	२३१	१०२	९	१	७	१६			

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय		वैदिक संस्कार				प्रायश्चित्त		
			संख्या	मूल्य	विवाह	बालवि.वि०	मृतक	अन्य	यवन	ईसाई	अन्त
५२	भागोवाला(नगद)	४००	५०	१००	३		१	२०	२		
५३	सैदवाला *	४००									
५४	खोशाब	४००			१						
५५	कैथलन (गद)	४००						५			
५६	कपूर्थलानगद	४००			१		३	१०			
५७	गुर्दासपुर (भूमि)	३६०			१	१	२	६			
५८	कालका (नगद)	३०५									
५९	सफ़ीदों (भूमि)	३०५		५०			१	१२			
६०	अम्बालाछाव०न०	३००	६२		१		२		१		
६१	बस्ती शेख़ दरवेश	३००					३	७			
६२	बरनाला (नगद)	२६०						१			
६३	मस्जिद मोठ*	२५०		२००			१	२			
६४	सीबी	२००									
६५	बयानपुर *	१०५			१		३०	४०	१		
६६	धर्मकोट नगद	१००		५०	४		१	८			
६७	नौशहरा *	है				१	४	३	२		
६८	बसियां	हैं	७५	६५	१		६	४			
६९	पटियाला	है									
७०	नौशहरपुनवां*	है			२		१				
७१	हिसार*	है									
७२	रावलपिंडीशहर	बनरहाहै	११६	१८०		१	१	५			
७३	मियांवाली	"					१	३			
७४	भटिण्डा	"					३	२			
७५	फ़ीरोजपुर छाव०	"		१००			१	३			
७६	शकरगढ	"					४	१२			
७७	भौ	"			१		१	१०			
७८	पिंडदादन खां	"			१	३	३	७	१	१	

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय संख्या	पुस्तकालय मूल्य	वैदिक संस्कार विवाह	बालवि.वि०	मृतक	अन्य	प्रायश्चित्त यवन	ईसाई	अन्य
७९	शोरकोट	भूमि									
८०	श्री गोविन्दपुर	,,									
८१	डस्का	,,			१	१	१	६			
८२	हांसी	,,					१	५			
८३	मुरिण्डा	,,					५	१			
८४	घोघड़ीपुर	२०)			५		१०	२			
८५	श्रीनगर			१५०			४	३१			
८६	गोयन्दकी		३३०	६०	८	१	६	६		१	
८७	छीना		१५०	५०	३		१	५०			

संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय संख्या	पुस्तकालय मूल्य	वैदिक संस्कार विवाह	बालवि.वि०	मृतक	अन्य	प्रायश्चित्त यवन	ईसाई	अन्य
१	मेरठशहर	१३०००	८००	४००							
२	कानपुर	७०००	२६८	२४०							
३	शाहजहांपुर	६०००	२०२	५७	७	१	१०	११०		१	
४	लखनौ गणेशगञ्ज	५०००	२६१	१३७	३		६	५०			
५	मथुरा	५०००	४०३	२४५			४	२०			
६	चंदौसी	५०००	२५०	१२५							
७	बिजनौर	५०००	३००	२००	२०		५०	७५	३		
८	डेरादून	५०००									
९	बरेली	५०००	२००	३००							
१०	सहारनपुर	४५००				१		४			
११	पबायां	४०००	१८०	८८							
१२	लखीमपुर	४०००	१००	५०							
१३	काशी भूमि नगद	८०० ३०००		५०							
१४	आगरा शहर	३३००	२००	२००			२	६	३	८	
१५	कन्नौज	३०००	४००	३००			२	३५			
१६	करहरा	३०००			३		३	१७		१	३

संख्या	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	आर्य्यसमाज	पुस्तकालय		वैदिक संस्कार				प्रायश्चित्त		
			संख्या	मूल्य	विवाह	बालवि०वि०	मृतक	अन्य	पतन	ईसाई	अन्य
१७	झांसी	२५००		२५०		२					
१८	जस्टर	२०००									
१९	कासगञ्ज मन्दिर नगद	८०० १३००									
२०	बुलन्दशहर	२०००		३८५				१३			
२१	फ़ैज़ाबाद	२०००	२१९	१००	२			४			
२२	धूम	२०००			२०		६	३०			
२३	बदायूं	१५४३	२१२	२३६							
२४	तीतरों भूमि नगद	१२०० ३१३	२४१	८३			१५	६			
२५	अहार	१५००		५५			१८	२०			
२६	डिबाई	१५००	८०	१५०	२००		५२	६०			
२७	कालपी	१२००					२	२५			
२८	गंगोह	११६०	१३५	५६							
२९	हरदोई	११००		२०८	२०		२५	५६०		२	
३०	बांदा	११००	७०	५०	३		२	६			
३१	शाहाबाद	१०००		७०	१		३	१०			
३२	चकरौता	१०००	१५०	१००			४	१०			
३३	दातागञ्ज	१०००					३				
३४	चूहड़पुर	१०००		६०	२		४	२०			
३५	लुहारी	१०००		२१	१			१०			५ रहतये
३६	अतरोली	६५०	१०१	१००	४		५	१६			
३७	जलेसर (नगद)	७००								१	
३८	सांखनी	७००	१९	५६	३		१	८			
३९	परीचतगढ़	६००	१४४	७०	२०		१०	१५			
४०	इटावा (नगद)	६००									
४१	कायमगञ्ज (नगद)	५२५									
४२	बिलसड़कलां	५००									
४३	सुरजन नगर	५००	११८	५२	१०		२०	२५			

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय		वैदिक संस्कार				प्रायश्चित्त		
			संख्या	मूल्य	विवाह	बाल वि० वि०	मृतक	अन्य	यवन	ईसाई	अन्य
४४	अकबरपुर	५००					१	१			
४५	रायबरेली	५००		१००							
४६	उन्नाव	५००									
४७	गढ़अब्दुल्लाखांन०	५००									
४८	लखनौ शहर	५००			५	१	१८	१६		२	
४९	नगला हरेरू	४००	१००	१००	१			६			
५०	सनौता (नगदवभूमि)	४००									
५१	चांदपुर	३००		१००	२	१	१	६			
५२	दहगवान	३००					१	२			
५३	मछली शहर	२५०									
५४	भौं	२५०			३		२	३०			
५५	गढया छंकोरी	७५	६२	१००	२			३४			
५६	मुढी	५०	६३	५०	२		३	२०			
५७	सिकन्द्राबाद	है			११०		३	८३			
५८	बिजौली	है			२	१	१	२			
५९	बघौरा	है			५		१	२५			
६०	बस्ती	है			२		१	१००			
६१	कर्णवास	है				१	४१	२००	१		
६२	बड़ौत	बन रहा है		१५०	६	१	८	१५	२	१	
६३	रुड़की	,,				१	८				
६४	जानसठ	,,						५			
६५	तिलहर	,,			२		३	१			
६६	सरकड़ा	भूमि						४			
६७	बहरायच	,,	१००	७०							
६८	किशनी	,,			२		३	५			
६९	पीलीभीत	,,		२००			३	५			
७०	उभियानी	,,			१		५	३६			

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय		वैदिक संस्कार				प्रायश्चित्त		
			संख्या	मूल्य	विवाह	जाति वि०वि०	मृतक	अन्य	यवन	इसाई	अन्य
७१	हलद्वानी	भूमि	६५	६१			२	५			
७२	नवाबगञ्ज	"	१०३	५०		१	१	२८			
७३	एतमादपुर	"									
७४	फलावदा	"	६७	६४	५२			२००	१		
७५	भिरावटी		६२८	२५०				३०			
७६	मवानाकलां			२२०				२			
७७	नैनीताल		१२०	२०५			१	३			
७८	बुढाना		४००	१५०			१	४			
७९	बरोठा		६०	१००	१५		५	३०			
८०	सेबहारा		५८	७५	१		१	३२		१	
८१	कांधला		१५०	७५				६	१		
८२	नरदौली			५०	३	१	४	८			
८३	कौडयागञ्ज		१२५	५०	६		२	१८			
८४	विधनूं				३		२	५५			
८५	कुड़ाना				८		२२			५०	
८६	मुहकमपूर				११		१६	११	१		३
८७	लोहाघाट				४		१०	१००			५
८८	रोही				५		५	२०			
८९	गोहावर				१०		४	१४			
९०	मुजफ्फरनगर					१	३	८	३		
९१	पचरावां				१०		२०	४३			
९२	खखाजलालपुर				१३		६	३०	१		
९३	सिकन्द्राराऊ				२		०		१		
९४	रसीदाबाद				७		१०	२०			

राजस्थान

१	अजमेर ❊	२५०००	९००						४	२	

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय संख्या	पुस्तकालय मूल्य	वैदिक संस्कार विवाह	वैदिक संस्कार बाल वि० वि०	वैदिक संस्कार मृतक	वैदिक संस्कार अन्य	प्रायश्चित्त यवन	प्रायश्चित्त ईसाई	प्रायश्चित्त अन्य
२	उदयपुर *	५०००									
३	जयपुर *	५०००	१८०	७०	५		३	९०			
४	जोबनेर *	५०००									
५	भरतपुर *	४०००	८००	४००	१		१	२			
६	शाहपुरा *	३०००	८००	५००							
७	कोटा *	२०००	५००	२२५	१	२	६	६०			
८	देवास *	१६००					३	१०			
९	सोजत *	१२००			१	१	२	१०			१
१०	इन्दौरछावनी *	६००		१००							
	बंगाल तथा बिहार										
१	दानपुर *	४०००		५००							
२	मुंगेर *	१०००	१०००	३००				३			
३	पटना शहर न०	२१८						१०			
४	मनेर	है									
	मध्य प्रदेश तथा विदर्भ										
१	नरसिंहपुर *	१२००									
२	सुहागपुर * न०	१८०									
३	बुरहानपुर (नगद)	१५०									
४	होशंगाबाद	१२०									
५	जबलपुर	बनरहा है			८		७	२०			
६	चांदूर							२			
७	खंडवा		१५०	६०	१		३	३			
८	हविरखेडरूपराव				१		१	१२			
	मुम्बई व काठयाबाड										
१	मुम्बई *	५००००	५००	१०००	१०		४०	२०१			

संख्या	आर्य्यसमाज	लागत आर्य मन्दिर रुपया	पुस्तकालय संख्या	पुस्तकालय मूल्य	वैदिक संस्कार विवाह	वैदिक संस्कार बा.वि.वि.	वैदिक संस्कार मृतक	वैदिक संस्कार अन्य	प्रायश्चित यवन	प्रायश्चित ईसाई	प्रायश्चित अन्य
२	अहमदाबाद		१५०	२००							
३	भड़ोच		१२३	१०५				१			
४	नागधारा		१४५	५१	१		१	१०			
	दक्षिण देशी रियासत										
१	हैद्राबाद		६६	८३	२		२५	३१	६		
२	बङ्गलोर		३०	५०	१		५	८	१		
	ब्रह्म देश										
१	मेमयो नगर	२००									

नोट–(१) इनसे अतिरिक्त कहीं २ और भी आर्य्य मन्दिर होंगे परन्तु उनकी सूचना न आने से नहीं लिखे गये।

(२) जिन नामों पर * चिन्ह लगाया गया है वहां के मन्दिरों में आर्य महाशयों के ठहरने का प्रबन्ध है।

(३) ५०) से कम लागत का पुस्तकालय नहीं लिखा गया है

(४) जितने संस्कार और प्रायश्चित्त इस सूचि में किसी समाज के लिखे गये हैं वह उस समाज की स्थापन तिथि से समझने चाहिये। पंजाब सं० ७, ८, १४, १९, ३४, ३५, ४८, ७२, संयुक्त प्रदेश सं० १० ३०, ५० की संख्या केवल एक वर्ष की है।

(५) किसी २ बड़े समाज में संस्कारादि की कोई "याददाश्त" नही रक्खी गई अतः वह हमें कोई सूचना न दे सके उनके स्थान रिक्त रहने दिया है॥

विद्या तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यालय

१ नागरी प्रचारिणी सभा काशी—यह सभा १६ जुलाई सन् १८९३ ई० से नागरी भाषा प्रचारार्थ स्थापित है जिस उत्साह और प्रयत्न से अब तक कार्य होता रहा है उसका परिणाम भले प्रकार सब पर प्रकट है कि एप्रिल सन् १९०१ से भारत गवर्नमेंट की आज्ञा से संयुक्त प्रदेश के सब राजकार्य्यालयों और न्यायालयों में उर्दू से अतिरिक्त नागरी में भी पत्रव्यवहार की स्वतन्त्रता हो गई है गत वर्ष में सभा के उद्योग से महाराजा ग्वालियर ने अपने राज्यकार्य्यालयों में १ जोलाई १९०३ से नागरी में कर दिया इस के अतिरिक्त दो तीन जिलों में वेतनिक "अर्जीनवीस" लोगों की अरजियां मुफ़्त लिखने के लिये रक्खे गये हैं। गत वर्ष में ३९१ और वर्त्तमान में ४५८ सभासद हैं जिन में कई राजे महाराजे और बहुत से पदाधिकारी विद्वान और धनिकजन सम्मिलित हैं। म० म० पण्डित सुधाकर द्विवेदी सभापति और बा० श्यामसुन्दरदास मन्त्री हैं। गतवर्ष सभा को चिरस्थायिनी करने के लिये एक लक्ष रुपये का स्थायी कोष और बीस सहस्र रुपये का एक विशाल भवन बनवाने की तजवीज़ की गई थी यथाच इस वर्ष एक उत्तम स्थान ३५००) में मोल लेकर चिनती लगाई गई है जिसपर वर्ष के अन्त तक ५५००) के लगभग व्यय हो चुका है। महाराज अयोध्यानरेश ने इस भवन की नींव स्वहस्त से रक्खी थी और २०००) सहायता देना स्वीकार किया। सभा का समग्र आय ७४४०॥≈) और व्यय १३५०५॥≋)॥ होकर २५७१≋) वर्षान्त में शेष रहा। सभा की ओर से प्रति ३ मास दो पत्र "नागरी प्रचारिणी पत्रिका" और "नागरी ग्रन्थमाला" प्रकाशित होते हैं जिनका मूल्य १) और २) यथाक्रम है, ३) वार्षिक देने वालों को उभय पत्र बिना मूल्य और शेष मुद्रित ग्रन्थ सारे सभासदों को अर्धमूल्य पर दिये जाते हैं॥ उक्त सभा के प्रबन्ध से अब तक बहुत सी प्राचीन और नवीन रचित पुस्तक छप चुके हैं, "हिन्दी विज्ञान कोश" और "पूर्ण व्याकरण" बन रहे हैं। नागरी गद्यपद्य युक्त पुस्तक विक्रेताओं की एक सूची भी बनाई गई है। इसवर्ष में सभा ने अपने उत्तम २ पुस्तकों (तुलसीकृत रामायण पृथिवीराज रासो, और मिस्टर दत्त के इतिहास) के विक्रियार्थ जरमनी और इङ्गलैण्ड में राजपट नियत किये इस वर्ष में सभा ने संस्कृत और नागरी के ३४२ पुस्तक खोजे जिन में से मारवाड़ी वा अन्य रद्दी पुस्तक निकाल कर केवल २१० रक्खे गये हैं, इन में से १२५ पुस्तक ७२ ग्रन्थकारों की जो १२वीं, १३वीं, १४वीं, १६वीं, १७वीं, १८वीं और १९ वीं, शताब्दीं में हुए बनाई हुई है, १७ के बनाने वालों

का पता नहीं लगा इस से अतिरिक्त सभा को बहुत से ग्रन्थों का पता लगा है और पद्मावती के रचयिता मलक मुहम्मद जायसी का एक नया ग्रन्थ "आवरावट" नाम मिला है और श्रीमद्भागवत के १२८० ई० के किये हुवे हिन्दी अनुवाद का खोज लगा है। सर्कार की ओर से इस कार्य्य की सहायता में ४००) वार्षिक मिलता था परन्तु गतवर्ष में सभा की कार्यवाही से प्रसन्न होकर अब गवर्नमेंट ने ५००) वार्षिक कर दिया है और सभा से यह सम्मति भी मांगी गई है कि स्कूलों की पुस्तकों की हिन्दी कैसी होनी चाहिये॥

सभा के पुस्तकालय में वर्षान्त पर २६०७ पुस्तक थे और वर्ष भर ३३ समाचार पत्र आते रहे। प्रशंसित सभा ने अपनी ओर से सर्कारी मिडिल और प्राइमरी स्कूलों में नागरीभाषा की परीक्षा पर कई विद्यार्थियों को ३०) का पारितोषक और १४ विद्यार्थिहों को प्रशंसापत्र दिये गये। नागरी में विद्या तथा शिक्षा सम्बन्धी सुन्दर लेख लिखने वालों और स्पष्ट तथा स्वच्छ लेखक विद्यार्थियोंको सर्कार द्वारा एक पदक (तमग़ा) दिया गया इससे अतिरिक्त इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के ऐन्टेन्स क्लास के एक विद्यार्थी ने अपने नगर का इतिहास और भूगोल का वृत्तान्त लिखकर सभा के पास भेजा था सभा ने उसको पसन्द किया और एक स्वर्ण मुद्रा इनाम दी गई। वर्तमान वर्ष में सारे भारतवर्ष में ६७० पुस्तक नागरी में गद्यपद्य युक्त अनेक विषयों में प्रकाशित हुए जिनमें से ४०६ संयुक्त प्रदेश, ४१ मुम्बई, ५४ पंजाब, २१ मध्यप्रदेश, १२६ बङ्गाल और १२ राजस्थान में छपे इनसे पृथक ऐसे पुस्तक भी छपे कि जिनकी भाषा नागरी के अतिरिक्त एक और भी है और २० पुस्तक ऐसी तैय्यार हुये है जो प्रथम नागरी अक्षरोंमें नहीं छपे थे परन्तु जो पुस्तक इस वर्ष छपे है उनमें दो चार के अतिरिक्त शेष सब साधारण और अश्लील है यदि गवर्नमेंट और हिन्दी पत्रों के सम्पादक महाशय ध्यान देवें तो बहुत कुछ सुधार हो सकता है।

२-गान्धर्व महाविद्यालय लाहौर-यह महाविद्यालय दक्षिणदेश के सुप्रसिद्ध और विख्यात गायनाचार्य्य पं० विष्णुदिगम्बर जीने प्राचीन रीति पर गायन विद्या की शिक्षा देने के लिये ५ मई १९०१ ई० से लाहौर में स्थापित किया है। इस समय ३ श्रेणी 'सा', 'रे' और 'गा' है और यथावसर आगे भी खोली जावेंगी। पूर्ण शिक्षा का समय ३॥ वर्ष है, शिक्षा ५ बजे सायं से ६ बजे रात्रि तक दी जाती है जिसमें गाना और तम्बूरा, सितार, मृदङ्ग और हार्मोनियम बजाना सिखाया जाता है, सम्प्रति शिक्षा देने को पं० विष्णुदिगम्बर जी प्रिन्सिपल और पांच अन्य प्रोफेसर नियत है जो बड़े प्रेम और उत्साह पूर्वक

कार्य करते है, इसमें नीच जाति के मनुष्यों को जो केवल अन्नोदक अर्थात् रोजी के लिये सीखते है। गाना आदि सिखलाने की कड़ी मनाई है केवल प्रतिष्ठिती और उच्च जाति तथा श्रेष्ठ मनुष्य ही सीख सकते है। प्रविष्ट होने कोफी स १) और मासिक फीस २) है। महाविद्यालय में समस्त सामान बजा आदि उपसस्थित है किसी को निज गृह से लाने की आवश्यकता नहीं एक वर्ष में प्रवेशिका, १॥ वर्ष में मध्य, २॥ वर्ष में सांगीत विशारद, और ३॥ वर्ष में संगीत तीर्थ की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्रशंसा पत्र दिये जाते हैं, अन्तिम दो परीक्षाओं में उपाधि (डिग्री) भी दी जावेगी और जो मनुष्य सर्व परक्षोत्तीर्ण होने पर दो वर्ष में गायन विद्या में निपुण होगा उसे गायनाचार्य की उपाधि दी जावेगी गतवर्ष में महाराजा काश्मीर और अन्य प्रतिष्ठित महाशयों ने धनादि से बहुत सहायता की है गतवर्ष में महाविद्यालय की आमदनी ५००३॥≈)॥ और ख़र्च ४२३०।~) होकर ३००६≈)॥॥ शेष रहे इस विद्यालय की एक ब्राञ्च ५ एप्रिल १००३ से जम्मू में, एक ब्राञ्च ग्रीष्म ऋतु के लिये श्रीनगर में महाराजा साहब काशमीर की संरक्षता में खोली गई है। १५ जून १९०२ ई० से गवर्नमेंट कालिज और मिशन कालिज लाहौर में एक क्लास खोली गई है और एक कार्यालय बाजों के बनाने और मरम्मत रकने के लिये भी खोला गया है जिसके लिये काशमीर नरेशने १००० और एक महाशय ने गुप्तदान १०००) दिया है इसके अतिरिक्त एक "उपदेशक क्लास" उपदेशक पैदा करने और एक "वैदिकक्लास" प्रातःकाल वेदगायन सिखाने के लिये जारी की गई है और एक क्लास तुलसीकृत रामायण सीखने और गाने के लिये और एक मासिक पत्र "म्युज़िकल मैगज़ीन" जारी करने क बिचार है॥

३ बालविधवविवाह प्रचारिणीसभा भारतवर्षशाहजहांपुर-

यह सभा १९०१ से श्रीमान् महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ बड़ौदा नरेश की संयरक्षकता में स्थापित है जिसके उद्देश्य यह हैं (१) द्विज वर्ण की अक्षत योनि विधवा कन्याओं के पुनर्विवाह करने में सर्व प्रकार से यत्न और सहाय करना, (२) बलकों और वृद्धों के विवाह और निवाह पर शुल्कादि (लेनदेन) का रोकना (३) स्त्री शिक्षा और बालविधवा विवाह का उपदेश और लेखद्वारा प्रचार करना और (४) कंगाल विधवाओं के पालन का प्रबन्ध और जो पुनर्विवाह करना चाहें उनके लिये धनादि से उचित सहायता देना॥ श्रीक्षत्रिय शङ्करलाल जी रईस बिजनौर व संपादक अबलाहितकारी प्रधान और मु० बखतावर सिंहजी अग्रवाल रईस शाहजहांपुर व सम्पादक आर्य्यदर्पण मन्त्री हैं। पं० कृष्णलाल

शर्म्मा, पं० ऊधोराम (बिजनौर) सभा के अवैतनिक उपदेशक हैं। सितम्बर १९०२ तक सभा के प्रबन्ध से और इतर ५० अक्षतयोनि विधवा कन्याओं के विवाह मुज़फ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर, स्यालकोट, झांसी, आगरा, बिजनौर जलन्धर, अमृतसर, फिल्लौर, पूंडरी, पेशावर, फ़ैजाबाद, ढाका, शाहजहांपुर, लखनौ, रावलपिण्डी, लाहौर, ऐबटाबाद, नौशहरा, गुरदासपुर, अहमदाबाद, कलकत्ता आदि स्थानों में गौड़, सारस्वत, सनाढ्य, ब्राह्मण, क्षत्री, खत्री, अग्रवाल दससे व बीसे वैश्य, श्रीवास्तव, सकसेने, कायस्थ आदि विविध जातियों में हो चुके है और बराबर होते जाते हैं। सभा ने "विधवा विवाह प्रचार" नामक ट्रैक्ट उर्दू व नागरी में प्रकाशित किया है जिनमें वर्त्तमान विधवावोंकी संख्या और दुर्दशा को प्रकट करके वेदशास्त्र के प्रमाण द्वारा पुनर्विवाह सिद्ध किया है और अन्त में एक्ट १५ सं० १८५६ ई० "बेवगान हिन्द" दे दिया है॥

जो महाशय अपनी बालविधवा कन्या का पुनर्विवाह वा जो महाशय अपना विवाह ऐसी कन्या से करना चाहें वह उक्त मन्त्री से छपा हुआ पत्र (फार्म) मंगाकर भरकर वापिस भेज दें ताकि उक्त महाशय जोड़ा मिलाकर उभय पक्ष को सूचना और सहायता देवें, प्रार्थियों का नाम उनकी इच्छा विना किसी को नहीं बताया जावेगा॥

४-वैदिक धर्मप्रचारिणी सभा मुम्बई-मुम्बई के एक महाशय के मुख से (जो कर्णाल किसी काम आया था। हम यह सुनकरबड़े प्रसन्न हुवे कि अब यह सभा और आर्य्य समाज मुम्बई दोनों एक हो गये हैं जिससे बहुत कुछ उन्नति की आशा है। आर्य्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई जो अब नाम मात्र है उसके भी पुनर्जीवित करने की तय्यारी हो रही है॥

इति

ख

सर्कारी अदालतों की छुट्टियों की सूचि सं० १९०४ ई०

नाम छुट्टी	पञ्जाब		संयुक्त प्रदेश	
न्यू इअर्स डे	१ जनवरी	शु	१ जनवरी	शु
बसन्त ५	२२ ,,	शु	२२ ,,	शु
शिवरात्री	१५ फ़रवरी	चं	१५ फ़रवरी	चं
बड़ी ईद	२७ ,,	श	२९ ,,	चं
होली	१,२ मार्च	मं–बु	२,३,४ मार्च	बु,बृ,शु
सूर्य्य ग्रहण	१७ ,,	बृ	१७ ,,	बृ
दुर्गा अष्टमी	२५ ,,	शु	०	०
राम नवमी	०	०	२६ मार्च	श
मुहर्रम	२३-२८ मार्च	बु–चं	२१–३० ,,	चं–बु
गुड फ्राइ डे	१ एप्रिल	शु	१ एप्रिल	शु
ईस्टर	२–४ ,,	श–चं	२–४ ,,	श–चं
वैशाखी	१२ ,,	मं	०	०
चेहलुम	०	०	७ मई	श
बारह वफ़ात	२८ मई	श	२८ ,,	श
एडवर्ड जन्मोत्सव	३० ,,	चं	३० ,,	चं
निर्जला एकादशी	२३ जून	बृ	०	०
व्यास पूजा	२७ जुलाई	बु	०	०
सलोनो	२५ अगस्त	बृ	२५ अगस्त	बृ
जन्माष्टमी	३ सितम्बर	श	२,३सितम्बर	शु–श
अनन्त चौदश	२३ ,,	शु	२३ ,,	शु
दशहरा	१५-१८अक्टूबर	श–मं	१५–१८अक्टूबर	श–मं
शबबरात	२५ ,,	मं	२४ ,,	चं
दीवाली	७,८ नवंबर	चं–मं	७–८ नवंबर	चं–मं
यम दूज	९ ,,	बु	०	०
देवठान	१८ ,,	शु	०	०
कार्तिकी स्नान	०	०	२३ नवेम्बर	बु
आख़री जुमआ	२ दिसम्बर	शु	०	०
छोटी ईद	९,१० ,,	शु–श	९,१० दिसंबर	शु–श
बड़ा दिन (क्रिसमस)	२४,३१ ,,	श–श	२४–३१ ,,	श–श

नन्दलाल का गुलकन्द बनफ़्शा

अत्युत्तम, शीघ्र असर करने वाला, हिमालय पर्वत पर ताज़ा बनफ़्शा से तयार किया गया ॥

दिमाग़ और शरीर की खुश्की के दूर करने में अपूर्व है, चिरकाल की अजीर्णता के दूर करने में लासानी, दिमाग़ और दृष्टि को पुष्ट करता है, मेदे और खून को शुद्ध करता है खून की तेज़ी, प्यास, खफ़क़ान, घबराहट, नज़ला, जुकाम, खांसी, पुराना ज्वर, यरक़ान, गले का जलन, तिल्ली, गुरदे के दर्द इत्यादि को नष्ट करता है, शौच के पश्चात् कमज़ोरी नहीं होती, बालकों के लिये इस से बढ़कर अन्य कोई औषध नहीं है।

सार्टिफ़िकट

श्रीमान् ला० मुन्शीराम जी मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल हरिद्वार:—

"मैंने तजुरबा करके अकसीर पाया"-"दश सेर गुलक़न्द बनफ़्शा वी० पी० द्वारा गुरुकुल के लिये भेजदीजिये" ॥

श्रीमान् "रायबहादुर रघुनन्दनप्रसादजी" वकील वाईस चेयरमैन म्युनिस्पिल बोर्ड व आनरेरी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बनारस—"आप का गुलक़न्द बनफ़्शा मैं बराबर इस्तेमाल करता हूं-वस्तुतः अजीर्णता को दूर करने में आप का गुलक़न्द बनफ़्शा नायाब चीज़ है....अत्यन्त चित्त को प्रसन्न करता और अजीर्णता को नष्ट करता है"-यह महाशय तीन बार बारह पौण्ड चार मास में मंगा चुके हैं ॥

श्रीमान् बाबू कन्हैयालाल जी रईस व गवर्नमेण्ट पेनशनर बदायूं—

"क़ब्ज़ और दिल दिमाग़ की खुश्की के लिये बहुत ही मुफ़ीद साबित हुआ"—यह छः बार मंगा चुके हैं ॥

जनाब बाबू इमामुद्दीन खां साहब एकस्ट्रा एसिस्टेण्ट कनसरवेटर पांगी "बहुतही मुफ़ीद साबित हुआ"-यह तीन बार मंगा चुके हैं।

जनाब हकीम नवाब वज़ीर अली खां साहब देवरिया (गोरखपुर)—

"इस की तारीफ़ तहरीर से बाहर है" दो बार ५ पौण्ड मंगा चुके हैं।

श्रीमान् बाबू भैरों प्रसाद जी सेक्रेटरी अनजुमन तहज़ीब हैद्राबाद दक्षिण—

"स्वादिष्ट और मेदे को पुष्टिकारक" पुराने ज्वर के लिये उपयोगी है इसहाल के लिये बहुत मुफ़ीद है यह तीन बार १७ पौण्ड मंगा चुके हैं इन और अन्य असंख्यात महाशयों ने जो कई बार मंगाया है वह अपने बाल बच्चों और मित्रादिकों के लिये। किसी रोग को दो पौण्ड काफ़ी है इस से अधिक साक्षी और क्या हो सकती है कि प्रतिष्ठित व अन्य महाशय बारम्बार मंगा रहे हैं।

इस्तेमाल करने की तरकीब साथ है ॥

मूल्य टिन १ पौण्ड १), २ पौण्ड १॥=), महसूल डाक इस से अलावा है अर्थात् १ पौण्ड ।=) २ पौण्ड ॥) ३ पौण्ड ॥=), ४ पौण्ड ॥।), ५ पौण्ड ॥।=), ६ पौण्ड १)

नन्दलाल निज़ड़ रियासत चम्बा [पंजाब]